ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

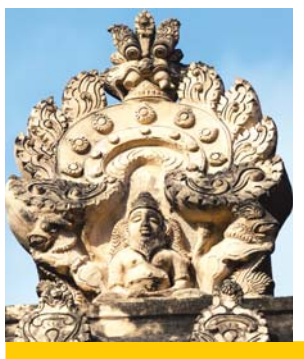

Detailing Made Them Spectacular

The kudu located at the center of each 'level' was generally larger than the others. Overlapping vertically from floor to floor, these kudu created a point of interest on each side of the roof

Beyond EPICA

Indian Scientists help unearth 1.2-Million-Year-Old Ice Core in historic Antarctic Drill

भारतीय महिलाओं ने क्रिकेट वर्ल्ड कप जीता

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने 52 साल के लंबे इंतजार को खत्म करते हुए वनडे वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम कर लिया है। कप्तान हरमनप्रीत कौर की अगुवाई में भारत ने शेफाली वर्मा और दीप्ती शर्मा के ऑलराउंड प्रदर्शन के दम पर फाइनल में साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर इतिहास रच दिया है। साउथ अफ्रीका की ओर से कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट ने शानदार 101 रनों की पारी खेली, लेकिन वह टीम को जीत नहीं दिला सकीं। भारत की तरफ से शेफाली वर्मा ने 78 गेंदों पर 87 रन की शानदार पारी खेली और दो विकेट लिए जबकि दीप्ती शर्मा ने 58 गेंदों पर 58 रन बनाए व 5 विकेट लिए।

हरियाणा के पूर्व मंत्री ने कांग्रेस छोड़ी

चंडीगढ़, 02 नवंबर। हरियाणा के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री संपत सिंह ने आज भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना त्यागपत्र पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को भेजते हुए कहा कि कांग्रेस अब जनता की नहीं, एक व्यक्ति और परिवार की पार्टी बन चुकी है। छह बार के विधायक, दो बार मंत्री और एक बार नेता प्रतिपक्ष रहे संपत सिंह ने अपने इस्तीफे में लिखा है कि साल 2009 में कांग्रेस जॉइन करने के

- **संपत सिंह 6 बार विधायक, 2 बार मंत्री व एक बार नेता प्रतिपक्ष भी रहे हैं।**

बाद से उन्हें लगातार नजरअंदाज किया गया और संगठन में किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि पार्टी में गुटबाजी और परिवारवाद ने जड़ों को खोखला कर दिया है।

संपत सिंह ने लिखा कि कांग्रेस में आज निष्ठा का इनाम दासता है और मतभेद की सजा निष्कासन। 2009 से लगातार हार के बावजूद किसी से जवाबदेही नहीं ली गई। जो नेता पार्टी को डुबो रहे हैं, वही शीर्ष पर बने हुए हैं।

संपत सिंह ने कहा कि 2024 के विधानसभा चुनाव कांग्रेस के लिए अध्ययन का विषय होना चाहिए था क्योंकि मीडिया सर्वेक्षणों में जीत की भविष्यवाणी के बावजूद पार्टी बुरी तरह हारी। उन्होंने आरोप लगाया कि टिकट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

टूरिस्ट बस सड़क पर खड़े ट्रेलर में घुसी, 15 श्रद्धालुओं की मौत

जोधपुर के श्रद्धालु कोलायत में पूजा कर लौट रहे थे, जब फलोदी के पास यह हादसा हुआ

जोधपुर, (का.सं.)। प्रदेश में बीते कुछ दिनों से एक के बाद एक सड़क हादसे हो रहे हैं। कभी स्लीपर बस में आग लगी तो कभी स्कूल वैन हादसे का शिकार हुई है। एक के बाद एक लगातार हो रहे सड़क हादसों में कई लोगों की जान जा चुकी है। इस बीच जोधपुर के फलोदी से एक और दुखद खबर सामने आई है। बीकानेर में कोलायत दर्शन करके लौट रहे श्रद्धालुओं से भरी टेंपो ट्रैवलर (टूरिस्ट बस) भारत माला एक्सप्रेस-वे पर खड़े ट्रेलर में जा घुसी। मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने इस भीषण हादसे में 15 लोगों के मौत की पुष्टि की है, जबकि कई लोग घायल बताए जा रहे हैं। सूचना मिलने पर मतोड़ा थाना अधिकारी अमानाराम पुलिस दल के साथ मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों की मदद से घायलों को बाहर निकाला गया और प्राथमिक उपचार के बाद जोधपुर रेफर किया गया।

मतोड़ा थाना अधिकारी अमानाराम ने बताया कि यह हादसा भारतमाला राजमार्ग पर मतोड़ा गांव के पास हुआ। यात्रियों को लेकर जोधपुर की ओर आ रहा एक टैम्पो ट्रैवलर सड़क किनारे खड़े ट्रेलर से टकरा गया। जोधपुर पुलिस आयुक्त ओमप्रकाश ने कहा कि हादसे में 15 यात्रियों की मौत हो गई। जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को पहले प्राथमिक उपचार के लिए ओसियां के अस्पताल ले जाया गया और बाद में जोधपुर रेफर कर दिया गया। पुलिस के अनुसार पीड़ित जोधपुर के सूरसागर इलाके के निवासी थे और बीकानेर के पास कोलायत में कपिल मुनि आश्रम में पूजा-अर्चना करने के बाद लौट रहे थे। सभी शवों को ओसियां के सरकारी अस्पताल के मुर्दाघर में रखवाया गया है।

- **पुलिस के अनुसार, बीकानेर के पास कोलायत में कपिल मुनि आश्रम में पूजा-अर्चना कर लौटने वाले श्रद्धालु जोधपुर के सूरसागर इलाके के निवासी थे। मुख्यमंत्री ने दुर्घटना को अत्यंत दुखद व हृदय विदारक बताया।**

पुलिस आयुक्त ओमप्रकाश पासवान ने कहा कि घायलों को शीघ्रता से उचित उपचार सुविधा केंद्र तक पहुंचाने के लिए एक ग्रीन कॉरिडोर बनाया है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दुर्घटना को अत्यंत दुखद और हृदयविदारक बताया है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन के अधिकारियों को सभी घायलों का समुचित उपचार सुनिश्चित करने हेतु निर्देश दिए गए हैं।

केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सड़क हादसे पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सड़क हादसे की सूचना मिलने के बाद से मैं लगातार प्रशासन के संपर्क में हूँ। अभी हमारा हरसंभव प्रयास है कि घायलों को श्रेष्ठ उपचार मिले, परिजनों को पूरी सहायता दी जाएगी।

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने भी एक्स पर लिखा कि फलोदी के मतोडा में हुए दर्दनाक सड़क हादसे में कई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका ने दूसरे देशों में तख्ता पलटने की नीति त्यागी- तुलसी गबार्ड

अमेरिकी खुफिया विभाग की प्रमुख ने कहा कि अब कूटनीति व आपसी समझौतों को प्राथमिकता दी जाती है

मनामा, 02 नवंबर। अमेरिकी खुफिया विभाग की प्रमुख तुलसी गबार्ड ने अमेरिका द्वारा दूसरे देशों में सत्ता परिवर्तन करवाने के इतिहास को स्वीकार करते हुए कहा है कि राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के शासन काल में अब यह रणनीति खत्म हो गयी है।

गबार्ड ने शनिवार को बहरीन में 21वें मनामा संवाद में दावा किया कि अपने पूर्ववर्तियों के विपरीत ट्रंप प्रशासन तख्ता पलट की बजाय कूटनीति और आपसी समझौतों को प्राथमिकता देता है। उन्होंने कहा, "हमें उम्मीद है कि अमेरिका की पुरानी सोच अब पीछे छूट गई है और यही हमें बहुत लंबे समय से पीछे धकेल रही है। दशकों से, हमारी विदेश नीति शासन परिवर्तन या राष्ट्र निर्माण के एक बेकारऔर अंतहीन चक्र में फँसी हुई है।"

उल्लेखनीय है कि अमेरिका को लोकतंत्र को, बढ़ावा देने या राष्ट्रीय हितों की रक्षा के नाम पर सरकारों को उखाड़

- **तुलसी गबार्ड ने कहा, सरकारों को उखाड़ फेंकने की नीति ने सहयोगियों से ज्यादा दुश्मन पैदा किये तथा अमेरिकी करदाताओं के खरबों डॉलर बर्बाद किए।**

फेंकने की नीतियों को अपनाने के लिए लंबे समय से आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष 2003 में इराक और 2011 में लीबिया से लेकर 2014 में यूक्रेन में रंगीन क्रांति, यानि अहिंसक तरीके से सत्ता पलटने का समर्थन करने तक, अमेरिका की इस विदेश नीति की तीखी आलोचना हो रही है।

गबार्ड ने कहा कि सरकारों को उखाड़ फेंकने और अमेरिकी मॉडल को थोपने की नीति ने सहयोगियों से ज्यादा दुश्मन पैदा किये हैं। उन्होंने कहा कि इस रणनीति ने अमेरिकी करदाताओं के खरबों डॉलर बर्बाद कर दिए हैं, अनगिनत लोगों की जान ले ली और नए सुरक्षा खतरों को बढ़ावा दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि ट्रंप को इस पर रोक लगाने के लिए ही चुना गया था।

गौरतलब है कि ट्रंप 2025 में अपने शपथ ग्रहण के बाद से ही खुद को बार-बार एक वैश्विक शांतिदूत के रूप में पेश करते रहे हैं। आलोचकों का तर्क है कि वेनेज़ुएला और ईरान पर ट्रंप का दबाव अभियान शासन-परिवर्तन रणनीति की नकल ही है।

उल्लेखनीय है कि ईरान लंबे समय से अमेरिका पर प्रतिबंधों और गुप्त कार्रवाइयों के माध्यम से उसे अस्थिर करने की कोशिश करने का आरोप लगाता रहा है। वहीं वेनेज़ुएला ने भी पिछले महीने अमेरिका पर नशा-विरोधी अभियान की आड़ में राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के खिलाफ तख्ता पलट की साजिश रचने का आरोप लगाया था।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बीआरएस कार्यालय पर हमला किया

हैदराबाद, 02 नवंबर। तेलंगाना के खम्मम जिले के मनुगुरु इलाके में रविवार को राजनीतिक हिंसा का मामला सामने आया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बीआरएस (भारत राष्ट्र समिति) के स्थानीय कार्यालय पर धावा बोलकर फर्नीचर जलाया और अपने झंडे

- **कांग्रेस कार्यकर्ताओं का दावा है कि बीआरएस शासनकाल में उनके कार्यालय पर जबरन कब्जा कर लिया गया था।**

फहराए। इस हमले के दौरान कार्यालय में तोड़फोड़ हुई और दोनों पक्षों में मारपीट की खबरें आईं।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो में कांग्रेस कार्यकर्ता बीआरएस कार्यालय में प्रवेश करते हुए नारेबाजी करते दिखाई दिए। वीडियो में लोग कांग्रेस का झंडा थामे हुए कार्यालय में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोकामा से जदयू प्रत्याशी बाहुबली अनंत सिंह 14 दिन की न्यायिक हिरासत में

शनिवार को देर रात पुलिस ने उन्हें दुलारचंद मर्डर केस में गिरफ्तार किया था

पटना, 02 नवंबर। बाहुबली नेता और मोकामा विधानसभा सीट सेजनता दल यूनाइडेट के उम्मीदवार अनंत सिंह को 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। देर रात उन्हें पुलिस ने दुलारचंद यादव मर्डर केस में गिरफ्तार किया। गिरफ्तारी के बाद अनंत सिंह को पटना के सिविल कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने उन्हें 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

अनंत सिंह को सिविल कोर्ट से बेऊर जेल ले जाया गया है। इससे पहले अनंत सिंह और अन्य आरोपियों की डीआईयू सेल में मेडिकल जांच हुई। मेडिकल जांच के बाद इन्हें पटना सिविल कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया।

ज्ञातव्य है कि दुलारचंद यादव की 30 अक्टूबर को पटना के मोकामा क्षेत्र में जन सुराज पार्टी के उम्मीदवार पीयूष प्रियदर्शी के लिए प्रचार करते समय आपसी झड़प के दौरान मौत हो

- **पटना में एसएसपी कार्तिकेय शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि पुलिस ने दुलारचंद हत्या के सिलसिले में तीन लोगों, अनंत सिंह, मणिकांत ठाकुर और रंजीत राम को गिरफ्तार किया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार, किसी कठोर व कुंद वस्तु से हृदय और फेफड़ों को चोट पहुँचने से दुलारचंद की मृत्यु हुई है।**

गई थी। दुलारचंद के समर्थकों ने अनंत सिंह और उनके समर्थकों पर हत्या का आरोप लगाया था। घटना भदौर और घोसवारी थानों के पास मोकामा इलाके में हुई थी।

पटना के एसएसपी कार्तिकेय शर्मा ने पटना के जिलाधिकारी त्यागराजन एस एम के साथ देर रात एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा, "पुलिस ने दुलार चंद यादव की हत्या के सिलसिले में तीन लोगों - अनंत सिंह, मणिकांत ठाकुर और रंजीत राम को गिरफ्तार किया है।" एसएसपी ने बताया कि यादव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार, किसी कठोर और कुंद वस्तु से हृदय और फेफड़ों को चोट पहुंचने के कारण हृदय गति रुकने से यादव की मौत हो गई। उन्होंने कहा, "इसलिए, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि यह हत्या का मामला है।" शर्मा ने बताया कि जांच में यह भी पता चला है कि घटना के समय तीनों मौजूद थे।

एसएसपी ने कहा, " दुलारचंद यादव की हत्या के मामले में पुलिस की जांच के तहत उन्हें गिरफ्तार किया गया है। घटना की जांच के लिए पुलिस ने कुल चार प्राथमिकी दर्ज की हैं, जिनमें से एक आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से संबंधित है।" उन्होंने बताया कि अनंत सिंह का नाम एक प्राथमिकी में शामिल है। कई बार विधायक रहे सिंह की पत्नी नीलम देवी फिलहाल मोकामा सीट से विधायक हैं। सिंह पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का मामला भी दर्ज किया गया है क्योंकि उनके बड़े काफिले के साथ घूमने के मामले सामने आए हैं।

दुलारचंद यादव की हत्या के बारे में पूछे जाने पर सिंह ने अपने समर्थकों और यादव के बीच झड़प की बात स्वीकार की थी, हालांकि उन्होंने 'अंडरवर्ल्ड' और स्थानीय राजनीति में अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी सूरजभान पर दोष मढ़ ने की कोशिश की थी। सूरजभान की पत्नी वीणा देवी राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के टिकट पर इस सीट से चुनाव लड़ रही हैं।

बिहार में 6 और 11 नवंबर को दो चरण में मतदान होगा और मतगणना 14 नवंबर को होगी।

इसरो ने अब तक का सबसे भारी संचार उपग्रह लाँच किया

इससे नौसेना को समुद्र में बेहतर संचार सुविधा तथा समुद्री क्षेत्र की निगरानी में मदद मिलेगी

श्रीहरिकोटा, 02 नवंबर। इसरो ने श्रीहरिकोटा से आज अपने शक्तिशाली रॉकेट एलवीएम3-एम5 के जरिए सीएमएस-03 (जीसैट-7आर) संचार उपग्रह को सफलतापूर्वक लॉन्च कर दिया है। यह उपग्रह खास तौर पर भारतीय नौसेना के लिए बनाया गया है।

ज्ञातव्य है कि लगभग 4000 किलोग्राम वजनी यह उपग्रह अब तक का भारत का सबसे भारी संचार उपग्रह है। इसके जरिए नौसेना को समुद्र में बेहतर संचार सुविधा और समुद्री क्षेत्र की निगरानी में बड़ी मदद मिलेगी। इस उपग्रह में देश में विकसित कई अत्याधुनिक तकनीकी उपकरण लगाए गए हैं, जो भारतीय नौसेना की संचालन क्षमता को और मजबूत बनाएंगे।

- **इसरो प्रमुख वी. नारायण ने कहा कि उपग्रह को कम से कम 15 वर्षों तक संचार सेवाएं प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है तथा यह आत्मनिर्भर भारत का ज्वलंत उदाहरण है।**

इसरो ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में एलवीएम3-एम5/सीएमएस-03 मिशन का अपडेट दिया है। इसरो के अनुसार, सीएमएस-03 रॉकेट से सफलतापूर्वक अलग हुआ है, इसरो ने इसे परफेक्ट इजेक्शन बताया है।

इसरो के एलवीएम-एम5 द्वारा सीएमएस-03 संचार उपग्रह के प्रक्षेपण पर, इसरो प्रमुख वी. नारायणन ने कहा, सीएम-03 उपग्रह एक बहु-बैंड संचार उपग्रह है, जिसकी कवरेज भारतीय भूभाग सहित एक विस्तृत समुद्री क्षेत्र में है, और इसे कम से कम 15 वर्षों तक संचार सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस उपग्रह में कई नई तकनीकों का समावेश है और यह आत्मनिर्भर भारत का एक और ज्वलंत उदाहरण है। मैं देश की संचार क्षमता के लिए इस महत्वपूर्ण, जटिल उपग्रह को साकार करने के लिए कई इसरो केंद्रों में कार्यरत पूरी उपग्रह टीम को बधाई देता हूं। प्रक्षेपण अभियान के दौरान हमें कठिन और चुनौतीपूर्ण समय का सामना करना पड़ा। मौसम उतना अनुकूल नहीं था। लेकिन फिर भी, मैं इस अवसर पर आप सभी की सराहना करता हूं कि इस कठिन मौसम की स्थिति में भी, हम सफलतापूर्वक इस मिशन को भव्य और सफल तरीके से पूरा कर पाए।

इसरो के मुताबिक, करीब 4,400 किलोग्राम वजनी सीएमएस-03 भारतीय धरती से प्रक्षेपित होने वाला और भू-समकालिक स्थानांतरण कक्षा (जीटीओ) में स्थापित होने वाला सबसे भारी उपग्रह है। इसे एलवीएम3-एम5 रॉकेट के जरिए प्रक्षेपित किया गया है। 4000 किलोग्राम तक के भारी पेलोड ले जाने की क्षमता के कारण एलवीएम3-एम5 रॉकेट को बाहुबली नाम दिया गया है।

मोदी ने पटना में मैगा रोड शो किया

पटना, 02 नवंबर। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर सियासी सरगर्मी तेज है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को दिनभर बिहार में प्रचार किया। पहले उन्होंने आरा और नवादा में जनसभाएं कीं। इसके बाद पटना में मैगा रोड शो किया। इसके बाद उन्होंने पटना साहिब गुरुद्वारे में मत्था टेका। प्रधानमंत्री मोदी का रोड शो कदमकुआं के दिनकर चौक से शुरू

- **लोकसभा चुनाव के दौरान रोड शो में शामिल नीतीश कुमार इस बार मौजूद नहीं थे।**

होकर गांधी मैदान के उद्योग भवन तक चला, जिसकी कुल दूरी करीब 2.8 किलोमीटर है। रोड शो के दौरान हजारों की संख्या में लोगों ने अपने अपने घरों के छत से फूल बरसाये और महिलाओं ने आरती उतारी। इस रोड शो का उद्देश्य पटना की 14 विधानसभा सीटों के मतदाताओं को सीधा प्रभावित करना है।

रोड शो से पहले, पीएम मोदी ने राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लालू यादव व सोनिया गांधी की इच्छा पूरी नहीं होगी- अमित शाह

उन्होंने बिहार में चुनाव रैली में कहा कि न तेजस्वी मुख्यमंत्री बन सकते हैं और न राहुल प्रधानमंत्री

मुजफ्फरपुर, 02 नवंबर। केन्द्रीय गृह मंत्री और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने रविवार को आरोप लगाया कि राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता लालू प्रसाद यादव चाहते हैं कि उनके पुत्र तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बनें, जबकि कांग्रेस नेता सोनिया गांधी चाहती हैं कि उनके पुत्र राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनें, लेकिन बिहार में नीतीश कुमार हैं और दिल्ली में नरेन्द्र मोदी, इसलिये न तेजस्वी मुख्यमंत्री बन सकते हैं, न ही राहुल प्रधानमंत्री।

शाह ने आज मुजफ्फरपुर जिले में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) प्रत्याशियों के समर्थन में आयोजित रैली को संबोधित करते हुये कहा कि लालू यादव और सोनिया गांधी दोनों को देश की नहीं, अपने परिवार की चिंता है।

शाह ने प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जोड़ी को

- **केन्द्रीय गृह मंत्री ने प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जोड़ी को विकास की गारंटी बताया।**

विकास की गारंटी बताया और कहा कि बिहार को जंगलराज से निकालकर विकास की राह पर लाने का काम मोदी-नीतीश की जोड़ी ने किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यदि फिर से लालू के बेटे मुख्यमंत्री बनते हैं तो बिहार में तीन नए मंत्रालय खुलेंगे। एक अपहरण, दूसरा रंगदारी और तीसरा हत्या को बढ़ावा देने वाला मंत्रालय खुलेगा।

शाह ने राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव पर हमला करते हुये कहा कि उन्होंने बिहार के लिए

कुछ नहीं किया। उन्होंने कहा कि यादव ने सिर्फ घोटाले किए और घोटालों की लाइन लगा दी। उन्होंने चारा घोटाला, लैंड फॉर जॉब घोटाला, होटल बेचने का घोटाला और अलकतरा घोटाला का जिक्र करते हुए कहा कि लालू यादव ने हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार फैलाया। उन्होंने दावा किया कि भाजपा पर किसी भी घोटाले का आरोप नहीं है।

शाह ने कहा कि मुख्यमंत्री कुमार और प्रधानमंत्री मोदी की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार ने बिहार के विकास के लिए अनेक कार्य किए हैं। उन्होंने दावा किया कि नीतीश-मोदी की जोड़ी को न तो बिहार में और न ही पूरे देश में कोई हरा सकता है। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव और राहुल गांधी का सपना कभी पूरा नहीं होगा, यह सपना सिर्फ सपना ही रह जाएगा।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि कांग्रेस और राजद वालों ने राम मंदिर का विरोध

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

व्यवसाय समय का यन्त्र है। –नेपोलियन

हमारे चुनाव : कुछ दो टूक बातें!

इतनी सारी विविधताएं और इतना बड़ा देश! हमने अपने लिए गणतंत्र का मार्ग चुना और गणतंत्र की रीढ़ है समय-समय पर होने वाले चुनाव। चुनाव आम नागरिक को यह एहसास कराते हैं कि अपनी हैसियत में वह किसी अन्य से कमतर नहीं है, सब समान हैं और यह भी कि उसे यह हक़ है कि वह अपने प्रतिनिधियों का चयन करे। 26 जनवरी 1950 को हमने अपने संविधान को अंगीकार किया और तदनुरूप 25 अक्टोबर 1951 और 21 फरवरी 1952 के बीच देश में पहला आम चुनाव सम्पन्न हुआ। इसके बाद देश के अलग-अलग हिस्सों में समय-समय पर चुनाव होते रहे हैं – कभी लोकसभा के तो कभी राज्यों की विधान सभाओं के, कभी राष्ट्रपति के तो कभी उपराष्ट्रपति के, कभी ज़िला पंचायतों के तो कभी नगर पालिकाओं के। और भी अनेक निकायों के चुनाव होते रहते हैं। कभी पूरी संस्था के चुनाव होते हैं तो कभी कोई उपचुनाव होता है। कुल मिलाकर स्थिति यह है कि देश के किसी न किसी भाग में लगभग हर समय कोई न कोई चुनाव होता रहता है। इधर हमारी सरकार ने एक देश एक चुनाव की आकर्षक लगने वाली बात हवा में उछाली तो है, लेकिन ऐसा हो ही जाएगा, यह कहना कठिन है। वैसे अगर यह मुमकिन हो जाए कि देश की लोकसभा और राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव एक साथ हों, तो न केवल बहुत सारा खर्चा बचेगा, समय की भी भारी बचत होगी।

भारतीय चुनाव तंत्र दुनिया का सबसे विशाल चुनाव तंत्र है। देश के पहले आम चुनाव में मात्र 17.3 करोड़ मतदाता पंजीकृत थे, जबकि सन् 2024 में संपन्न हुए लोकसभा चुनावों में 96.88 करोड़ पंजीकृत मतदाता थे जिनके लिए साढ़े दस लाख मतदान केंद्र बनाए गए और 1.7 करोड़ इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों और 1.8 करोड़ वीवीपेट मशीनों का प्रयोग किया गया। इस चुनाव में मतदान प्रतिशत 67.4 रहा और ख़ास बात यह कि इस बार महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक रही। जहां 67 प्रतिशत पुरुषों ने मतदान किया, मतदान करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 67.7 रहा। भारत में चुनाव चुनाव आयोग की देखरेख में संपन्न होता है। 1950 में स्थापित भारतीय चुनाव आयोग अब तक 17 लोकसभा चुनाव, सैंकड़ों विधान सभा चुनाव और हज़ारों स्थानीय निकाय चुनाव सम्पन्न करवा चुका है। 1950 में एकल चुनाव आयुक्त की व्यवस्था थी जो 1989 से बहु सदस्यीय चुनाव आयोग में परिवर्तित हो गई। चुनाव आयोग एक संवैधानिक निकाय है और यह कहा जाता है कि यह स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।

जब हमारे यहां चुनाव होने लगे, प्रारम्भ में सब कुछ काफी हद तक ठीक था। हमारा यह पहला अनुभव था इसलिए कुछ चूकें भी हुईं, और उन्हें सुधारा भी गया। 1951 में जब से हमारे देश में चुनाव होने लगे हैं, 2025 तक आते-आते चुनाव प्रक्रिया में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। निश्चय ही ये बदलाव प्रक्रिया को अधिक सहज, सुरक्षित और पारदर्शी बनाने के लिए किए गए हैं। ऐसा नहीं है कि इन बदलावों की आलोचना नहीं हुई है। सबसे बड़ी आलोचना तो इधर के वर्षों में ईवीएम के इस्तेमाल को लेकर हुई है। यह भी कहा गया है कि जब दुनिया के अनेक उन्नत देश भी ईवीएम का प्रयोग नहीं कर रहे हैं तो हम ही क्यों ऐसा करते रहने की ज़िद पर अड़े हुए हैं। स्वाभाविक है कि सरकार इसके पक्ष में है और वह अपनी तरह से इसका बचाव भी करती रहती है। हमारे चुनाव लगातार खर्चीले होते गए हैं। वर्तमान में लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए व्यय सीमा 95 लाख और विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए 40 लाख रुपये है। चुनाव के बाद हर प्रत्याशी अपने खर्च का विवरण प्रस्तुत करता है लेकिन चुनाव प्रचार पर एक नज़र डालते ही यह बात साफ़ हो जाती है कि हर प्रत्याशी इस व्यय सीमा से कई गुना ज़्यादा खर्च करता है। सच तो यह है कि इतनी राशि में तो एक विश्वविद्यालय के छात्र संघ का चुनाव भी शायद नहीं लड़ा जा सकता है। आज जिस तड़क-भड़क के साथ चुनाव लड़े जाते हैं उसे देखते हुए इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि कोई सामान्य व्यक्ति तो चुनाव लड़ ही नहीं सकता है। उसके जीतने की तो बात ही क्या की जाए! एडीआर की एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश के 88 प्रतिशत सांसद करोड़पति हैं और सांसदों की औसत संपत्ति पांच करोड़ रुपये है। यह स्थिति उस देश में है जहां अब भी देश की सरकार को 81 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देना पड़ रहा है। विचारणीय बात यह भी है कि जब करोड़ों रुपये खर्च करके कोई चुनाव लड़ता है तो क्या ऐसा वह केवल जनता की सेवा करने की नीयत से करता है? चुनाव के खर्चों के साथ राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदे की भी चर्चा होती है और यह चर्चा राजनीतिक दलों द्वारा अपने चंदा दाताओं को अनुचित लाभ पहुंचाने की हवा में तैरती बातों तक जा पहुंचती है।

हम किसी को नहीं चुनते हैं, और जो चुना जाता है उसे हमसे कोई लेना-देना नहीं होता है! पहले प्रत्याशी कम से कम पांच साल में एक बार मतदाता के द्वार पर तो जाता था, अब तो उस औपचारिकता को भी तिलांजलि दे दी गई है। अब चुनाव वाकई 'लड़े' जाते हैं और आम नागरिक इस लड़ाई से दूर रहने में ही अपनी भलाई समझता है! हमें विचार करना होगा कि यह स्थिति कैसे बदले और कैसे चुनाव में आम जन की भूमिका बढ़े!

हमारे देश के चुनावों को लेकर धनबल की ही नहीं, बाहुबल की भी चर्चा कम नहीं होती है। हमारे लगभग 29 प्रतिशत सांसदों पर हत्या, बलात्कार जैसे गम्भीर अपराधों के आरोप हैं। कम मतदान एक और समस्या है जिसके कारण बहुत सारी विसंगतियां उत्पन्न होती हैं। यह भी देखा गया है कि सम्पन्न जन मतदान प्रक्रिया से प्राय: दूरी बरतते हैं। मतदाताओं को ललचा कर या उन पर दबाव डाल कर मतदान कराने की चर्चा हमेशा ही होती है। चुनाव से ठीक पहले सरकारें अपना खज़ाना खोल देती हैं। पहले जबरन वोट डाल दिए जाते थे, फिर बूथ कैप्चरिंग होने लगी और अब ईवीएम से छेड़छाड़ की चर्चाएं होती हैं। सत्तारूढ़ दल जहां इन चर्चाओं को सिरे से खारिज़ करता है, प्रतिपक्ष अपनी बात के समर्थन में अनेक तथ्य व प्रमाण प्रस्तुत करता है। मतदातासूची में छेड़छाड़, निर्वाचन क्षेत्रों के सीमांकन आदि को लेकर भी अनेक प्रकार की चर्चाएं सदा ही होती हैं। इन सारी चर्चाओं का मूल यही है कि सत्तारूढ़ दल अपना लाभ-हानि देखकर यह सब करता है।

भारत में चुनाव मुख्यत: दलगत आधार पर होते हैं। पहले हर दल चुनाव से पहले अपना घोषणापत्र ज़ारी करता था जिसमें वह बताता था कि अगर उसे सत्ता मिल गई तो वह क्या-क्या करेगा। वैसे तो तब भी किसी दल पर यह बाध्यता नहीं थी कि वह सत्ता में आने पर पहले किए गए अपने वादों को पूरा करे ही, कम से कम प्रतिपक्षी उससे जवाब तलब तो किया ही करते थे। अब आहिस्ता-आहिस्ता दलों ने चुनाव घोषणा पत्रों को अनावश्यक मान लिया है। या तो वे इन्हें ज़ारी करते ही नहीं और अगर करते भी हैं तो न तो वे और न उनके विरोधी इनको कोई ख़ास तवज्जोह देते हैं। चुनाव वादों और घोषणाओं की बजाय व्यक्तियों को केंद्र में रखकर लड़े जाने लगे हैं। अब चुनाव सिद्धांतों और मूल्यों की बजाय चेहरों पर लड़े जाने लगे हैं। यहां तक कि देश का सबसे बड़ा दल भी चुनाव केवल एक चेहरे को आगे करके लड़ता है।जहां तक चुनाव से पहले किए गए वादों की बात है दलों को अपने वादों को नकारने में या उन्हें जुमला कह कर खारिज़ कर देने में कोई झिझक नहीं होती है। यह चालाकी भी बरती जाती है कि मुख्य नेता की बजाय छुटभैया नेताओं से वादे करवाए जाएं और जीत जाने पर बड़े सहज भाव से कह दिया जाए कि हमने तो ऐसा कोई वादा किया ही नहीं था। आज भले ही सोशल मीडिया और सुलभ तकनीक के दम पर हर कहे का रिकॉर्ड रखना और उसे दिखा पाना सम्भव हो गया है, राजनीतिक दलों और राजनीतिक नेताओं ने अपनी चमड़ी इतनी मोटी कर ली है कि वे किसी बात से लज्जित नहीं होते हैं।

अभी जैसा मैंने कहा, अब चुनाव घोषणाओं पर कम और चेहरों पर ज़्यादा लड़े जाने लगे हैं। और ये चेहरे जिस तरह की बातें करते हैं उनसे हम केवल लज्जित ही हो सकते हैं। एक दूसरे के प्रति अपभाषा का प्रयोग करना, फूहड़ भाषा बरतना, मिथ्या इलज़ाम लगाना, चीज़ों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करना अपने पद और हैसियत का अनुचित उपयोग करना अब अपवाद न रहकर आम हो गया है। चुनावी आचार संहिता की खुले आम धज्जियां उड़ाई जाती हैं। भले ही चुनाव आचार संहिता मतदान प्रारंभ होने से 48 घण्टे पहले प्रचार बंद करने की बात कहे, जो सत्तानशीन हैं वे पूरी बेशर्मी से इस व्यवस्था को ठेंगा दिखाते हैं। उनके सामने बस एक ही लक्ष्य रहता है – जीत हासिल करना। अब नैतिक अनैतिक की सीमा रेखा धूमिल ही नहीं अदृश्य हो गई है।

आज हम निस्संदेह इस बात पर गर्व करते हैं कि हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हम हर पांचवें साल अपनी सरकार चुनते हैं, यह एक दुखद यथार्थ है कि सच्चे अर्थों में लोकतंत्र अभी हमारी पहुंच से बाहर है। हम किसी को नहीं चुनते हैं, और जो चुना जाता है उसे हमसे कोई लेना देना नहीं होता है! पहले प्रत्याशी कम से कम पांच साल में एक बार मतदाता के द्वार पर तो जाता था, अब तो उस औपचारिकता को भी तिलांजलि दे दी गई है। अब चुनाव वाकई 'लड़े' जाते हैं और आम नागरिक इस लड़ाई से दूर रहने में ही अपनी भलाई समझता है! हमें विचार करना होगा कि यह स्थिति कैसे बदले और कैसे चुनाव में आम जन की भूमिका बढ़े!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सत्ता चरित्रम् ………………
भगत सिंह का मुकदमा – 2

रामनिवास बैरवा

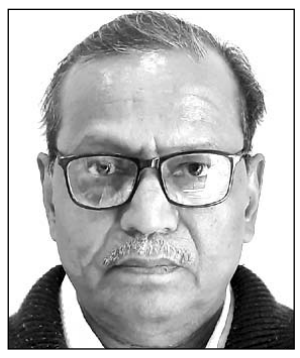

गतांक से आगे जारी...

जल्दी ही एक पखवाड़े के अन्दर ही 12 जून, 1929 को असेंबली बम के मामले का ड्रामा खत्म हुआ। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को उम्रकैद की सजा दी गयी। 'इंडिया लॉ जर्नल' में प्रकाशित एक लेख के अनुसार सरकारी गवाहों को पढ़ाया गया था कि "अदालत में क्या बोलना है जिन्हें भगतसिंह ने गलत साबित कर दिया कि बम फैंकते समय उसके पास कोई पिस्तौल नहीं थी, जबकि सरकारी बवाह कह रहे थे कि भगतसिंह ने दो-तीन राउंड गोलियां चलाई थी।"

भगतसिंह (आजीवन कैदी न. 47) ने लाहौर जेल से एक पत्र जिसमें 26 जून, 1929 से शुरू होने सांडर्स मामले की लाहौर में सुनवाई का हवाला देते हुए कि वे मियांवाली से कैसे अपने बचाव के लिए किसी वकील से बात कर सकेंगे। और दूसरे पत्र में इंस्पेक्टर जनरल जेल, लाहौर को लिखा कि उन्हें जेल में अन्य साधारण अपराधियों के साथ रखा जाकर घटिया खाना, चावल दाल, रोटियां दी जा रही हैं, जबकि उन्हें, एच. एस. आर. ए. के क्रान्तिकारियों को राजनैतिक कैदी का दर्जा देकर अच्छा खाना और अच्छी सुविधाएं दी जानी चाहिए साथ ही पढ़ने के लिए पुस्तकें पत्र पत्रिकाएं उपलब्ध करवाई जाये। इन मागों को लेकर वे 15 जून, 1929 से भूख हड़ताल पर थे।

असेंबली बम केस का फैसला 12 जून, 1929 को ही दिया जा चुका था। अब लाहौर के सांडर्स हत्या के मामले में 24 क्रान्तिकारियों के नाम मुकदमे में लिये गये उनमें से 16 क्रान्तिकारियों पर मुकदमा शुरू किया गया। इनमें प्रमुख नाम थे- सुखदेव, भगतसिंह, किशोरीलाल, देसराज, प्रेमदत्त, जयदेव कपूर, विश्वकर्मा, महावीर सिंह, यतीन्द्रनाथ दास, अजय कुमार घोष, राजगुरू, कुंदनलाल और कमलनाथ तिवारी। बटुकेश्वर दत्त के खिलाफ केस वापस ले लिया गया।

17 दिसम्बर, 1928 को सांडर्स हत्या (लाहौर षड्यंत्र) के मामले में चन्द्र शेखर आजाद, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, जतीन्द्र नाथ और राजगुरू को शामिल होना बताया गया। उनमें से कुछ को गिरफ्तार किया गया। 08 अप्रेल, 1929 के दिन असेंबली में बम फैंकने के सिलसिले में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने आत्म-समर्पण करके गिरफ्तार दी। 12 जून, 1929 को बम फैकने के मामले में दोनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

लाहौर के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सैफूद्दीन किचलू, मोहम्मद अलम और गोपीचंद भार्गव ने 30 कैदियों की मांगों के समर्थन में जनमत जगाने का काम पूरी लगन से किया। उसके परिणामस्वरूप पूरे हिन्दुस्तान में 30 जून, 1929 को 'भगत सिंह दिवस' के रूप में मनाया गया। लाहौर षड्यंत्र केस में अदालती कार्यवाही शुरू करने से पहले भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को भी मियांवाली जेल से लाहौर जेल ले जाया गया।

गांधीजी के अहिंसा, असहयोग, बहिष्कार और अनशन के मार्ग से असहमत इन नौजवान क्रान्तिकारियों ने गांधी के अस्त्र ही से अंग्रेज न्याय व्यवस्था को खोखला साबित कर दिया था। उनकी भूख हड़ताल के कारण कैदियों को अदालत में उपस्थित नहीं किया जा सकता था। दूसरी तरफ लार्ड इरविन को जल्दी ही उन नौजवानों को मृत्युदंड देना था। इन दोनों समस्याओं के समाधान के लिए इरविन ने एक अध्यादेश जारी करके क्रिमिनल प्रोसीजर कोड 1898 में नई धारा 540-बी जोड़ी जिससे कैदियों की अनुपस्थिति में भी अदालती कार्यवाही को पूरा किया जा सकता था। जब इन अध्यादेशों के बिल शीतकालीन राजधानी शिमला में केंद्रीय असेम्बली के सामने 12 सितम्बर, 1929 को रखे गये तो तब इसे साधारण जनता ने 'भूख हड़ताल बिल' नाम दिया गया। विट्ठल भाई पटेल सदन के अध्यक्ष थे। बिल विरोध में अन्य सदस्य मदन मोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना और डॉ. एम. आर. जयकर ने पूरी तैयारी के साथ बोला था।

उक्त अध्यादेश के अन्तर्गत विशेष ट्रिब्यूनल बनाया जिसके सदस्य थे- जस्टिस जे. कोल्डट्रीम (अध्यक्ष), जस्टिस आगा हेदर और जस्टिस जी.सी. हिल्टन। लाहौर के पुंज हाउस में 5 मई, 1930 से ट्रिब्यूनल में मुकदमें की कार्रवाई शुरू की गई। भगतसिंह ने ट्रिब्यूनल की वैधानिकता, उसके गैर-कानूनी होने संबंधी तर्क पेश करने के लिए 15 दिनों का समय मांगा, जो नहीं दिया गया। 12 मई, 1930 को भगतसिंह और उनके साथियों को हथकड़ियां डालकर ट्रिब्यूनल के सामने बस से लाया गया। हथकड़ियां खोलने की मांग पर जस्टिस जी. सी. हिल्टन उन्हें ने जबरदस्ती बस से उतारने के आदेश दिये, जिसकी प्रतिक्रिया में भगतसिंह आदि ने अदालती ट्रिब्यूनल का बहिष्कार कर दिया, तब ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष ने उन्हें लाठियों से पीटने का आदेश दिया। भगतसिंह को उपस्थित जनता और संवाददाताओं के सामने लाठियों और जूतों से मारा गया। भारतीयों को गाली देने पर भगतसिंह ने जस्टिस आगा हैदर से मुखातिब होकर उनके भारतीय होने पर सवाल उठाया और कहा कि "ऐसी मानसिक स्थिति वाले जज कैसे न्याय करेंगे? तब जस्टिस आगा हैदर ने उस दिन की कार्रवाई पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। उस घटना की दुनियाभर में चर्चा हुई। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप सारे भारत में एक बार फिर 'भगतसिंह दिवस' मनाया गया। इससे बौखलाकर वायसराय ने ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष जस्टिस कोल्डस्ट्रीम को लम्बी छुट्टियों पर भेज दिया तथा ट्रिब्यूनल का एक सप्ताह में ही भंग करना पड़ा। 21 मई, 1930 को ट्रिब्युनल का पुनर्गठन किया गया जिसमें जस्टिस जी. सी. हिल्टन को अध्यक्ष बनाया जो पहले ट्रिब्यूनल में सदस्य थे, तथा दो नये सदस्य जस्टिस जे. के. टैप और जस्टिस अब्दुल कादिर बनाये गये।"

जी. टी. एच. हेमिल्टन हार्डिंग, लाहौर के पुलिस सुपरिटेंडेंट ने अपने बयान में बताया पंजाब के गवर्नर के मुख्य सचिव के खास आदेशों के अनुसार एफ. आई. आर. लिखी गई थी, जिसके विवरण के बारे में हेमिल्टन हार्डिंग को कोई जानकारी नहीं थी। सरकार मुख्य रूप से सरकारी गवाह एच. एस. आर. ए. से जुड़े कार्यकर्ता पी. एन. घोष, हंसराज वोरा तथा जय गोपाल की गवाहियों पर निर्भर रहा।

30 सितम्बर, 1930 को मुकदमें की कार्रवाई खतम की गई। 07 अक्टूबर, 1930 को 300 पृष्ठों का निर्णय लिखा गया जिसमें भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को सांडर्स की हत्या का दोषी ठहराया गया। बाकी अभियुक्तों में से अजय घोष, जतीन्द्र नाथ सान्याल और देशराज को बरी किया गया। कुंदनलाल को सात साल की जेल की सजा दी गई तथा अन्य सात, किशोरीलाल, महावीर सिंह, बिजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, गया प्रसाद, जयदेव तथा कमल नाथ तिवारी को आजीवन कारावास की सजा दी गई।

उल्लेखनीय है कि एक मई, 1930 का अध्यादेश सिर्फ छ: महिने तक ही प्रभावी रहने वाला था, यदि उसका बिल केंद्रीय लेजिस्लेटिव असेंबली के द्वारा पारित नहीं किया जाता, और वह सम्भव भीं था, अत: छ: माह के अन्दर-अन्दर, यानि कि 31 अक्टूबर, 1930 तक हर हालत में ट्रिब्यूनल को वह मुकदमा खतम करना था, और जल्दबाजी इतनी कि उसी छ: माह की अवधि में भगतसिंह को मृत्युदंड भी देना था; सुखदेव और राजगुरू को तो अपने फैसले की दुर्भावना को छुपाने के लिए सरकार के द्वारा शामिल किया गया था।

….. और 07 अक्टूबर, 1930 को ट्रिब्यूनल ने अपना फैसला सुना दिया- भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी पर तब तक लटकाया जाये जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो जाये।

इसी प्रकिया को पूरा करने के लिए ट्रिब्यूनल ने 07 अक्टूबर, 1930 को ही भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को 17 अक्टूबर, 1930 को फांसी पर लटकाकर मौत की सजा देने का 'डेथ वारंट' भी जारी कर दिया गया था- वह इस प्रकार से था-

मृत्युदण्ड पर अमल का वारंट

अपराध प्रक्रिया संहिता की धारा 381, 1930 के अध्यादेश सं. घ्छ्छ की धारा 8 एवं घ्छ, 1930 के अध्यादेश सं. घ्छ्छ के तहत गठित लाहौर षड्यंत्र केस ट्रिब्यूनल की अदालत में।

लाहौर सेन्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट के लिए

भगतसिंह वल्द किशनसिंह, निवासी खवासरियां, लाहौर षड्यंत्र केस के कैदियों में से एक है, को 05 मई, 1930 को शुरू होकर 7 अक्टूबर, 1930 को खत्म हुए मुकदमें में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 121 और धारा 302 के तहत और विस्फोटक पदार्थ कानून की धारा 5 के साथ पठित उस कानून की धारा 4(बी) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा 120 एफ के तहत अपराध का दोषी पाया गया है और एतद्द्वारा मृत्युदण्ड दिया जाता है।

इस आदेश द्वारा आपको, उपरोक्त सुपरिण्टेण्डेण्ट को, अधिकृत किया जाता है और अपेक्षा की जाती है कि इस आदेश पर अमल करते हुए 17 अक्टूबर के दिन लाहौर में उपरोक्त भगतसिंह को गर्दन से तब तक लटकाया जाये तब तक उसकी मृत्यु न हो जाये, और आदेश पर अमल के प्रमाणमात्र के साथ इस वारण्ट को हाईकोर्ट में वापस भेज दें। हमारे हाथों से तथा अदालत की मुहर के साथ आज 7 अक्टूबर 1930 को दिया गया।

ट्रिब्यूनल की मुहर
ह. ट्रिब्यूनल के सदस्य
ह. ट्रिब्यूनल के सदस्य
ह. ट्रिब्यूनल के सदस्य

जब 17 अक्टूबर, 1930 को लाहौर की जेल में फांसी दिये जाने का वारण्ट जारी किया गया था, तो 17 अक्टूबर, 1930 को फांसी नहीं दिये जाने पर उपरोक्त डेथ वारंट अपने आप ही निष्प्रभावी हो गया था। तब उन तीनों को फांसी की सजा दिया जाना कानून-सम्मत नहीं था, जब तक कि 23 मार्च,1931 को मृत्युदण्ड देने का नया डेथ वारंट जारी कर दिया गया हो और वह जारी भी नहीं किया गया था। लेकिन कांग्रेस के बैरिस्टरों की फौज भी इस बात को जानते हुए भी चुप रही और उनको फांसी दिये जाने का इंतजार करते रही।

भगतसिंह ने अपने मित्रों को 22 मार्च, 1931 को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने अपने राजनीतिक महत्व को रेखांकित किया था-

….स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिये, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। लेकिन मैं एक शर्त पर जिन्दा रह सकता हूँ, कि मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी क्रान्ति का प्रतीक बन चुका है और क्रान्तिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया है- इतना ऊंचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊंचा मैं हर्गिज नहीं हो सकता।

…….. लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएं अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रान्ति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी। ………..

आपका साथी -भगतसिंह

भारत के सरकारी रिकार्ड इतिहास में भगतसिंह आज भी एक आतंकवादी है, आजाद भारत की सरकार भगतसिंह को आज तक राजनीतिक व्यक्ति, राजनीतिक कैदी के रूप में मान्यता नहीं दे रही है।

लेकिन, भारत सरकार की नीतियों के विपरीत भगतसिंह सीमाओं के पार आज भी जनता को प्रेरणा दे रहे है। उसी प्रेरणा से प्रेरित होकर पाकिस्तान के एक वकील इम्तियाज राशीद कुरैशी ने लाहौर हाईकोर्ट में भगतसिंह के खिलाफ गैरकानूनी और अनियमितताओं को दर्शाते हुए एक रिटपिटिशन दाखिल की है। वकील कुरैशी पाकिस्तान के लाहौर में "भगतसिंह मेमोरियल फाउंडेशन" चलाते हैं। अपने निरन्तर प्रयासों के बाद कुरैशी ने भगतसिंह के विरूद्ध सांडर्स मामले के एफ.आई.आर. सहित सभी दस्तावेज प्राप्त कर सके हैं ताकि 87 वर्ष पुराने मामले को हाईकोर्ट में चैलेंज कर सकें। (कुरैशी के प्रयास 2017 के हैं।)

इम्तियाज राशीद कुरैशी को उम्मीद है कि कोर्ट यदि भगतसिंह के खिलाफ दिये गये फैसले को रद्द कर देती है तो ब्रिटिश क्राउन पर दबाव डाला जा सकता है कि 94 साल पहले फांसी दे दिये गये भगतसिंह के खिलाफ शर्मनाक मुकदमें और न्यायिक हत्या के लिए माफी मांगे।

-रामनिवास बैरवा,
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त

बिजयनगर में रेगर समाज का प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न

- **सम्मेलन में 13 जोड़े दाम्पत्य सूत्र में बंधे, गाजे-बाजे के साथ निकली बिंदौरी**
- **सामूहिक विवाह सम्मेलन के 13 नव विवाहित जोड़ों को तत्काल विवाह पंजीयन प्रमाण पत्र मिला**

बिजयनगर, (निसं)। देवउठनी एकादशी के पावन अवसर पर अखिल भारतीय रेगर समाज सुधारक समिति परगना मसूदा के तत्वावधान में आयोजित प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन में 13 जोड़े दांपत्य सूत्र में बंधे।

सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन मां गंगा छात्रावास सिंधी कॉलोनी में किया गया। मां गंगा छात्रावास परिसर से रविवार प्रात: वर-वधुओं की सामूहिक बिंदौरी निकाली गई। भारत रत्न बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर और रेगर समाज के आदर्श संत रविदास महाराज के जयकारों के साथ बड़ी संख्या में समाज के युवा बुर्जुग मातृशक्ति बिंदोरी में शामिल हुये। बिजयनगर में रेगर समाज द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में एक अत्यंत सराहनीय पहल की गई, जिसने सरकारी प्रक्रियाओं को आसान बना दिया। सामूहिक विवाह सम्मेलन के 13 नव विवाहित जोड़ों को तत्काल विवाह पंजीयन प्रमाण पत्र मिला। नवविवाहित जोड़ों ने अनूठी सेवा का लाभ उठाया। सामूहिक विवाह सम्मेलन समिति ने पूरा खर्च उठाया। इस पूरी प्रक्रिया को सुचारू बनाने में सम्मेलन समिति अध्यक्ष सीताराम पवार का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विवाह प्रमाण पत्र से संबंधित सभी दस्तावेजी कार्यवाही, नोटरी और पंजीकरण शुल्क का भुगतान समिति द्वारा किया गया, जिससे जोड़ों पर कोई अतिरिक्त आर्थिक बोझ नहीं पड़ा। बिजयनगर नगर पालिका के प्रोग्रामर जयकिशन सोनी ने इस कार्य में मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने समिति और संबंधित अधिकारियों के बीच बेहतरीन सामंजस्य स्थापित कर ई-मित्र के सहयोग से इस पहल को संभव बनाया। लक्ष्य ई-मित्र के संचालक लोकेश पवार ने भी इस नेक कार्य में अपनी सेवाएं पूरी तरह नि:शुल्क प्रदान की।

रेगर समाज के प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन में 13 जोड़े दाम्पत्य बंधन में बंधे।

अलवर मं सर्व समाज विवाह

समारोह सम्पन्न : गौशाला स्टेशन रोड अलवर पर आयोजित सर्वसमाज विवाह उत्सव कार्यक्रम में आज पूर्व सांसद ओर केंद्रीय मंत्री भंवर जितेंद्र सिंह, विपक्ष के नेता टीकाराम जूली, ट्रस्ट के ट्रस्टी सतीश भाटिया, गौशाला अलवर के प्रमुख गौ सेवक अजय अग्रवाल, अश्वनी अग्रवाल, मनोज विजय, लक्ष्मण ज्वाली, पवन गोयल, विनोद खंडेलवाल, सचिव गौशाला राकेश जैन, संजय निमुचनिया, प्रमोद अग्रवाल, किशोर सैनी, नागेंद्र, राजेंद्र सैनी, के के खंडेलवाल सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। गौशाला स्टेशन रोड पर आयोजित इस कार्यक्रम में 12 जोड़ों का विवाह हिन्दू रीति से सम्पन्न हुआ। सभी नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देकर विदा किया गया। विवाह उत्सव में फेरे गायत्री परिवार द्वारा वैदिक रीति से पूर्ण कराया गए। सतीश भाटिया और गौशाला के मुख्य गौसेवक अजय अग्रवाल ने सबका आभार जताया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 3 नवम्बर, 2025

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र दिन 3:06 तक, हर्षण योग सायं 6:39 तक, कौलव करण दिन 3:37 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग दिन 7:32 से सायं 3:06 से आरम्भ होगा। आज सोम प्रदोष व्रत, राधा वल्लभ पाटोत्सव, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:06 तक, शुभ 9:26 से 10:48 तक, चर 11:33 से 2:55 तक, लाभ-अमृत 2:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:42, सूर्यास्त 5:39 तक

मेष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कन्या

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक यात्र संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

लिवोसेट्रीजीन डाईहाईड्रोक्लोराईड (विनसेट-एल) टेबलेट के स्टॉक पर रोक लगाई

निर्माता कम्पनी का परिसर सील, जल्द न्यायालय में वाद दायर किया जाएगा दवा में सक्रिय घटक पाया गया शून्य

जयपुर। औषधि गुणवत्ता को लेकर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग लगातार सख्त कदम उठा रहा है। चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशन में लगातार प्रदेश में दवा निर्माताओं एवं विक्रेताओं के यहां निरीक्षण कर नमूने लिए जा रहे हैं एवं कमियां पाई जाने पर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है। इसी कडी में प्रदेश में 24 फर्मों का निरीक्षण कर करते हुए लिवोसेट्रीजीन डाईहाईड्रोक्लोराईड (विनसेट-एल) टेबलेट के स्टॉक पर रोक लगाई गई है एवं करीब 20 लाख रूपए की दवाएं जब्त की गई हैं।

24 फर्मों का निरीक्षण कर लिवोसेट्रीजीन डाईहाईड्रोक्लोराईड (विनसेट-एल) टेबलेट के स्टॉक पर रोक लगाई।

- करीब 20 लाख रूपए की दवाएं जब्त

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड ने बताया कि विगत दिनों देशभर में विभिन्न दवाओं की गुणवत्ता को लेकर सामने आई स्थिति के बाद प्रदेश में औषधि नियंत्रण आयुक्तालय द्वारा दवा निर्माताओं एवं विक्रेता फर्मों का निरीक्षण किया जा रहा है। दवाओं के नमूने लेकर क्वालिटी जांच की जा रही है एवं किसी भी तरह की शिकायत सामने आने पर सख्त कार्रवाई की जा रही है। आयुक्त डॉ. टी शुभमंगला ने बताया कि विगत दिनों मुखबिर से गोपनीय सूचना मिली थी, जिसके के आधार पर औषधि नियंत्रण अधिकारी, धौलपुर द्वारा वाईएल फार्मा,बद्दी, हिमाचल प्रदेश द्वारा निर्मित लिवोसिट्रीजिन डाईहाईड्रोक्लोराईड(विनसेट-एल) टेबलेट के बैच संख्या वाईएलटी-25023 का नमूना लिया गया। राजकीय विश्लेषक औषधि परीक्षण प्रयोगशाला, जयपुर की जांच में यह दवा नकली श्रेणी की पाई गई। इसमें सक्रिय घटक शून्य पाया गया। इस पर औषधि नियंत्रक डॉ. अजय फाटक को प्रभावी कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए गए थे। औषधि नियंत्रक ने राज्य में अलर्ट नोटिस जारी करते हुये विभिन्न जिलों के सहायक औषधि नियंत्रकों के माध्यम से सम्पूर्ण राज्य में विभिन्न 24 फर्मों के निरीक्षण किये गए और उक्त औषधि के बैच पर रोक लगाते हुये शेष बचे स्टॉक को जब्त किया गया।

डॉ. शुभमंगला ने बताया कि वाईएल फार्मा द्वारा निर्मित अन्य औषधियों के अभी तक 44 नमूने व अन्य संदिग्ध निर्माताओं की औषधियों के 9 नमूने लिए गए हैं। साथ ही, करीब 20 लाख रूपए के शेष स्टॉक के विक्रय पर रोक लगा दी गई है। अलर्ट नोटिस जारी होने के उपरान्त कुछ औषधि विक्रेताओं द्वारा नकली औषधि को खुर्द-बुर्द करने का प्रयास किया गया, परन्तु आयुक्तालय के अधिकारियों की सजगता से ऐसे औषधि विक्रताओं को चिन्हित कर औषधि बरामद कर ली गयी।

8 प्रकरणों में 13 कार्मिकों के विरुद्ध की कार्यवाही

जयपुर। राजकीय कार्यों में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन सुनिश्चित करते हुए राज्य सरकार भ्रष्ट, लापरवाह और अनुशासनहीन कार्मिकों के विरुद्ध निरंतर सख्त कार्रवाई कर रही है। इसी कडी में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य सेवा के अधिकारियों के विरूद्ध 8 प्रकरणों का निस्तारण करते हुए 13 कार्मिकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की हैं। मुख्यमंत्री ने भ्रष्टाचार निवारण (संशोधन) अधिनियम 2018 की धारा 17-ए के अन्तर्गत जल जीवन मिशन की निविदाओं में गडबडी के 1 प्रकरण में 3 अभियंताओं के विरूद्ध विस्तृत जांच एवं अनुसंधान करने का पूर्वानुमोदन किया है। साथ ही, सेवारत अधिकारियों के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही के 2 प्रकरणों में वार्षिक वेतन वृद्धियां रोकने के दण्ड से दण्डित भी किया गया है।

गंभीर घायल व सेवानिवृत्त जांबाजों की समस्याओं का करें तत्काल समाधान

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश के सभी जिला कलेक्टर्स को निर्देश दिए हैं कि सुरक्षा सेवाओं के दौरान घायल तथा उसके उपरांत सेवानिवृत्त हो चुके वीर सैनिकों की समस्याओं की प्राथमिकता से समीक्षा कर उनका त्वरित समाधान सुनिश्चित करें।

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जिला कलेक्टर्स को दिए निर्देश

मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्र एवं समाज की सुरक्षा में अपना जीवन समर्पित करने वाले ये वीर हमारे गौरव हैं, इनके सम्मान और पुनर्वास के कार्यों में किसी भी स्तर पर विलंब नहीं होना चाहिए।शर्मा ने आतंकवाद निरोधी कार्रवाई में घायल और सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे जांबाजों की समस्याओं के समाधान को विशेष प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसे सभी मामलों में जिला प्रशासन सक्रिय भूमिका निभाएं और पात्र वीर सैनिकों, शहीद परिवारों और युद्ध में दिव्यांग हुए सैनिकों को सरकारी योजनाओं, पेंशन एवं अन्य प्रावधानों का पूर्ण लाभ मिलना सुनिश्चित करें।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिए कि औपचारिकताओं एवं प्रक्रियागत बाधाओं के कारण किसी भी स्तर पर जांबाज वीर सैनिकों को सहायता मिलने में विलंब नहीं होना चाहिए। जिला कलेक्टर अपने-अपने क्षेत्रों में ऐसे सभी प्रकरणों की व्यक्तिगत मॉनिटरिंग करें और जरूरत पड़ने पर विशेष शिविर आयोजित कर जाबांज सैनिकों की समस्याओं का निस्तारण करें। उन्होंने निर्देश दिए कि सुरक्षा बलों, सेना, अद्धसैनिक बलों और पुलिस में सेवा दे चुके उन जांबाजों की सूची भी तैयार की जाए, जो अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए गंभीर रूप से घायल हुए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार वीर सैनिकों एवं सुरक्षा बलों के जवानों के सम्मान और हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने आमजन से वीर सैनिकों के मान-सम्मान और सहयोग में आगे आने की अपील की।

राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने पर मनाया जाएगा राष्ट्रव्यापी उत्सव : सैनी

जयपुर। केंद्र सरकार ने राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में देशभर में भव्य उत्सवों के आयोजन की घोषणा की है। स्वतंत्रता संठााम में इस गीत की ऐतिहासिक भूमिका को ध्यान में रखते हुए देश एवं प्रदेश स्तर पर व्यापक जनभागीदारी वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

- '7 नवंबर को एसएमएस स्टेडियम में होगा प्रदेश स्तरीय आयोजन, 50 हजार आमजन एक साथ गाएंगे वंदे मातरम्'
- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के निर्देशानुसार नियुक्त हुई प्रदेश टोली, भूपेंद्र सैनी को बनाया प्रदेश संयोजक

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड के निर्देशानुसार कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु भाजपा प्रदेश महामंत्री जितेंद्र गोठवाल ने प्रदेश स्तरीय एवं संभाग स्तरीय टोलियों का गठन किया है। भाजपा प्रदेश मंत्री भूपेंद्र सैनी को वंदे मातरम् 150वां वर्ष कार्यक्रम का प्रदेश संयोजक नियुक्त किया गया है, जबकि युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश मंत्री प्रेम सिंह बनवासा एवं प्रीति शर्मा को प्रदेश सह-संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। सैनी ने बताया कि संभाग स्तरीय टोली में जयपुर संभाग रघुनाथ नरेडी, भरतपुर संभाग भानू प्रताप सिंह,

जोधपुर संभाग महेंद्र बोहरा, अजमेर संभाग अजीत मेहता, बीकानेर संभाग महावीर रांका और उदयपुर संभाग में कमलेश पुरोहित को संयोजक बनाया है।

प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सैनी ने बताया कि राज्यभर में देशभक्ति, स्वदेशी भावना एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से संगठन और सरकारी स्तर पर वृहद आयोजन किए जाएंगे। 7 नवंबर को एस.एम.एस. स्टेडियम, जयपुर में भव्य प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसमें लगभग 50,000 से अधिक आमजन एक साथ वंदे मातरम् का सामूहिक गायन करेंगे। कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर प्रदेश स्तरीय टोली ने प्रदेश संयोजक भूपेंद्र सैनी के नेतृत्व में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से भेंट की और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर आवश्यक सहयोग का आश्वासन देते हुए कार्यक्रम को जनभागीदारी से जोड़ने का आ ान किया।

सैनी ने बताया कि भाजपा प्रदेश कार्यालय में रविवार को एक बैठक आयोजित की गई, इसमें कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की गई और सभी स्तरों पर समन्वय बनाए रखने पर चर्चा की गई। अभियान के तहत संभाग, जिला, नगरीय निकाय, पंचायत राज संस्थान, स्कूल, कॉलेज, छात्रावास, अस्पताल एवं पुलिस थानों सहित राज्यभर में कार्यक्रम किए जाएंगे। वहीं संगठन स्तर पर 150 स्थानों पर 150 कार्यकर्ताओं द्वारा सामूहिक वंदे मातरम् गायन किया जाएगा। सांसदों की उपस्थिति में प्रत्येक जिले के एक कॉलेज में विशेष कार्यक्रम आयोजित होंगे। इसके अतिरिक्त वंदे मातरम् आधारित प्रदर्शनी, सोशल मीडिया जनजागरण अभियान एवं राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला भी आयोजित की जाएगी।

अनुकम्पा नियुक्ति के 10 प्रकरणों में दी शिथिलता

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राजकीय कार्मिक की मृत्यु के उपरांत आश्रित द्वारा अनुकम्पा नियुक्ति के विभिन्न 10 प्रकरणों में शिथिलता प्रदान की है। शर्मा के इस संवेदनशील निर्णय से मृतक आश्रित परिवारों को संबल मिल सकेगा।

मुख्यमंत्री ने आवेदन में विलम्ब के 6 प्रकरणों में शिथिलता देते हुए मृतक राजकीय कर्मचारियों के आश्रितों को सरकारी नौकरी देने का अनुमोदन किया है।

सचिवालय में अकाउंटेंट के पद पर कार्यरत व्यक्ति ने लगाया फंदा

जयपुर। करणी विहार थाना इलाके में सचिवालय में अकाउंटेंट के पद पर कार्यरत एक व्यक्ति ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कांवटिया अस्पताल की मोर्चरी में भिजवाया। पुलिस जांच में सामने आया कि मृतक ने आत्महत्या से पहले पहले तीन पेज का सुसाइड नोट लिखा। इस सुसाइड नोट की फोटो खींचकर समाज के वॉट्सऐप ठ्रुप पर भेजा। इस सुसाइड नोट में पारिवारिक कलह और ससुरालवालों से परेशान होने की बात लिखी है। सुसाइड नोट के आधार पर मामले की जांच की जा रही है।

जांच अधिकारी एसआई कालूराम ने बताया कि करणी विहार के रजनी विहार निवासी घीसालाल शर्मा (56) ने आत्महत्या की है। जो सचिवालय में अकाउंटेंट के पद पर कार्यरत थे। जिन्होंने शनिवार-रविवार की मध्यरात्रि को फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस की जांच पडताल में सामने आया कि मृतक घीसालाल शर्मा ने फंदा लगाने से पहले तीन पेज का सुसाइड नोट लिखा। इस सुसाइड नोट की फोटो खींचकर समाज के वॉट्सऐप ठ्रुप पर भेज दी थी। वॉट्सऐप ठ्रुप पर सुसाइड नोट की फोटोज के साथ ही सुसाइड करने का मैसेज भी लिखा था। सुसाइड करने का मैसेज पढकर रिश्तेदार-परिजन रविवार सुबह उनके घर पहुंचे।

'कांग्रेस शासनकाल में हुई सिर्फ हवाबाजी, भजनलाल सरकार कर रही धरातल पर काम'

जयपुर। डेयरी एवं पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि पूर्ववर्ती कांग्रस सरकार ने पशुपालकों को वास्तविक लाभ पहुंचाने की बजाय सिर्फ चुनावी घोषणाएं की। जबकि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में भाजपा सरकार पशुपालकों के हित में धरातल पर कार्य किया है। कुमावत ने नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता टीकाराम जूली द्वारा लगाए गए आरोपो का जवाब देते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार ने अपने कार्यकाल के आखिरी दिनों में चुनावी लाभ लेने के लिए महंगाई राहत कैंपों का आयोजन किया था। - इन कैंपों में लगभग 1.10 करोड़ पशुपालकों के लगभग 1.98 लाख पशुओं का पंजीकरण की घोषणा की गई - , मगर जब योजना की शुरूआत की गई तो मात्र 687 पशुपालकों के 1 हजार 64 पशुओं का ही बीमा किया गया। श्री कुमावत ने कहा कि इसके पश्चात योजना पर कोई कार्य नहीं हुआ और उसे ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। इन बीमित पशुओं में से 21 मृत पशुओं की कुल दावा राशि 7 लाख 3 हजार रुपये का पशुपालकों को भुगतान किया गया। उन्होंने कहा कि इन दावों का निस्तारण भी वर्तमान भाजपा सरकार के कार्यकाल में ही हुआ है। इससे साफ जाहिर होता है कि पूर्व कांठोस सरकार की मंशा पशुपालकों के कल्याण की बजाय कागजी खानापूर्ति के माध्यम से राजनीतिक लाभ लेना था।

पशुपालन मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में वर्तमान सरकार ने पशुपालकों को लाभ पहुंचाने के लिए धरातल पर ठोस कार्य किया है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के राज्य बजट में मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के अंतर्गत 21 लाख पशुओं का नि:शुल्क बीमा किए जाने की घोषणा की गई। उन्होंने कहा कि योजना में दुधारू पशुओं के अलावा भेड, बकरी एवं ऊंट का भी नि:शुल्क बीमा करने का निर्णय लिया गया है, जबकि पूर्व कांठोस शासन में गाय और भैंस का ही बीमा किया जाता था।

पशुपालन मंत्री कुमावत ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में 5 लाख 52 हजार 892 पशुपालकों के 10 लाख 60 हजार 520 पशुओं का नि:शुल्क बीमा अब तक किया जा चुका है, जो कि देश के किसी भी राज्य में सर्वाधिक पशुओं का नि:शुल्क बीमा है।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने मृत पशुओं के मुआवजे हेतु प्राप्त 16 हजार 260 दावों में से 6 हजार 365 दावों का निस्तारण कर दिया है। शेष दावों के भुगतान की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। अब तक पशुपालकों को भुगतान हेतु 9.61 करोड़ रुपये की राशि का अनुमोदन किया जा चुका है। साथ ही, वित्तीय वर्ष 2025-26 में योजना का दायरा दुगना करते हुए 21 लाख पशुओं का नि:शुल्क बीमा किया जाना प्रस्तावित है। जोराराम कुमावत ने कहा कि उपरोक्त तथ्यों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कांठोस नेता भ्रामक बयानबाजी कर प्रदेश की जनता को बरगलाने का असफल प्रयास कर रहे हैं, मगर जनता उनके झूठ को पहचान चुकी है।

दुग्ध उत्पादन व पशु आहार का वार्षिक टर्नओवर 10,000 करोड़ रु. पहुंचा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य किसानों की आय बढ़ाने और ठ्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री शर्मा की डेयरी क्षेत्र को दी गई विशेष प्राथमिकताओं एवं प्रोत्साहनकारी नीतियों का परिणाम है कि प्रदेश में दुग्ध उत्पादन एवं पशु आहार का वार्षिक टर्नओवर 8,000 करोड़ रुपये से बढ़कर 10,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष तक पहुँच गया है।

दुग्ध उत्पादन एवं प्रोसेसिंग क्षमता में वृद्धि राज्य के डेयरी सेक्टर को राष्ट्रीय स्तर पर अठाणी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस उल्लेखनीय प्रगति के फलस्वरूप डेयरी क्षेत्र में वार्षिक मुनाफे में 46 प्रतिशत की ऐतिहासिक बढ़ोतरी दर्ज की गई है। यह बढ़ोतरी पिछले 47 वर्षों के इतिहास में सर्वाधिक है। इसके साथ ही, राज्य की 24 दुग्ध संघों में से पहले घाटे में चल रहे 15 संघ अब लाभ की स्थिति में आ चुके हैं। यह ठ्रामीण अर्थव्यवस्था और दुग्ध उत्पादक किसानों के विश्वास और योगदान का परिणाम है।

- प्रसंस्करण क्षमता बढ़कर हुई 52 लाख लीटर प्रतिदिन

राज्य की डेयरी प्रसंस्करण क्षमता भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। पिछले वर्ष 48 लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता को बढ़ाकर अब 52 लाख लीटर प्रतिदिन कर दिया गया है। वित्तीय वर्ष के अंत तक इसे 65 लाख लीटर प्रतिदिन तक पहुँचाने का लक्ष्य है। यह विस्तार राज्य में दुग्ध उत्पादन, संठाहण एवं वितरण प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

डेयरी सहकारिता को मज़बूत करते हुए पिछले एक वर्ष में 1,000 नई डेयरी सहकारी समितियों का गठन किया गया है, 2,000 संकलन केंद्र स्थापित किए गए हैं तथा 1 लाख से अधिक दुग्ध उत्पादक किसानों को सहकारी नेटवर्क से जोड़ा गया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं तथा दूध उत्पादक किसानों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।

पर्यावरण संरक्षण एवं ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए ग्रामीण किसानों के घरों पर 10 हजार फ्लोटैक्सी बायो-गैस प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं, जिसमें से लगभग 2 हजार 500 फ्लोटैक्सी बायो-गैस प्लांट लगाए जा चुके हैं। इससे न केवल स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध होगी, बल्कि पशुपालकों की लागत में भी कमी आएगी।मुख्यमंत्री शर्मा की मंशा के अनुरूप डेयरी क्षेत्र में नवाचार, तकनीकी विकास, किसान हितैषी योजनाओं एवं सहकारिता की भावना के साथ राजस्थान को दुग्ध उत्पादन के राष्ट्रीय केंद्र के रूप में स्थापित हो रहा है।

तुलसी शालिग्राम विवाह आयोजित

जयपुर। श्री गोविंद धाम की कृपा से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन 30 अक्टूबर से गोपालपुरा बसंत विहार सिंधी कॉलोनी में हो रहा है व्यास पीठ पर कथा वाचक डॉ प्रशांत शर्मा संगीतमय वाणी से भक्तों को कथा श्रवण करवा रहे हैं कथा के प्रसंग में आज देवउठनी एकादशी के उपलक्ष में नंदोत्सव और तुलसी शालिठ्राम विवाह उत्सव मनाया गया। शालिग्राम और तुलसी की पूजा अर्चना कर भगवान शालिग्राम को तुलसी की परिक्रमा करवा कर विधिवत फेरे करवाए गए। देवउठनी एकादशी पर उदियात तिथि के अनुसार छोटी काशी के घर-मंदिरों में तुलसी जी और शालिग्रामजी का विवाह संपन्न करवाया गया । जो दंपत्ति कन्या-दान का अवसर नहीं पा सके। वे तुलसी का कन्यादान करके अत्यंत पुण्य अर्जित कर सकते हैं । एकादशी को दीपदान करने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में देवोत्थान एकादशी का व्रत हजार अश्वमेध यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर बताया गया है।

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 7 व 8 नवम्बर को

जयपुर। मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के संयुक्त तत्वावधान में सशक्तीकरण क्षमताएँ - दिव्यांगजनों के अधिकारों को आगे बढ़ाना विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आगामी 7 व 8 नवम्बर, 2025 को एक्स-ऑडिटोरियम, सेंट जेवियर्स कॉलेज परिसर जयपुर में आयोजित किया जा रहा है। जिसके पोस्टर का विमोचन जयपुर सांसद श्रीमती मंजू शर्मा द्वारा किया गया, जिन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह आयोजन दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और अधिकारों की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम है। यह सम्मेलन दिव्यांगजनों के अधिकारों, समावेशी नीतियों और सशक्तिकरण के नवीन आयामों पर केंद्रित रहेगा।

ट्रस्ट सदस्य, मीडिया प्रभारी एवं स्वास्थ्य कल्याण होमियोपैथिक कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ आचार्य, प्रो.डॉ. राजीव सक्सेना ने बताया इसमें देशभर से लगभग 250 प्रतिभागी भाग लेंगें जिसमें विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा दिव्यांगजनों के अधिकारों, पुनर्वास, सामाजिक सशक्तिकरण, सीएसआर सहयोग और नीति निर्माण पर अपने विचार एवं अनुभव साझा करेंगें।

जवाहर कला केन्द्र में म्यूज़िकल सिम्फनी कार्यक्रम का आगाज

अलीना ने सजाया गज़ल का गुलदस्ता, अश्विन श्रीनिवासन और ओजस अढ़िया की जुगलबंदी ने मन मोहा

जयपुर। जवाहर कला केंद्र, जयपुर की ओर से आयोजित 'म्यूज़िकल सिम्फनी' कार्यक्रम की रविवार को सुमधुर शुरुआत हुई। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम के पहले दिन सुरों, ग़ज़लों और शास्त्रीय संगीत की जुगलबंदी ने शाम को खास बना दिया। इस दौरान

- आज समंदर खान मांगणियार व समूह के कलाकारों की गायन प्रस्तुति

जवाहर कला केंद्र, की ओर से आयोजित 'म्यूज़िकल सिम्फनी' कार्यक्रम की रविवार को शुरुआत हुई।

जयपुर कलेक्टर जितेन्द्र सोनी, केन्द्र की अतिरिक्त महानिदेशक सुश्री प्रियंका राठौड व बडी संख्या में कलाकार मौजूद रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत गायिका अलीना भारती ने ओल्ड मेलोडी गीतों से की। उन्होंने मेरी आवाज़ ही मेरी पहचान है गीत से माहौल में सुरीले रंग घोले। इसके बाद तू जहाँ जहाँ रहेगा मेरा साया साथ होगा, पिया तोसे नैना लागे रे और दिल चीज़ क्या है आप मेरी जान लीजिए जैसी लोकप्रिय रचनाओं ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने रंजिश ही सही और आज जाने की ज़िद न करो जैसी ग़ज़लों से सुरमयी माहौल को भावनाओं से भर दिया। तबले पर मोहित चौहान, गिटार पर नदीम अली, की-बोर्ड पर ईशान खान, हारमोनियम पर शेर खान ने संगत की।इसके बाद जुगलबंदी की वो मनमोहक प्रस्तुति हुयी जिसके लिए बड़े जज्बा से श्रोता इंतजार कर रहे थे। बांसुरी वादक अश्विन श्रीनिवासन और तबला वादक ओजस अढ़िया की जबरदस्त जुगलबंदी ने महफिल में जान भर दी। उन्होंने सबसे पहले राग पूरियाधनश्री को अपनी प्रस्तुति का आधार बनाया। विलंबित एक ताल में बड़ा ख्याल की प्रस्तुति दी गयी। इसके बाद मध्यलय तीन ताल में बंदिश पायलिया की झंकार से श्रोताओं के मन में सुरीली झंकार उठी। द्रुत तीन ताल में छोटा ख्याल की अश्विन श्रीनिवासन की बंदिश चैन ना आवे के साथ महफिल आगे बढ़ी। राग भूपाली की बंदिश प्रभु मोरी अरज सुनों की प्रस्तुति ने माहौल को आध्यात्मिक बना दिया।

गौरतलब है कि अश्विन श्रीनिवासन ऑल इंडिया रेडियो के ए-ठोड कलाकार, सुर-मणि पुरस्कार से सम्मानित और ए.आर. रहमान के बैंड के प्रमुख सदस्य हैं। वहीं देश के सुप्रसिद्ध तबला वादक ओजस अढ़िया, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ाँ युवा पुरस्कार से सम्मानित हैं और उनका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भारत के सबसे युवा तबला वादक के रूप में दर्ज है। वहीं अलीना भारती 'सुपर सिंगर प्लस राजस्थान' की विजेता और 'सा रे गा मा पा' की टॉप 30 फाइनलिस्ट रहीं है।

कांस्टेबल ने दहेज में आए ग्यारह लाख रुपये लौटाए

जयपुर। जयपुर पुलिस कमिश्नरेट में तैनात कांस्टेबल जतन सिंह ने अपनी शादी में एक मिसाल पेश की है। उन्होंने दहेज में आए 11 लाख रुपये लौटा दिए। कांस्टेबल जतन सिंह जयपुर की ब्रह्मपुरी थाने में तैनात है। कांस्टेबल जतन सिंह ने कहा कि समाज से दहेज प्रथा हटानी चाहिए। उन्होंने समाज में एक अच्छा संदेश दिया। वह चूरू के रहने वाले हैं और उनकी बारात झुनझुनू के बिजौली गाँव में पहुँची है। उनकी शादी पूनम कंवर से हुई है। कांस्टेबल जतन सिंह के पिता महावीर सिंह सामान्य परिवार से हैं और उन्होंने भी अपने बेटे के निर्णय पर गर्व महसूस किया।

कांस्टेबल जतन सिंह ने बताया कि वह पुलिस में हैं और दहेज के मामले उनके सामने आते रहते हैं। किस प्रकार से दहेज लोभी बेटियों को प्रताडित करते हैं। गरीब माता-पिता से लोभी मोटी रकम ली जाती है। पुलिस भर्ती होने के बाद से ही उन्होंने सोचा था कि जब वह शादी करेंगे तो बिल्कुल भी दहेज नहीं लेंगे।

जब उनकी शादी तय हुई थी तो उन्होंने तब भी दहेज के लिए मना किया था, लेकिन जब वह आज बारात लेकर पहुँचे तो बेटी के माता-पिता और परिवार की तरफ से उनको लाख और कुछ जवाहरात दिए गए, लेकिन जतन सिंह ने लेने से इनकार कर दिया।

डायलिसिस सेंटर व कैंसर स्क्रीनिंग मोबाइल वैन शुरू

जयपुर/नागौर। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की पहल एवं चिकित्सा मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशन में प्रदेश में कैंसर स्क्रीनिंग सुविधाओं को निचले स्तर तक मजबूत बनाया जा रहा है, ताकि समय पर लक्षणों की पहचान कर आमजन का जीवन बचाया जा सके।

- गांव-ढाणी तक बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचाना सरकार की प्राथमिकता : चिकित्सा मंत्री

इसी कड़ी में अब नागौर जिले के गांव-ढाणियों में आमजन को घर के नजदीक ही स्वास्थ्य जांच की सुविधा उपलब्ध होगी। इस जांच में विशेष रूप से कैंसर की स्क्रीनिंग की जाएगी, जिसके लिए विशेषज्ञ चिकित्सक अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। ठ्रामीण क्षेत्रों में कैंसर जांच की सुविधा सुलभ कराने के उद्देश्य से कैंसर स्क्रीनिंग मोबाइल वैन का संचालन शुरू किया गया है। रविवार को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर ने हरी झंडी दिखाकर इस मोबाइल वैन को रवाना किया।

इस अवसर पर चिकित्सा मंत्री ने खींवसर के राजकीय जिला अस्पताल में डायलिसिस सेंटर का विधिवत उद्घाटन भी किया। डायलिसिस सेंटर के प्रारंभ होने से अब इस क्षेत्र के किडनी रोगियों को बड़ी राहत मिलेगी। यहां रोगियों के उपचार हेतु दो डायलिसिस मशीनों की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। चिकित्सा मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य है कि ग्रामीण अंचलों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचें। पहले लोगों को बड़ी एवं गंभीर बीमारियों की जांच और उपचार के लिए दूर-दराज के शहरों में जाना पड़ता था, लेकिन अब सरकार ऐसी सुविधाएं गांव-ढाणी तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। चिकित्सा मंत्री ने खींवसर ने कहा कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का समय पर पता लगना ही उपचार का पहला कदम है और इस दिशा में यह मोबाइल वैन ग्रामीण स्वास्थ्य क्रांति का माध्यम बनेगी।

मंत्री खींवसर ने कैंसर स्क्रीनिंग मोबाइल वैन का शुभारंभ किया।

इंडोनेशिया सरकार ने भारत से मूंगफली के आयात पर अस्थाई प्रतिबंध लगाया

इंडोनेशिया की क्वारिन्टाइन अथॉरिटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत से भेजी जा रही मूंगफली में एफ्लाटॉक्सिन की मात्रा तय मानकों से अधिक पाई गई है

बीकानेर, (निसं)। मूंगफली की राजधानी कहे जाने वाले बीकानेर के किसानों और व्यापारियों को बड़ा झटका लगा है। इंडोनेशिया सरकार ने भारत से मूंगफली के आयात पर अस्थाई प्रतिबंध लगा दिया है। यह आदेश 27 अगस्त 2025 को जारी किया गया था और 3 सितंबर से प्रभावी हो गया। अब इस फैसले का सीधा असर बीकानेर की मूंगफली मंडियों पर दिखना शुरू हो गया है, जहां मूंगफली की आवक तो हो रही है, लेकिन भावों में गिरावट का डर मंडराने लगा है।

- **भारत से इंडोनेशिया को हर साल करीब 2.25 लाख टन मूंगफली जाती है, जिसका बड़ा हिस्सा राजस्थान, खासकर बीकानेर जिले से निर्यात होता है**
- **वर्तमान में बीकानेर की प्रमुख अनाज मंडियों में मूंगफली 4500 से 6500 प्रति क्विंटल तक बिक रही है**
- **इंडोनेशिया की इस रोक के बाद व्यापारियों को डर है कि निर्यात ठप पड़ने से भाव में 10-15 प्रतिशत गिरावट आ सकती है**

इंडोनेशिया की क्वारिन्टाइन अथॉरिटी (आईक्यूए) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत से भेजी जा रही मूंगफली में एफ्लाटॉक्सिन की मात्रा तय मानकों से अधिक पाई गई। इसी के चलते इंडोनेशिया ने मूंगफली के आयात पर अस्थाई रोक लगाते हुए कहा है कि आगामी शिपमेंट्स की दोबारा जांच और सैंपलिंग की जाएगी। भारत से इंडोनेशिया को हर साल करीब 2.25 लाख टन मूंगफली जाती है, जिसका बड़ा हिस्सा राजस्थान, खासकर बीकानेर जिले से निर्यात होता है। यह वही मूंगफली है जो अपने मीठे स्वाद और बड़े दाने के लिए विदेशी बाजारों में लोकप्रिय है। बीकानेर में इस वर्ष 2.90 लाख हेक्टेयर में मूंगफली की बुआई की गई है।

कृषि विभाग के मुताबिक, 8.70 लाख मीट्रिक टन उत्पादन का अनुमान है। वर्तमान में बीकानेर की प्रमुख अनाज मंडियों में मूंगफली 4500 से 6500 प्रति क्विंटल तक बिक रही है, लेकिन इंडोनेशिया की इस रोक के बाद व्यापारियों को डर है कि निर्यात ठप पड़ने से भाव में 10-15 प्रतिशत गिरावट आ सकती है। अगर आने वाले महीनों में भारत ने भंडारण और क्वालिटी जांच प्रणाली को सख्त नहीं किया, तो आने वाले सीजन में वियतनाम और चीन जैसे बाजार भी दूरी बना सकते हैं। सरकार और निर्यात एजेंसियों को चाहिए कि वे किसानों को एफ्लाटॉक्सिन नियंत्रण की तकनीक सिखाएं, जैसे खेतों में जलभराव से बचाव, कटाई के तुरंत बाद सुखाई और वैज्ञानिक गोदामों में भंडारण। एफ्लाटॉक्सिन एक विषैला यौगिक है जो मूंगफली में नमी और गलत भंडारण के कारण बनता है। यह फफूंद से उत्पन्न होता है। यह लीवर कैंसर, पाचन विकार और इम्यून सिस्टम कमजोर करने के लिए जिम्मेदार माना जाता है। बीकानेर की मंडियों में इन दिनों मूंगफली की आवक जोर पर है, लेकिन इंडोनेशिया के फैसले के बाद खरीदारों की सक्रियता घट गई है।

व्यापारी बताते हैं कि पिछले साल जहां मूंगफली का एक बड़ा हिस्सा सीधे निर्यात के लिए खरीदा जाता था, इस बार वह स्टॉक स्थानीय मिलों तक सीमित रह गया है। निर्यात ठप होने से मूंगफली तेल उद्योग और कृषि बाजार दोनों पर असर पड़ने की आशंका है।

विशेषज्ञों का कहना है कि भारत के मूंगफली निर्यात का लगभग एक-तिहाई हिस्सा इंडोनेशिया को जाता है। अब उसके हटने से न केवल कीमतें गिरेंगी, बल्कि किसानों की भुगतान अवधि भी लंबी हो जाएगी, क्योंकि स्टॉक लंबे समय तक मंडियों में फंसा रह सकता है।

नोखा में एटीएम तोड़कर कैश बॉक्स ले गए बदमाश

देर रात कार में आए थे बदमाश, एटीएम में लाखों की नगदी की आशंका जताई

नोखा, (निसं)। जिले के नोखा कस्बे के पीपली चौक के पास स्थित एक एटीएम को शातिर बदमाशों ने निशाना बनाया। बदमाशों ने एटीएम तोड़कर कैश बॉक्स उड़ा लिया और मौके से फरार हो गए। अभी ये मालूम नहीं हो पाया है कि एटीएम में कितने रुपए थे। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। कई जगह नाकाबंदी की जा रही है।

घटना देर रात भीड़भाड़ वाले इलाके में हुई, जिससे इलाके में सनसनी फैल गई। वारदात को अंजाम देने से पहले बदमाशों ने एटीएम के कैमरों पर स्प्रे कर दिया ताकि उनकी पहचान न हो सके। इसके बावजूद एक बदमाश कैमरे में कैद हो गया।

सूचना मिलते ही नोखा पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। चोरी हुई रकम का आंकलन किया जा रहा है। बैंक के अधिकारियों को भी मौके पर बुलाया गया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, लुटेरे एक कार में सवार होकर आए थे और वारदात को अंजाम देने के बाद फरार हो गए। कार में तीन बदमाश थे, जो एटीएम में घुसे, तोड़फोड़ की और कैश बॉक्स निकालकर ले गए। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू कर दिए हैं और बदमाशों की तलाश में टीमें गठित की जा रही हैं। घटना के बाद से अब तक कुछ भी सुराग नहीं मिला है। नोखा शहर में चोरी की यह कोई पहली घटना नहीं है। हाल ही में शहर के दो मंदिरों में भी चोरी की वारदातें हुई थीं, जिसके बाद अब एटीएम में सेंधमारी से स्थानीय लोगों में चिंता बढ़ गई है।

जहर खाने से एक व्यक्ति की मौत

चिड़ावा, (निसं)। कस्बे में रविवार को एक व्यक्ति की जहर का सेवन करने से मौत हो गई। अलसीसर इलाके के बास हरिपुरा निवासी 45 वर्षीय राकेश कुमार अपने परिवार के साथ कुछ सालों से चिड़ावा कस्बे की मंड्रेला रोड पर कुम्हारों के मोहल्ले में मकान बनाकर रहता था।

शनिवार को ही देर शाम को वह दिल्ली से वापिस अपने घर लौटा था।

- **शनिवार देर शाम को युवक दिल्ली से अपने घर लौटा था**

रविवार को सुबह उसकी पत्नी सुनिता ने एंबुलेंस को फोन किया और उप जिला अस्पताल में अपनी पति को लेकर पहुंची। चिकित्सकों ने जांच के बाद राकेश को मृत घोषित कर दिया। जहर खाने के कारणों का अब तक खुलासा नहीं हो पाया है। इस मामले में मृतक राकेश के पिता दयाचंद ने पुलिस को लिखित रिपोर्ट दी है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। एएसआई कैलाशचंद ने बताया कि रिपोर्ट के आधार पर मामले की जांच की जाएगी। मृतक कुछ दिनों से ही दिल्ली में काम करने लगा था, जो कल शाम को लौटा था और आज सुबह उसने जहर खाया है। मृतक के एक बेटी और बेटा है।

ओवरलोड वाहनों पर कार्रवाई करने की मांग

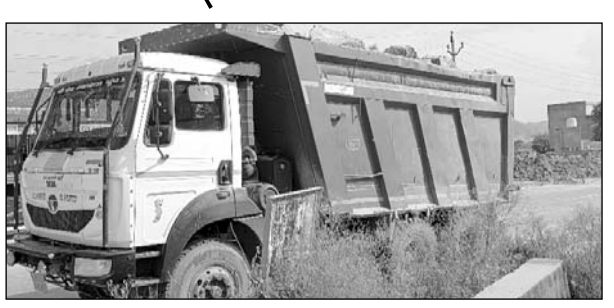

पाटन थाना क्षेत्र में दिनदहाड़े ओवरलोड वाहन गुजरते हैं।

पाटन, (निसं)। क्षेत्र में अवैध व ओवरलोड वाहनों के धड़ल्ले से संचालन पर परिवहन विभाग की निष्क्रियता को लेकर आमजन में रोष व्याप्त है। ग्रामीणों ने विभागीय लापरवाही के खिलाफ परिवहन आयुक्त को ज्ञापन भेज कार्रवाई की मांग की है।

- **ग्रामीणों ने परिवहन आयुक्त को ज्ञापन भेज कार्रवाई करने की मांग की**

ग्रामीणों का कहना है कि पाटन थाना क्षेत्र में दिनदहाड़े ओवरलोड वाहन बेखौफ होकर गुजरते हैं। ग्रामीणों ने बताया अधिकांश वाहन चालकों द्वारा नंबर प्लेट पर ग्रीस लगा दी जाती है, ताकि वाहन की पहचान न हो सके। इस कारण किसी घटना या दुर्घटना की स्थिति में ऐसे वाहन आसानी से पुलिस कार्रवाई से बच निकलते हैं। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि परिवहन विभाग का निरीक्षक वाहन मालिकों से 'सेटिंग' कर मंथली वसूली करता है, जिसके चलते ओवरलोड वाहनों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही। विभाग की इस उदासीनता के कारण क्षेत्र में दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। नीमकाथाना क्षेत्र में रॉयल्टी का टेंडर नहीं होने से बिना टीपी और रवन्ना के सैकड़ों वाहन प्रतिदिन परिवहन कर रहे हैं, जिससे सरकार को राजस्व का भारी नुकसान हो रहा है। मामले पर नीमकाथाना विधायक सुरेश मोदी ने कहा कि, अब इस प्रकरण को मैं स्वयं देखूंगा। विधानसभा में इसकी आवाज उठाकर भ्रष्ट अधिकारियों की जांच करवाकर सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

प्राइवेट बसों में मनमाने संशोधन पर उपमुख्यमंत्री बैरवा सख्त

उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा अजमेर में विवाह समारोह में शामिल पहुंचे।

अजमेर, (निसं)। उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि सरकार यात्रियों की सुरक्षा को लेकर पूरी तरह गंभीर है। प्राइवेट बसों में मनमाने संशोधन पर उन्होंने सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि लोगों की जान की परवाह हमें है, सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होगा। अजमेर के एक होटल में विवाह समारोह में शामिल होने आए उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने मीडिया से कहा कि परिवहन विभाग बसों के खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। बस मालिकों को सुरक्षा मानकों के अनुसार बसों को दुरुस्त कर लेना चाहिए।

- **'लोगों की जान की परवाह हमें है, सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होगा'**
- **बस मालिकों को सुरक्षा मानकों के अनुसार बसों को दुरुस्त कर लेना चाहिए : बैरवा**

उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने बताया कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय रोडवेज की केवल 600 बसें थीं, जबकि वर्तमान में यह संख्या बढ़कर 3200 हो गई है। रोजाना 400 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए ये बसें ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ रही हैं। यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। चुनावी तैयारियों पर बोलते हुए बैरवा ने कहा कि एसआईआर कार्यक्रम से सही मतदाता का नाम सूची में बना रहेगा और फर्जी वोटिंग पर रोक लगेगी। अंता विधानसभा उपचुनाव पर उन्होंने दावा किया कि भाजपा प्रत्याशी की जीत निश्चित है।

भांजी का भात भरने आए मामा का सिर फोड़ा

झुंझुनूं, (निसं)। अपनी भांजी की शादी में भात भरने आए मामा का भांजी के ही चचेरे भाइयों ने सिर फोड़ दिया। शादी का कार्यक्रम देखते ही देखते मारपीट के अखाड़े में बदल गया। जानकारी के अनुसार झुंझुनूं के जीनगर गेस्ट हाउस में छोटी सी बात पर दो पक्ष आमने-सामने हो गए। गेस्ट हाउस में गफ्फार अपनी बहन रहीसा बानो की बेटी की शादी में अपने दामाद मुबारिक व अन्य परिजनों के साथ भात भरने के लिए पहुंचा था। इस दौरान गफ्फार की बहन रहीसा बानो के देवर मुस्तगिन, मुस्तगिन के बेटे शाहिद, मोहसीन, अकील, ननद के बेटे फिरोज और बाबू आदि नकली नोट उछाल रहे थे। गफ्फार ने नकली नोट उछालने के लिए टोक दिया, जिससे तैश में आए इन युवकों ने पहले तो दुल्हन के मामा को ही धक्का मारकर स्टेज के नीचे उतार दिया और बाद में एक साथ सरियों और नुकीले पंच से हमला कर दिया। देखते ही देखते शादी का कार्यक्रम मारपीट के अखाड़े में बदल गया। घायल गफ्फार और उनके दामाद मुबारिक को साथ वाले लोगों ने छुड़वाकर अस्पताल पहुंचाया, जहां पर गफ्फार के सिर पर सात टांके आए हैं। दोनों पक्ष पीपली चौक और इसके साथ लगते इलाके के रहने वाले हैं। इस मामले में कोतवाली में लिखित रिपोर्ट दी है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। जांच कर रहे हैड कांस्टेबल शब्बीर ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर ली गई है। पांच जनों के नामजद सहित अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

पैंथर का शव मिला

मसूदा, (निसं)। थाना क्षेत्र के किराप गांव स्थित माना की घाटी में लगभग दस वर्षीय नर पैंथर का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। ग्रामीणों की सूचना पर ब्यावर वन रेंज अधिकारी ओमप्रकाश मय जाब्ता मौके पर पहुंचे और जांच की। प्रथमदृष्टया पैंथर की मौत बीमारी या उम्र के कारण होना माना गया है, क्योंकि शरीर पर किसी चोट के निशान नहीं मिले। शव का पोस्टमार्टम पशु चिकित्सक डॉ. कुमार विश्वास की टीम ने किया। नायब तहसीलदार रौनक डांगरा, एएसआई इन्द्रसिंह, वन विभाग और चिकित्सकों की मौजूदगी में पैंथर का अंतिम संस्कार किया गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही मृत्यु का वास्तविक कारण स्पष्ट होगा।

पांच लाख का मुआवजा स्वीकृत

भीलवाड़ा, (निसं)। पूर्वांचल जन चेतना समिति चैरिटेबल ट्रस्ट के नेतृत्व में दिनेश साहनी के द्वारा मनोमय टैक्स लिमिटेड जोजारो का खेरा गंगरार मिल में मौजूदा कर्मचारी रामनरेश प्रजापति मजदूर की मृत्यु के उपरांत मुआवजा के लिए रायशुमारी हुई। गौरतलब कि मनोमय टेक लिमिटेड गंगरार मिल में कार्यरत मजदूर अपनी ड्यूटी पर आते वक्त दुर्घटनाग्रस्त हुआ और इलाज के उपरांत उसकी मौत हो गई। पूर्वांचल जन चेतना समिति चैरिटेबल ट्रस्ट के दिनेश साहनी परिवार को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से मिल पहुंचे। मिल प्रबंधन पर दबाव बनाकर 500000 की राशि मृतक की पत्नी आरती प्रजापति को उपलब्ध कराई गई। वहीं तय हुआ कि मृतक के घर आने जाने तथा क्रिया क्रम में आने वाले खर्च को भी कंपनी वहन करेगी और पीएफ ईएसआई के अंतर्गत आने वाली अतिरिक्त राशि कुछ दिनों में उपलब्ध कराई जाएगी।

अवैध हथियार सहित युवक गिरफ्तार

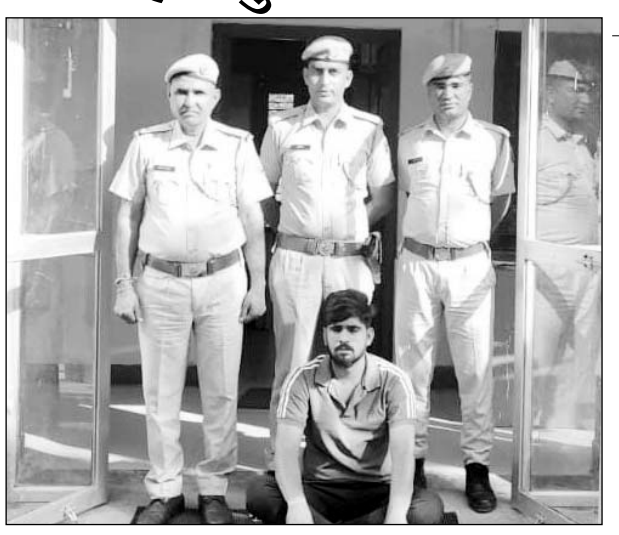

नसीराबाद सदर थाना पुलिस ने युवक को गिरफ्तार किया।

नसीराबाद, (निसं)। पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा के निर्देशन और आईजी अजमेर रेंज राजेंद्र सिंह के आदेशानुसार चल रहे अवैध हथियारों के विरुद्ध विशेष अभियान के तहत नसीराबाद सदर थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया।

शनिवार देर रात पुलिस को सूचना मिली कि रामसर कस्बे में कैटल फार्म के पास एक युवक अवैध हथियार के साथ किसी वारदात की फिराक में है। इस पर थानाधिकारी अशोक बिशु के नेतृत्व में टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी कर युवक को दबोच लिया। पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम अजय सैन उर्फ वासु निवासी साण्ड चौराहा, रामसर बताया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक पिस्टल और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट में मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ कर दी है। पुलिस आरोपी से यह जानकारी जुटा रही है कि हथियार कहां से आया और जाना था। इसका उपयोग किस वारदात में किया

एक ही परिवार के तीन सदस्यों की चिता एक साथ जली

तेज रफ्तार थार कार ने बाइक को टक्कर मार दी थी, हादसे में चार जनों की मौत हो गई थी

अलवर, (निसं)। अलवर में रविवार दोपहर एक ही परिवार के तीन सदस्यों की चिताएं एक साथ जली, जबकि उनके दो साल के मासूम बच्चे को नम आंखों से दफनाया गया। भीषण सड़क हादसे ने इस परिवार को उजाड़ दिया, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। रविवार सुबह जिला अस्पताल में मृतकों का पोस्टमॉर्टम किया गया, जिसके बाद शवों को उनके गांव नांगल खेड़ा भेज दिया गया।

मृतकों के फाइल फोटो।

- **दो साल के मासूम बच्चे के शव को नम आंखों से दफनाया**

जानकारी के अनुसार शनिवार रात एक तेज रफ्तार थार कार ने आगे चल रही बाइक को पीछे से टक्कर मार दी थी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार ने बाइक को करीब 200 मीटर तक घसीटा। हादसे में नांगल खेड़ा निवासी महेंद्र (35), उनकी पत्नी गुड्डी (35), बेटा पूर्वांश (2) और भतीजी पायल (8) की मौत हो गई थी, जबकि उनकी भतीजी खुशबू (4) गंभीर रूप से घायल है और जिला अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच जूझ रही है। महेंद्र की अब 4 बेटियां बची है, जिनका रो-रोकर बुरा हाल है।

महेंद्र की बड़ी बेटी मोनिका ने बताया कि उनके मम्मी-पापा, भाई और बहनें शनिवार दोपहर 12 बजे के आसपास शादी में गए थे, जबकि वह अपनी दो बहनों के साथ स्कूल में पढ़ने गई थी। घर लौटने पर उन्हें अपने मम्मी-पापा नहीं मिले, लेकिन उन्हें पता था कि वे शादी में गए हैं, क्योंकि सुबह घर में इस बारे में बात हो रही थी। फिर शाम को अचानक घर वालों ने बताया कि पापा-मम्मी का एक्सीडेंट हो गया है, जिसमें उनके छोटे भाई की भी मौत हो गई। अब वे बहनों के अलावा और कोई नहीं है। महेंद्र और गुड्डी के परिवार में अब चार बेटियां बची हैं। छोटी खुशी (11), रेनू (14) और 12वीं कक्षा की छात्रा मोनिका (16), हादसे में उनका एक बेटा भी चल बसा।

गुड्डी (मृतका) की बहन सुनीता ने कहा कि हम दोनों बहनों के पास नौ बच्चे थे। उनमें एक लड़का था, वो भी चला गया। अब हमारे पास कुछ नहीं बचा। हमें तो आसपास के लोगों को हादसे का वीडियो दिखाया तो घटना का पता चला। अब हमारा कोई सहारा नहीं रहा। अब किसके सहारा जिऐंगे। गुड्डी की तो अब घर सिर्फ 4 बेटियां ही बची है। ग्रामीणों ने मृतक की बड़ी बेटी को नौकरी दिए जाने की मांग उठाई है। परिवार के सदस्य करण सिंह ने बताया कि इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई, लेकिन प्रशासन और सरकार की तरफ से अभी तक कोई आश्वासन नहीं मिला है। महेंद्र की चार बेटियां अनाथ हो गई हैं और अब उन्हें पालने वाला कोई नहीं है।

महेंद्र का छोटा भाई सुभे सिंह भी इस हादसे में मारा गया और दोनों भाइयों में केवल एक ही लड़का था। करण सिंह ने सरकार और प्रशासन से बच्चियों को सहयोग राशि देने और बड़ी बेटी मोनिका को सरकारी नौकरी देने की मांग की है, जिससे वह अपनी बहनों का भविष्य सुरक्षित कर सके। उन्होंने यह भी बताया कि पुलिस प्रशासन अंतिम संस्कार तक तो रुका, लेकिन किसी तरह के सहयोग का आश्वासन नहीं दिया। वहीं प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली ने रोड सेफ्टी पर सवाल उठाए।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि यह भयानक हादसा है। एक ही परिवार के चार जनों की मौत हो गई। सरकार बार-बार कहती है कि हम ब्लैक प्वाइंट चिह्नित करते हैं, लेकिन वहां पर सफेद पट्टी तक नहीं है। कोई संकेतक नहीं है। आए दिन प्रदेश में बड़े हादसे होते हैं। केवल मीटिंग-मीटिंग खेलने से काम नहीं चलेगा। एक तरफ एक्सीडेंट जीरो करने की बात करते हैं, दूसरी तरफ बड़े-बड़े हादसे हो जाते हैं।

अवैध खनन और वृक्ष कटाई में लिप्त दस वाहन जब्त

अलवर, (निसं)। राजगढ़ वन विभाग ने अवैध खनन और वृक्ष कटाई के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 10 वाहन जब्त किए हैं। इनमें 8 ट्रैक्टर-ट्रॉलियां अवैध खनन सामग्री के साथ पकड़ी गई, जबकि दो वाहन हरे पेड़ों की कटाई और लकड़ी के परिवहन में शामिल थे।

- **8 ट्रैक्टर-ट्रॉलियां अवैध खनन सामग्री के साथ पकड़ी गई**

क्षेत्रीय वन अधिकारी राहुल फौजदार ने बताया कि यह कार्रवाई राजगढ़ रेंज के नाका सदर और रैणी के डोरोली क्षेत्र में की गई। वन विभाग की टीम ने अवैध खनन और परिवहन पर रोक लगाने के लिए सक्रियता दिखाते हुए मौके पर दह ट्रैक्टर-ट्रॉलियां खनन सामग्री सहित पकड़ी। इससे पहले, पत्थरों का अवैध परिवहन करते हुए दो अन्य ट्रॉलियां भी जब्त की गई थी। इसके अतिरिक्त हरे पेड़ों की कटाई और लकड़ी के अवैध परिवहन में लिप्त दो अन्य वाहनों को भी पकड़ा गया। इस पूरी कार्रवाई में वन विभाग की टीम के सदस्य दिलीप सिंह, जसवंत सिंह, जगदीश प्रसाद और हरीश तिवाड़ी मौजूद रहे। वन विभाग ने स्पष्ट किया है कि अवैध खनन और हरियाली को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ उनका अभियान आगे भी जारी रहेगा।

उदयपुर में दूसरे दिन भी घर में घुसा लेपर्ड

बुजुर्ग ने लेपर्ड को कमरे में बंद किया, रेस्क्यू टीम ने चार घंटे बाद ट्रैंकुलाइज किया

उदयपुर, (का.सं.)। उदयपुर के कुराबड इलाके में रविवार को लगातार दूसरे दिन भी लेपर्ड की दहशत रही। सुबह सुबह अचानक खेतों से होता हुआ बस्ती में आया लेपर्ड रिहायशी इलाके में एक घर में जा घुसा। इस दौरान कई लोग मौजूद थे। इसके बाद एक बुजुर्ग ने कमरे को बंद कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। मामला कुराबड क्षेत्र के वसु पंचायत के रूणिचा गांव का है। टीम ने 4 घंटे बाद लेपर्ड को ट्रैंकुलाइज किया गया। बेहोश लेपर्ड को पिंजरे में डालकर टीम उसे उदयपुर ले गई। घटना का एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें लेपर्ड खेतों की ओर से रिहायशी इलाके में घूमता हुआ दिख रहा है।

ग्रामीण केसर सिंह ने बताया कि कल देर रात करीब दो बजे भी लेपर्ड बस्ती में बने बाड़े में आया था और पशुओं पर हमले की कोशिश की लेकिन लोगों के चिल्लाने पर भाग गया। आज सुबह करीब 6.30 बजे लेपर्ड फिर उसी बाड़े में शिकार के लिए आ रहा था। वह सीधी खेतों की तरफ से आया और बाड़े की तरफ लोगों की आवाज सुनकर कच्चे घर की ओर चला गया।

ग्रामीण केसर सिंह ने बताया कि यह कच्चा घर बुजुर्ग भंवरलाल मीणा का था। लेपर्ड कच्चे घर में घुसा और काफी देर तक खाट पर बैठा रहा। इस दौरान भंवरलाल मीणा बाहर ही था। उसने हिम्मत दिखाते हुए कच्चे कमरे के गेट को बंद कर दिया। भंवरलाल कच्चे मकान के पास में ही बने पक्के कमरे में रहता है। इस बस्ती में 24 मकान हैं जिनके घरों के पास में ही बाड़े बने हुए हैं।

इससे पहले शनिवार को भी इस क्षेत्र के बेमला में लेपर्ड एक घर में आ गया था और एक मां-बेटे पर हमला भी किया। करीब 3 घंटे की मशक्कत के बाद उसे रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया था। जब महिला जोर-जोर से चिल्लाने लगी तो लेपर्ड वहां से एक कमरे में घुस गया। महिला ने बाहर से गेट बंद कर दिया था। करीब तीन घंटे बाद लेपर्ड गेट तोड़कर भाग गया। महिला का शोर सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे और करीब 500 मीटर तक लेपर्ड का पीछा किया। इस पर लेपर्ड एक पोल्ट्री फार्म में घुस गया। करीब 3 घंटे की कडी मशक्कत के बाद वन विभाग की रेस्क्यू टीम ने उसे बाहर निकाला।

सर्राफा व्यापारियों ने प्रदर्शन किया

पुलिस द्वारा सर्राफा दुकान मालिक को पकड़ ले जाने का मामला

टोंक, (निसं)। जिला मुख्यालय पर सर्राफा व्यापारियों ने सवाईमाधोपुर में पुलिस द्वारा सर्राफा की दुकान के मालिक बालकिशन सोनी को पकड़कर ले जाने के बाद पुलिस के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर पुलिस की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताई है। वहीं पुलिस ने आरोपी लगाया है कि बालकिशन ने चोरी का माल खरीदा है।

- **सर्राफा व्यापारियों ने प्रदर्शन कर पुलिस की कार्य प्रणाली पर नाराजगी जताई है**

प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार को मुख्यालय पर सर्राफा व्यापारी सड़क पर उतर गए तथा सर्राफा व्यापारियों ने अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद रखे, फिर घंटाघर पहुंचे और प्रदर्शन करते हुए शहर के मुख्य मार्गों से होकर सवाईमाधापुर की सूरवाल पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करते हुए डिपो क्षेत्र तक वाहन रैली निकाली। जिसके बाद व्यापारी सुभाष बाजार पहुंचे, जहां उन्हें सूचना मिली कि सूरवाल थाना पुलिस ने सर्राफा व्यापारी को छोड़ दिया। इस दौरान सर्राफा संघ से जुड़े व्यापारी एकजुट हो गए और दुकानें बंद करके मोटरसाईकिल से सुभाष बाजार से डीपो क्षेत्र तक प्रदर्शन किया। इस दौरान पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारे लगाये। इस दौरान व्यापार महासंघ के अध्यक्ष मनीष बंसल, महामंत्री आनन्दवर्धन बम सहित अन्य व्यापारी मौजूद थे।

लाभ संतृप्ति शिविरों में लाभार्थियों को मिला योजनाओं का लाभ

भगवान बिरसा मुंडा जयंती पर जनजातीय गौरव वर्ष के तहत लाभ संतृप्ति शिविरों का हुआ आयोजन

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में प्रदेशभर में भगवान बिरसा मुंडा जयंती के उपलक्ष्य में 1 से 15 नवम्बर 2025 तक जनजातीय गौरव वर्ष के तहत विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला प्रारम्भ हुई है। राज्य सरकार द्वारा यह आयोजन भगवान बिरसा मुंडा के आदर्शों, संघर्ष और योगदान को जन-जन तक पहुँचाने के साथ-साथ समाज के वंचित वर्गों को योजनाओं का लाभ पहुँचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशानुसार रविवार को जिले के सभी उपखण्डों में लाभ संतृप्ति शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों का उद्देश्य पात्र लाभार्थियों तक केन्द्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ सुनिश्चित करना रहा। ई-मित्र केन्द्रों पर जिला प्रशासन एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से आयोजित विशेष शिविरों में कुल 6 हजार 591 पात्र लाभार्थियों को प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं अटल पेंशन योजना जैसी योजनाओं से लाभान्वित किया गया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा ने बताया कि शिविरों में लाभार्थियों के बैंक खाते खुलवाने, बीमा सुरक्षा कार्ड वितरण, पेंशन योजनाओं में नामांकन और आधार प्रमाणीकरण जैसी सेवाएं मौके पर ही उपलब्ध कराई गईं। जिले के विभिन्न उपखण्डों में लाभार्थियों की संख्या जयपुर शहर में 1,273, आमेर में 198, आंधी में 272, बस्सी में 337, चाकसू में 623, दूदू में 129, गोविंदगढ़ में 519, जालसू में 259, जमवारामगढ़ में 142, झोटवाड़ा में 272, जोबनेर में 246, किशनगढ़ रेनवाल में 129, कोटखावदा में 103, माधोराजपुरा में 90, मौजमाबाद में 64, फागी में 155, सांभर में 194, सांगानेर में 233, शाहपुरा में 246 एवं तुंगा में 285 रही।

लाभ संतृप्ति शिविरों का आयोजन हुआ।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती प्रतिभा वर्मा ने बताया कि शिविरों में नागरिकों का उत्साहपूर्ण सहभाग रहा तथा ई-मित्र संचालकों एवं विभागीय अधिकारियों ने लाभार्थियों को योजनाओं की जानकारी एवं दस्तावेज़ी सहयोग प्रदान किया। आगामी कार्यक्रमों के तहत 4 नवम्बर को महाविद्यालयों में भगवान बिरसा मुंडा के जीवन, विचार एवं योगदान पर भाषण, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। 6 नवम्बर को राजीविका के सहयोग से पंचायत समिति स्तर पर खिलौना निर्माण कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी, जिसका उद्देश्य ठाामीण महिलाओं को स्वरोजगार एवं नवाचार से जोडना है। माडा क्षेत्रों की ठाम पंचायतों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भगवान बिरसा मुंडा को पुष्पांजलि

- **माडा क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भगवान बिरसा मुंडा को पुष्पांजलि अर्पित की जाएगी।**

अर्पित की जाएगी। इसी क्रम में 15 नवम्बर तक जनजातीय गौरव वर्ष के अंतर्गत विभिन्न जनजागरण, सांस्कृतिक एवं विकासपरक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार विकास को जनसहभागिता का अभियान बना रही है। भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर आरम्भ हुई यह श्रृंखला समाज के आदिवासी गौरव, स्वाभिमान और संस्कृति को सम्मान देने की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में प्रदेशभर में भगवान बिरसा मुंडा जयंती के उपलक्ष्य में 1 से 15 नवम्बर 2025 तक जनजातीय गौरव वर्ष के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशों की अनुपालना में रविवार को जिले के समस्त उपखण्डों में लाभ संतृप्ति शिविरों का आयोजन किया गया। ईमित्र केन्द्रों पर जिला प्रशासन एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से आयोजित विशेष लाभ संतृप्ति शिविरों में 6 हजार 591 पात्र लाभार्थियों को प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं अटल पेंशन योजना सरीखी लोककल्याणकारी योजनाओं से लाभांवित किया गया।

ई-मित्र केन्द्रों पर आयोजित शिविरों के तहत जयपुर शहर में 1 हजार 273, आमेर में 198, आंधी में 272, बस्सी में 337, चाकसू में 623, दूदू में 129, गोविन्दगढ़ में 519, जालसू में 259, जमवारामगढ़ में 142, झोटवाड़ा में 272, जोबनेर में 246, किशनगढ़ रेनवाल में 129 में, कोटखावदा में 103 में, माधोराजपुरा में 90, मौजमाबाद में 64, फागी में 155, सांभर में 194, सांगानेर में 233, शाहपुरा में 246 एवं तुंगा में 285 लाभार्थियों को लाभांवित किया गया। इसी कड़ी में 4 नवम्बर को महाविद्यालयों में भगवान बिरसा मुंडा पर भाषण, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताएं होंगी। तो वहीं, 6 नवम्बर को राजीविका द्वारा पंचायत समितियों में खिलौना निर्माण कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी तथा माडा क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भगवान बिरसा मुंडा को पुष्पांजलि अर्पित की जाएगी। इसी प्रकार 15 नवंबर तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

हाईवे पर लूटपाल करने वाले गिरोह के दो बदमाश बापर्दा गिरफ्तार

जयपुर। शिवदासपुरा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए हाईवे पर लूटपाट करने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए दो बदमाशों को बापर्दा गिरफ्तार किया है। पुलिस गिरफ्तार बदमाशों से उनके अन्य साथियों के बारे में गहनता से पूछताछ करने में जुटी है। पुलिस ने आशंका जताई है कि आरोपियों से कई लूट की वारदातों का खुलासा हो सकता है।

जयपुर पुलिस उपायुक्त दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि विशेष अभियान एरिया डोमिनेशन के तहत परिवादी हरकेश योगी ने मामला दर्ज कराया कि वह अपने दोस्त जसवंत सिंह के साथ कानोता जा रहा था। इसी दौरान प्रहलादपुरा पुलिया के नीचे थार गाड़ी सवार 5 अज्ञात बदमाशों ने उसकी कार के आगे अपनी थार गाड़ी लगा कर रोक लिया और जबरन दोनो को खुद की थार में बैठा लिया और पैसों की मांग करने लगे।

नकदी नहीं देने पर बदमाशों ने जमकर मारपीट की। जिसके बाद अज्ञात बदमाश जसवंत के कानों में पहनी हुई सोने की बालिया, सोने की अंगुठी और चार हजार रुपए फोन पे कर डाल लिए। वहीं बदमाशों ने हरकेश 2 हजार रुपए का ऑनलाइन पैमेंट खुद के फोन पे पर डलवा लिया और चांदी की अंगुठी,मोबाइल फोन छीन लिया। आरोपी दोनो पीड़ितों को घटना स्थल से दो किलो मीटर दूर जंगलों में छोडकर फरार हो गए।

पुलिस ने मामला दर्ज कर विशेष टीम को गठन किया और सैकड़ो सीसीटीवी फुटेज खंगालने के बाद पूर्व में कमल योगी को बापर्दा गिरफ्तार कर लिया। वहीं इस वारदात में शामिल एक नाबालिक को निरुद्ध कर लिया। पुलिस ने वांछित चल रहे आरोपी कृष्ण गुर्जर (19) निवासी गोनेर व मनीष मीणा (24) निवासी सिरोली शिवदासपुरा को बापर्दा गिरफ्तार कर लिया।

सार-समाचार

फेडकुटा के राष्ट्रीय सचिव बनने पर प्रो तीर्थंकर का अभिनंदन

दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के सचिव और हिंदू कालेज में आचार्य प्रो बिमलेंदु तीर्थंकर को फेडकुटा के सचिव बन जाने पर अभिनंदन किया गया। प्रो तीर्थंकर शिक्षकों के अखिल भारतीय संगठन फेडरेशन ऑफ सेंट्रल यूनिवर्सिटीज टीचर्स के राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किए गए हैं। वेंकटेश्वर कालेज के प्रो रामकिशोर यादव ने बताया कि शिक्षक हित में सदैव संघर्षरत रहे प्रो तीर्थंकर के व्यक्तित्व में अकादमिक योग्यता और संगठनधर्मिता का अपूर्व समन्वय है। श्यामलाल कालेज के प्रो समरेंद्र कुमार ने व्यावसायिकता के खतरों के बीच उच्च शिक्षा को बचाने के लिए प्रयासरत रहने वाले शिक्षक नेताओं में तीर्थंकर की भूमिका की सराहना की। राजधानी कालेज के प्रो राजेश झा ने कहा कि प्रो तीर्थंकर ने लगातार दूसरी बार दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक प्रतिनिधि का चुनाव जीतकर शिक्षक समुदाय में गहरी विश्वसनीयता अर्जित की है जिसका सुपरिणाम फेडकुटा का दायित्व है। प्रो तीर्थंकर को अग्रसेन कालेज के प्रो टी एन ओझा, आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के डॉ प्रेमचंद, राजधानी कालेज के डॉ आनंद प्रकाश, हिंदू कालेज की प्रो सीमा दास, प्रो रचना सिंह, डॉ पल्लव , डॉ नीलम सिंह सहित अनेक शिक्षकों ने शुभकामनाएं और बधाई दी।प्रो तीर्थंकर ने शुभकामनाओं और बधाई को स्वीकारते हुए कहा कि उनके प्रति दर्शाए गए विश्वास को बनाए रखने के लिए वे हर संभव प्रयत्न करेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षा के पवित्र परिसर में व्यावसायिकता और दोहरे आचरण के लिए कोई स्थान नहीं है। ज्ञातव्य है कि देश के प्रतिष्ठित हिंदू कालेज में लगभग दो दशकों से अध्यापन कर रहे प्रो तीर्थंकर ने पटना विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा अर्जित कर शिक्षक आंदोलन में निरंतर अपना योगदान किया है। वे हिंदी के अध्येता और आलोचक भी हैं जिनके आलेखों का प्रकाशन उच्च स्तरीय पत्रिकाओं में होता रहा है।

800 नई बसों की होगी खरीद

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में बेहतर प्रबंधन, सुपरविजन और संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। पूर्ववर्ती सरकार के समय रोडवेज का वार्षिक ऑपरेशन घाटा लगभग एक हज़ार करोड़ पहुंच गया था, जो वर्तमान सरकार की पारदर्शी नीति के कारण अब लगभग तीन सौ करोड़ रुपये प्रतिवर्ष ही रह गया है।मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार परिवहन निगम यात्रियों को बेहतर और सुरक्षित और समयबद्ध परिवहन सेवाएं सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ उपलब्ध करवा रहा है। यात्रियों की अपेक्षाओं के अनुसार निरन्तर परिवहन सेवाओं का गुणवत्तापूर्ण उन्नयन भी सुनिश्चित किया जा रहा है।उल्लेखनीय है कि उन्नत मॉनिटरिंग व्यवस्था और बेहतर ईंधन प्रबंधन के माध्यम से डीज़ल की खपत में कमी लाई लाने से परिचालन व्यय में बड़ी बचत हुई है। साथ ही, 810 नई बसों की खरीद और 352 बसों को अनुबंधित कर रोडवेज के बेड़े और रूट नेटवर्क को मजबूत किया है। इससे रोडवेज सेवाएं यात्रियों के लिए अधिक लाभप्रद बनी हैं।रोडवेज की वित्तीय स्थिति में भी निरन्तर सुधार के लिए सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। आने वाले समय में 800 नई बसें बेड़े में शामिल कर यात्रियों को और अधिक सुरक्षित और सुव्यवस्थित यात्रा सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। इन नई बसों के जुड़ने से परिचालन घाटा समाप्त कर निगम को लाभ की स्थिति में लाने का भी लक्ष्य रखा गया है।

शादी का झांसा दे डेढ़ साल तक युवती से दुष्कर्म

जयपुर। ट्रांसपोर्ट नगर थाना इलाके मे एक युवती ने अपने प्रेमी के खिलाफ शादी का झांस देकर दुष्कर्म करने का मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने पीड़िता के बयानों के आधार पर आरोपी प्रेमी के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है। पुलिस ने बताया कि जवाहर नगर इलाके में रहने वाली 24 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज कराया है कि आरोपी प्रेमी से उसकी मुलाकात जनवरी -2024 मे हुई थी। आरोपी ने उसे अपने प्रेम जाल में फंसाया और अकेले में मिलने के बहाने से बुलाया । जहां पर आरोपी ने अकेलपन का फायदा उठाते हुए उसके साथ दुष्कर्म किया । विरोध करने पर आरोपी ने शादी का झांसा दिया और डेढ साल तक अलग-अलग जगहों पर ले जाकर उसकी आबरु से खेलता रहा। शादी का दबाव बनाने पर आरोपी प्रेमी ने शादी करने से इनकार कर दिया। खुद के साथ हुई धोखाधड़ी का एहसास होने पर पीड़िता ने पुलिस की मदद ली और आरोपी युवक के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया।

नकबजनी की वारदात करने वाला गिरफ्तार

जयपुर। मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नकबजनी की वारदात करने वाले शातिर अव्वल दर्जे के नकबजन अभिषेक जादौन को धर-दबोचा है। वहीं पूर्व में पुलिस ने उसके साथी रवि ख्यालिराम को गिरफ्तार किया जा चुका है। दोनों ही आरोपित नशे के आदि है। जो नशे का शौक पूरा करने के लिए नकबजनी की वारदात करते है। इनके पास से चोरी किए गए सोने-चांदी के जेवरात बरामद किए जा चुके है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नकबजनी की वारदात करने वाले शातिर अव्वल दर्जे के नकबजन अभिषेक जादौन निवासी सपोटरा जिला करौली हाल श्याम नगर जयपुर को गिरफ्तार किया गया है।

हुक्का,पाइप,चिलम व प्लेवर सीज, क्लब मैनेजर गिरफ्तार

जयपुर। जवाहर सर्किल थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए इलाके में संचालित जोकर द क्लब पर छापा मारा। जहां क्लब की आड में अवैध रूप से हुक्का परोसा जा रहा था। पुलिस टीम ने बड़ी संख्या में हुक्के सीज कर क्लब मैनेजर के खिलाफ मामला दर्ज उसे गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि जवाहर सर्किल थाना पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि मालवीय स्थित जोकर द क्लब की आड में हुक्का बार चल रहा है। इस पर एक पुलिस टीम मौके पर जाकर सूचना की तस्दीक करवाई गई। क्लब को चेक किया तो क्लब के अन्दर एक व्यक्ति सोफे पर बैठे लड़कों के सामने रखी टेबल पर खान पान के साथ तम्बाकू युक्त प्लेवर चिलम में डालकर हुक्का पिला रहा था। टेबल पर 1 हुक्का, 1 पाईप, 1 चिलम जिसमें जलते हुए कोयले थे व कोयले के नीचे फॉयल पेपर में फ्लेवर भरा हुआ मिला तथा क्लब के स्टोर रूम में कुल 26 हुक्का, 26 पाईप, 26 चिलम मिले। जिस पर क्लब के मैनेजर संजय बैरवा से लाइसेंस मांगा जो उस के पास नहीं था। जिसपर क्लब में मिले कुल 27 हुक्का, 27 पाईप, 27 चिलम एवं शेष प्लेवर को सीज की कार्रवाई कर आरोपित के खिलाफ मामला दर्ज कर गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस ने हुक्के सीज कर क्लब मैनेजर को गिरफ्तार किया।

बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। शिवदासपुरा थाना पुलिस ने भूमि विवाद के चलते जान लेवा हमला करने वाले बदमाश को गिरफ्तार किया है। पुलिस गिरफ्तार बदमाश के अपराधी रिकॉर्ड को खंगलाने में जुटी हुई है।जयपुर उपायुक्त दक्षिण राजर्षि राज वर्मा ने बताया कि विशेष अभियान एरिया डोमिनेशन के तहत परिवादी रमेश धाकड़ ने 15 अगस्त 2025 को मामला दर्ज कराया था कि ठाम रुपपुरा में उसने लुनियावास गृह निर्माण सहकारी समिति की आवासीय योजना शंकर वाटिका में खरीदे गए प्लॉट का निर्माण कार्य शुरु किया था। इसी दौरान स्थानीय लोगों ने साथ मिलीभगत कर आरोपी डम्पर व ट्रेक्टर में सवार होकर आए उसके साथ मारपीट कर उसे गंभीर रुप से घायल कर दिया और उसके वाहन में तोड़फोड़ करते हुए नकदी व दस्तावेज निकला कर फरार हो गए।

गिरफ्तार आरोपी की कोर्ट में पेशी के दौरान मौत

जयपुर। राजधानी में शनिवार को आबकारी एक्ट में गिरफ्तार एक आरोपी की कोर्ट में पेशी के दौरान अचानक मौत हो गई। घटना के बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। मृतक की पहचान हरकेश सांसी के रूप में हुई है।

बताया जा रहा है कि आरोपित को रामनगरिया थाना पुलिस ने अवैध शराब के मामले में गिरफ्तार किया था। शनिवार को उसे नियमित कार्यवाही के तहत अदालत में पेश करने के लिए पुलिस लेकर पहुंची थी। इसी दौरान उसकी तबीयत बिगड़ गई और उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया।पुलिस के अनुसार हरकेश सांसी को कोर्ट में पेश किया जा रहा था, तभी उसकी तबीयत अचानक बिगड़ गई। इसके बाद आरोपी निढाल होकर गिर गया। पुलिसकर्मी उसे लेकर अस्पताल पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और पूरी जानकारी ली। आरोपी का शव जयपुरिया अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। मेडिकल बोर्ड की देखरेख में पोस्टमार्टम कराया जाएगा। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सुपुर्द किया जाएगा। पुलिस ने बताया कि मौत के सही कारण का खुलासा मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद ही हो सकेगा। परिजनों ने आरोप लगाया है कि हरकेश को जब लेकर गए थे, तब उसकी तबीयत सही थी। पुलिस का कहना है कि आरोपी की तबीयत अचानक खराब हुई और उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया था। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

डॉक्टर के घर से 17 तोला सोना चोरी

जयपुर। रामनगरिया थाना इलाके में स्थित महादेव नगर में सुने पड़े डॉक्टर के मकान पर निशाना सांधते हुए अज्ञात नकबजन लाखों रुपए के सोने के आभूषण लेकर फरार हो गए। वारदात होती देख पड़ोसी ने बदमाशों का वीडियों बनाया और मामले की जानकारी पुलिस को दी। लेकिन पुलिस के पहुंचने से पहले ही शातिर नकबजन फरार होने में कामयाब हो गए। पुलिस ने पड़ोसी के द्वारा बनाए गए वीडियों के आधार पर बदमाशों की तलाश शुरु कर दी है। पुलिस ने बताया कि पीड़ित मनोहर भाटिया एक नवम्बर को अपने परिवार के साथ बीकानेर में एक शादी में शामिल होने गए थे। रात करीब दो बजे नकबजन मकान में घुसे और अलमारी का ताला तोड सोने के जेवरात बैग में भरने लगे। तभी पड़ोसी ने खिड़की से आरोपियों का वीडियों बना लिया। पड़ोसी ने मामले की जानकारी पुलिस कंट्रोल रूम को दी। पुलिस के मौके पर पहुंचने से पहले ही दोनो शातिर बदमाश 17 तोला सोने के आभूषण चोरी कर फरार हो गए। वहीं मामले की जानकारी मिलने के बाद पीड़ित डॉक्टर मनोहर भाटिया जयपुर पहुंचे और सारा सामान संभालने के बाद उन्होने पुलिस को चोरी हुई सामानों की सूची सौपी। जिसमें 4 तोला सोने का रानीहार, 2 तोला की चार सोने की अंगूठी, आधा तोला की एक हीरे की अंगूठी, साढे 7 तोला की 3 गले की चैन आदि शामिल हैं।

देवउठनी एकादशी पर ठाकुर श्रीजी का वैदिक मंत्रोचारण के साथ हुआ पंचामृत

गोविंद देवजी मंदिर में देवउठनी एकादशी महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया

जयपुर। आराध्य देव ठिकाना श्री गोविंद देवजी मंदिर में रविवार को देवउठनी एकादशी महोत्सव बड़े हर्षोल्लास और भक्ति भाव से मनाया गया। चातुर्मास के चार पवित्र महीनों की योगनिद्रा के बाद भगवान श्रीहरि विष्णु के जागरण के इस पर्व पर मंदिर परिसर में भोर से ही श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा।

ब्रह्ममुहूर्त में मंदिर के प्रांगण में शंख, घंटा और घड़ियालों की मंगलध्वनि के साथ उतिष्ठोतिष्ठ गोविंद, उतिष्ठ गरुड़ध्वज मंत्रोच्चार के बीच ठाकुर श्रीजी का जागरण हुआ। महंत अंजन कुमार गोस्वामी जी के सान्निध्य में वैदिक विधि से ठाकुरजी का पंचामृत अभिषेक और गुनगुने जल से स्नान कराया गया। मंगला झांकी के दौरान ठाकुर श्रीजी को लाल लप्पा जामा पोशाक धारण कराई गई तथा विशेष पुष्प श्रृंगार से सजाया गया। अभिषेक पश्चात ठाकुर श्री सालिग्राम जी (नारायण जी) को चांदी की चौकी पर विराजमान कर मंदिर के दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित तुलसी मंच तक लाया गया। यहां उनका वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पंचामृत पूजन किया गया। इसके बाद तुलसी महारानी एवं श्री सालिग्रम जी की आरती और भोग अर्पण संपन्न हुआ। भक्तों ने दोनों की चार परिक्रमाएं कीं और मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना की। तत्पश्चात ठाकुर श्री सालिग्राम जी को चांदी के रथ में विराजमान कर मंदिर की परिक्रमा कराई गई और पुन: गर्भगृह में ठाकुर श्री गोविंद देवजी के समीप विराजमान किया गया।

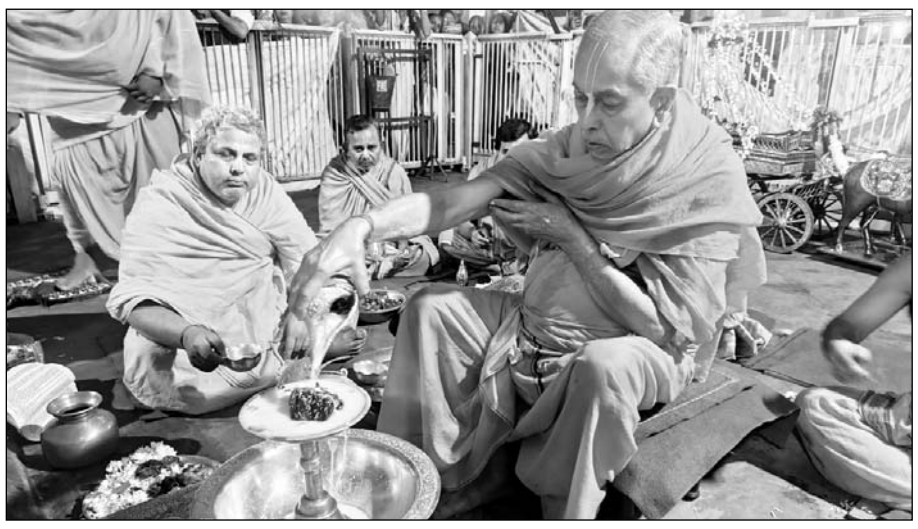
ठाकुर श्रीजी का वैदिक मंत्रोचारण के साथ हुआ पंचामृत अभिषेक किया।

सुबह से लेकर रात्रि की शयन झांकी तक मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहा। जय निवास उद्यान परिसर में भक्तों ने दीपदान किया, वहीं महिलाओं ने समूह में बैठकर एकादशी कथा सुनी और हरिनाम संकीर्तन किया। शहरभर से महिलाएं सजे समूहों में पहुंचीं। मंदिर परिसर और उद्यान में मेले जैसा उल्लासपूर्ण वातावरण बना रहा। बड़ी संख्या में विदेशी श्रद्धालु भी एकादशी दर्शन करने पहुंचे।

श्रद्धालुओं ने बड़ी परिक्रमा करते हुए तुलसी, केला और कल्पवृक्ष के चारों ओर मौली लपेटकर परिक्रमा की। इस दौरान हरिनाम कीर्तन की गूंज ने संपूर्ण परिसर को भक्तिरस से भर दिया।भक्तों की भीड़ को देखते हुए मंदिर प्रशासन और पुलिस ने विशेष दर्शन व्यवस्था की। दर्शनार्थियों के प्रवेश और निकास के लिए अलग-अलग मार्ग बनाए गए। मुख्य द्वार से प्रवेश कराया गया, जबकि जय निवास बाग से प्रवेश पूर्णत: निषेध रहा। मंदिर परिसर में जूता-चप्पल रखने की व्यवस्था नहीं की गई थी। भक्तों की सुविधा के लिए दो अलग-अलग कतारें बनाई गईं - एक में जूते-चप्पल सहित, दूसरी में बिना जूते-चप्पल वाले भक्तों के लिए। मंगला दर्शन प्रात: 4 से 5:30 बजे तक, देवउठनी पूजन 6:15 बजे से, धूप दर्शन 7:30 से 9 बजे तक, श्रृंगार दर्शन 9:30 से 10:15 बजे तक, राजभोग दर्शन 10:45 से

- **चांदी के रथ में ठाकुर श्री सालिग्राम जी की परिक्रमा, तुलसी विवाह के साथ गूंजा हरिनाम संकीर्तन**

11:45 बजे तक, ग्वाल झांकी शाम 4:30 से 5:15 बजे तक, संध्या झांकी 5:45 से 7:30 बजे तक और शयन झांकी रात 8 से 8:30 बजे तक हुई। सबसे ज्यादा लोग मंगला और शयन झांकी में पहुंचे

ठाकुर श्रीजी को विशेष सागरी लड्डू का भोग अर्पण किया गया। मंदिर में पुष्प और रजत अलंकरण से सुसज्जित झांकियों का भव्य श्रृंगार श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बना रहा। मंदिर के सेवाधिकारी मानस गोस्वामी के निर्देशन में 200 से अधिक स्वयंसेवकों ने सुबह से रात्रि तक व्यवस्थाएं संभाली।शहर के अन्य प्रमुख वैष्णव मंदिरों - गोपीनाथ जी (पुरानी बस्ती), राधा दामोदर जी (चौड़ा रास्ता), श्री सरस निकुंज (सुभाष चौक) और लाडलीजी मंदिर (रामगंज बाजार) - में भी एकादशी उत्सव धूमधाम से मनाया गया। संध्याकाल में उदियात तिथि के अनुसार घर-घर तुलसी-शालिग्राम विवाह संपन्न हुआ। भक्तों ने तुलसी शालिग्राम का विवाह कर दीपदान किया।

ग्राम विकास अधिकारी ने फंदे से झूल की आत्महत्या

परिजनों ने महिला बीडीओ और सरपंच पर लगाया आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप

जयपुर। नारायण विहार इलाके में रहने वाले ग्राम विकास अधिकारी ने रस्सी का फंदा बनाकर उसके लटक कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। परिजनों की सूचना पर रविवार सुबह मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतार अपने कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए जयपुरिया अस्पताल की मुर्दाघर में भिजवाया। पुलिस जांच में सामने आया कि ग्राम विकास अधिकारी दीपावली पर छुट्टी लेकर घर आया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच पडताल मे जुटी है।

- **परिजनों की सूचना पर रविवार सुबह मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतार अपने कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए जयपुरिया अस्पताल मुर्दाघर में भिजवाया**
- **मृतक के पास से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ**

जांच अधिकारी एसआई सतीश कुमार ने बताया कि मांग्यावास इंजीनियर्स कॉलोनी निवासी प्रवीण कुमावत (31) ग्राम पंचायत कणोज पंचायत समिति केकडी में ग्राम विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत था। पुलिस जांच में सामने आया कि प्रवीण कुमावत दीपावली पर छुट्टी लेकर आया था। 27 अक्टूबर की रात खाना खाने के बाद वह आस-पास में रहने वाले अपने रिश्तेदार और दोस्तों से मिलने गया था। इसके बाद घर लौटने के बाद दूर के रिश्तेदार प्रहलाद से मोबाइल पर बात करता रहा।

करीब 20 मिनट बात करने के बाद वह अपने कमरे में सोने चला गया। जिसने देर रात कमरे में रस्सी का फंदा लगाकर प्रवीण ने आत्महत्या कर ली । 28 अक्टूबर को सुबह प्रवीण को अपनी ड्यूटी पर वापस जाना था। सुबह करीब 8 बजे परिजन उसे जगाने के लिए पहुंचे। कमरे में पहुंचने पर प्रवीण फंदे से लटका मिला।

पुलिस जांच में सामने आया है कि आत्महत्या करने के लिए मृतक प्रवीण कुमावत बाजार से नई रस्सी खरीदकर लाया था। मृतक के भाई अशोक कुमावत ने ठाम पंचायत सरपंच भागचन्द नायक, उसके बेटे बंटी और खण्ड विकास अधिकारी दिशी शर्मा के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज करवाया।

पिछले 3-4 महीने से ग्राम पंचायत सरपंच भागचंद नायक, उसका बेटा बंटी और खण्ड अधिकारी दिशी शर्मा की ओर से ग्राम पंचायत में किए गए काम के अवैध भुगतान के लिए साइन करवाने का दबाव बना रहे थे। ग्राम पंचायत सरपंच भागचंद की ओर से अपने पद पर रहते हुए जल भराव क्षेत्र में किसी अन्य जगह पर पौंड खुदवाया। मिट्टी को जल भराव क्षेत्र में डलवाने के लिए अवैध तरीके से 10-15 लाख रुपए का भुगतान करवाना चाह रहा था। जबकि, उस जल भराव क्षेत्र में करीब 50 हजार रुपए की मिट्टी डाली थी। काफी दबाव के चलते प्रवीण ने वॉट्सऐप पर अपना त्यागपत्र अधिकारी दिशी शर्मा को भेजा था। जिसके जानकारी मिलने के बाद पीड़ित का भाई अशोक कुमावत अपने बहनोई मुकेश कुमार के साथ दोनो खण्ड विकास अधिकारी दिशी शर्मा के कार्यालय में जाकर मिले। इसके बाद भी दिशी शर्मा ने अवैध भुगतान करने का दबाव बनाया।

हालांकि पुलिस को मृतक के पास से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ। पुलिस ने पीड़ित परिजनों की शिकायत पर आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

ARBiT
it happens here...

Celebrating National Sandwich Day: A Tribute to Flavour and Creativity

National Sandwich Day, celebrated on November 3, honours one of the world's most versatile and beloved foods: the sandwich. From classic peanut butter and jelly to gourmet creations with artisanal breads, fresh vegetables, and savory fillings, sandwiches are a culinary staple that caters to all tastes and occasions. The day encourages people to get creative, try new recipes, or simply enjoy their favourite sandwich with family and friends. Beyond being convenient and delicious, sandwiches reflect cultural diversity and innovation in the culinary world. National Sandwich Day is a fun reminder to celebrate flavour, variety, and the joy of a well-made meal.

राष्ट्रदूत
MONDAY
03 November 2025
A-B

#EARTH

Beyond EPICA

Indian Scientists help unearth 1.2-Million-Year-Old Ice Core in historic Antarctic Drill

In a landmark achievement for climate science, Indian research scientists, working alongside an international team, have successfully drilled nearly 2 miles (2,800 meters) beneath the Antarctic ice sheet to extract an ice core, estimated to be 1.2 million years old, one of the oldest ever recovered. The project, part of the ambitious *Beyond EPICA* (European Project for Ice Coring in Antarctica) mission, is based at Little Dome C, one of the coldest and most remote locations on Earth, approximately 34 kilometers from Concordia Research Station.

A Window Into Earth's Distant Past

The core contains ancient air bubbles and climate data from a time before modern humans existed, offering scientists a chance to study atmospheric conditions long before the current interglacial era.

"This ice core is a frozen archive of our planet's climate history," said Dr. Rajeev Sharma, a senior glaciologist with India's National Centre for Polar and Ocean Research (NCPOR). "With it, we can look back over a million years to understand how natural changes in greenhouse gas levels influenced Earth's climate cycles."

A Feat of Engineering and Endurance

The drilling, which began several years ago, was conducted in extreme conditions, with average summer temperatures at the site hovering around -35°C. Using specialized drills, the team extracted cylindrical ice segments approximately 10 centimeters in diameter and up to 4.5 meters long. The work was painstaking and precise: the drill passed through more than 2,800 meters of compacted ice, eventually reaching ice that had formed over a million years ago, well before the last major transition in Earth's glacial rhythms.

Scientific Goldmine

What makes this core extraordinary is its age. Previously, the oldest continuous ice core record dated back around 800,000 years. This new sample extends the climate record by at least 400,000 years, deep into the Mid-Pleistocene Transition, a period that saw the frequency of ice ages shift from every 41,000 years to roughly every 100,000 years. "This is critical for understanding how Earth's climate system works," said project co-leader Dr. Carlo Barbante of Italy's Institute of Polar Sciences. "The ice core can reveal how CO2 levels behaved before and after this transition, insight that's crucial in predicting future climate scenarios."

India's Role in Antarctic Research

Indian scientists from NCPOR played a key role in logistics, drilling support, and on-site scientific operations. Their participation marks a significant milestone in India's expanding role in polar research and global climate studies. "This achievement showcases India's scientific capability and commitment to global climate science," said Dr. Anita Desai, Director of NCPOR. "Our collaboration in Antarctica will continue to grow in importance as the world faces unprecedented environmental changes."

What's Next?

The extracted ice core is being preserved under ultra-cold conditions and will be transported to Europe aboard the Italian icebreaker Laura Bassi. There, scientists will conduct detailed chemical and isotopic analysis to map changes in greenhouse gases, dust, and temperature over the last 1.2 million years.

Experts say results from the study could take years but may offer crucial insights into the natural rhythms of Earth's climate, and how human activity may be disrupting them.

Why It Matters

With the planet facing a climate crisis, this discovery provides a rare opportunity to learn from Earth's deep past. By understanding how ancient climates evolved without human interference, scientists hope to better predict what lies ahead for our warming world.

Detailing Made Them Spectacular

The Gangaikonda Cholapuram temple (Jayankondam, Tamil Nadu, India) also known as the great temple of Brihadeeswarar is next in importance only to the Brihadisvara temple at Thanjavur.

The pyramidal roof was displayed with an increasingly aberrant appearance. At the same time, the roof grows because an increasing number of 'levels' were interspersed between the body of the building and its crowning. With the passing of time at the beginning of the 11th century, this type was amplified until forming a high pyramid: the most beautiful example is seen in the vimana of the Brihadisvara temple (Thanjavur) where the crowning piece of the pyramid, in the form of a polygonal dome, rose up to 60 m from the patio floor. In this temple, the height of the sanctuary was doubled and the 'levels' of the roof became 13.

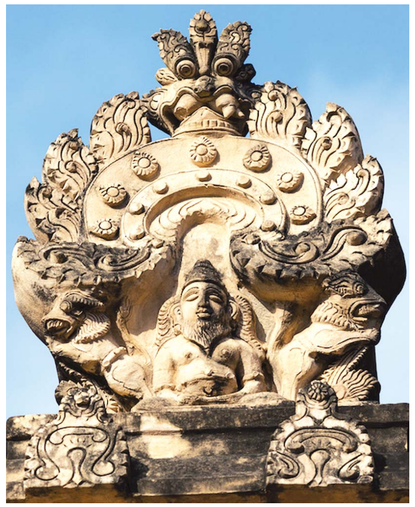

Cola dynasty Kudu.

Around the walls of the sanctum of the Gangaikonda Cholapuram temple there are about 50 sculptural reliefs of which the image representing Shiva garlanding a devotee is one of the most prominent.

The Koranganatha Temple (Srinivasanallur, Tiruchirappalli,Tamil Nadu, India) dedicated to the god Ranganatha.

● Anjali Kothari

At the same time as the temples with shikhara and the architectural types developed in the North of India, in the South, a series of temples with pyramidal roof were developed whose process of evolution is analogous to that of the temples with a curvilinear roof but which had even more numerous variants. We must look for the prototypes of these temples with pyramidal roof, both in older representations (i.e.: the fresco of the cave No. 1 of Ajanta from the 6th century; the scene from the 'Descent of the Ganges' from Mahibalipuram in which an ascetic meditates next to a small temple from the 7th century), and in the sanctuaries carved in a rocky bank of Mahabalipuram: the temples known as the Dharmaraja Ratha and the Arjuna and Draupadi Rathas (7th century). With the passing of centuries, architects and artists progressively developed the great artistic achievements of the medieval era following these archetypes.

The essential features

The better defined and more frequent type of temple had, as essential features, a square floor plan whose exterior walls were decorated with built-in pillars and a pyramidal roof whose steps simulated floors or levels, each composed of a cornice that supported the subsequent reduced levels. These reduced levels had a square floor plan if they were located in the angles and a rounded floor plan in the other cases. A crowning with a square or polygonal floor plan topped the pyramid. This pattern was strictly followed by the architects. After the monolithic temples of Mahabalipuram of the 7th century, one of the oldest temples of this type built with blocks of sandstone was erected in the same place: the Shore Temple, from the 8th century.

This temple already had the main elements that will be employed in the course of the following centuries and constitutes the origin of the great temples that will be built or transformed until the contemporary era. The Shore Temple includes the three essential elements arranged on the same axis and enclosed in a rectangular enclosure. In this temple, the sanctuary (vimana) is covered by a stepped pyramidal roof clearly higher than those of the other buildings of the complex, even taller than the tall pavilions placed over the doors of the enclosure. Approximately until the 11th century, the reduction in the number of the constructions that embellished each 'floor/level' of the roof of the sanctuary were arranged regularly over each other in decreasing size all the way to the top. Each one of them reproduced, under a simplified form, the monumental constructions with their built-in pillars and their roof with windows following the style of the Indian arch (kudu).

Kudu appeared more as a pediment

As the reduction of architectural elements evolved, the kudu resembled more the appearance of a pediment. The kudu located at the center of each 'level' was generally larger than the others. Overlapping vertically from floor to floor, these kudu created a point of interest on each side of the roof, giving it a kind of ledge where the large kudu-like-pediments of the central structure of the pyramidal roof were displayed with an increasingly aberrant appearance. At the same time, the roof grows because an increasing number of 'levels' were interspersed between the body of the building and its crowning. With the passing of time at the beginning of the 11th century, this type was amplified until forming a high pyramid: the most beautiful example is seen in the vimana of the Brihadisvara temple (Thanjavur) where the crowning piece of the pyramid, in the form of a polygonal dome, rose up to 60 m from the patio floor. In this temple, the height of the sanctuary was doubled and the 'levels' of the roof became 13.

The Shore Temple (built between 700–728 AD, Mahabalipuram, Kanchipuram District, India) whose name refers to its location overlooking the shore of the Bay of Bengal.

#KUDU ARCHITECTURE

gangaikonda-cholapuram temple nandi.

The Kanchi Kailasanathar temple is the oldest structure in Kanchipuram (Tamil Nadu, India). The temple is dedicated to the Lord Shiva and was built from 685-705 AD. The temple contains 58 small shrines which are dedicated to various forms of Shiva. Following this general scheme, the architects executed innumerable variants.

Temple in Kanchipuram can be considered as prototypes. Each one of them was developed at the center of a rectangular enclosure whose access door is facing East. In Kanchipuram, this gate (gopuram) was one of the first examples that appeared crowned by a semi-cylinder bound at each end by an Indian arch (kudu): this element resembles the shape of the city gates portrayed in Buddhist representations as old as the 1st century before the Christian era and that here was applied to the Hindu religious architecture. This style of building from the 8th century, still of modest dimensions, became taller following the same law that governed the progressive elevation of the pyramidal roof of the vimana. Once passing through this door (which was in fact an entrance pavilion opened into the body of the enclosure), we find in the first place a hypostyle pavilion with a flat roof: it is the mandapa or mandapam. Behind it at a short distance stands the vimana with its pyramidal roof topped by a false polygonal dome.

The Kanchi Kailasanathar temple is the oldest structure in Kanchipuram (Tamil Nadu, India). The temple is dedicated to the Lord Shiva and was built from 685-705 AD. The temple contains 58 small shrines which are dedicated to various forms of Shiva.

Following this general scheme, the architects executed innumerable variants. From the beginning of the 10th century in the southeast, a better defined style was developed under the Chola sovereigns that continued approximately until the middle of the 12th century. Later, it developed into a more ornate style which evolved in the same region under the Pandyan dynasty until the middle of the 14th century.

> The Kanchi Kailasanathar temple is the oldest structure in Kanchipuram (Tamil Nadu, India). The temple is dedicated to the Lord Shiva and was built from 685-705 AD. The temple contains 58 small shrines which are dedicated to various forms of Shiva. Following this general scheme, the architects executed innumerable variants.

Change of style

During the 10th century, the temples were not numerous nor very vast. Carefully built with well-arranged stone blocks, they continued the previous style of the Chalukya dynasty in their essential characteristics. A good example of the 10th century Chola style is the Koranganatha Temple in Srinivasanallur (Tiruchirappalli), in which was used a new architectural order, typical of the Chola illustrated mainly by the pillars and their capitals as well as the presence of niches on the exterior walls of the vimana, each sheltering a divine character carved in high relief.

With the consolidation of their power during the first quarter of the 11th century, the Chola undertook more monumental constructions whose two most beautiful examples were the Temple of Brihadishvara dedicated to Shiva in Thanjavur (1011), whose vimana was already mentioned and the Gangaikonda Cholapuram temples located in Jayankondam (1025 approximately). In these two temples, the Chola style reached its maturity and unfolded with surprising security attesting to the intensity of its faith and the virtuosity of the architects and sculptors of the time. In Thanjavur, the site is vast. Its layout includes (in linear order) a door, a pavilion that houses a statue of the Nandi bull (the sacred vehicle, vahana, of Shiva), a hypostyle mandapa, a large meeting room and, finally, the vimana itself. The very beautiful sculpted decoration is used with care and the impression of classic majesty emerges from the whole complex.

The Gangaikonda Cholapuram temple (Jayankondam, Tamil Nadu, India), also known as the great temple of Brihadeeswara, is next in importance only to the Brihadisvara temple at Thanjavur. The temple was completed in 1035 AD and is dedicated to Shiva.

In Gangaikonda Cholapuram, the whole complex is more imposing: the surface of the patio surrounded by walls is larger and contains on an east-west axis a hypostyle hall with 150 pillars that prefigures the mandapa 'of a thousand pillars' that will constitute in a later period a constant element in the composition of the great temples. This mandapa is linked to the vimana by a vestibule perpendicular to the main axis, whose two extremes to the North and to the South are provided with doors that are accessed by a steep staircase that climbs the high molded platform forming the base of the temple complex.

The sanctuary itself, with a dark and mysterious interior, is crowned by a pyramidal roof lower than that of Thanjavur (45.60 m), imposing although more robust and with less rigor of style, characterized by the introduction of horizontal curved lines into the roof that announced a 'mixed type' roof. The sculpture in high relief is perhaps more sensitive here than in Thanjavur and it is worth highlighting the presence next to the southern entrance of the vestibule of a panel in high relief, representing Shiva crowning with a flower garland King Rajendra Chola I (1018-1033), who had 'gone to the Ganges,' it is one of the few examples of royal portraiture in Indian medieval sculpture.

Around the walls of the sanctum of the Gangaikonda Cholapuram temple there are about 50 sculptural reliefs of which the image representing Shiva garlanding a devotee is one of the most prominent. In this relief, Shiva, with Parvati besides him, hands down a garland of flowers to mark his victory to a diminutive seated figure of the king Rajendra Chola I.

After its peak, the power of the Chola declined and the big religious construction impulse ceased. The Pandyan, in turn, dominated southern India and, although protectors of the arts, they were not properly emeritus builders. In fact, it can be observed in this period (12th century - mid-14th century), a tendency to expand more and more the area occupied by the temples while perpetuating the characteristics of the Chola style but without providing any innovation and only over decoration: the different buildings were conceived more with a utilitarian and functional purpose than as artistic creations, as was the case in the 11th century.

In the courtyard of the Gangaikonda Cholapuram temple, there is an imposing image of a seated Nandi bull, which is aligned axially 200 m facing the temple's sanctum. Vahana, from the Sanskrit, meaning 'that which carries, that which pulls,' the term denotes the being, typically an animal or mythical entity, a particular Hindu deity is said to use as a vehicle. In this sense, the vahana is often called the deity's 'mount.' Deities are often depicted riding (or simply mounted upon) the vahana. Other times, the vahana is depicted at the deity's side or symbolically represented as a divine attribute.

rajeshsharma1049@gmail.com

The Kanchi Kailasanathar temple is the oldest structure in Kanchipuram (Tamil Nadu, India).

#NATURE

Wild Bananas of Medog

These wild bananas are not the cultivated, sweet varieties most people are familiar with. They belong to ancient species of the Musa genus

Tucked away in the lush, isolated valleys of Medog County in southeastern Tibet lies a surprising and rare botanical find: wild bananas. In a region known more for its soaring mountains and harsh climates, the presence of banana plants seems almost unbelievable. However, Medog is unique. Thanks to its relatively warm, humid climate and low elevation compared to the Tibetan Plateau, it is home to a rich variety of subtropical flora, including wild banana species that have thrived there for generations.

These wild bananas are not the cultivated, sweet varieties most people are familiar with. They belong to ancient species of the Musa genus, often growing freely in the forests surrounding Medog's rivers and trails. Their fruit appears similar to that of domesticated bananas, but inside lies the key difference: a dense, fibrous pulp filled with large, hard seeds.

The Mystery of Inedibility

At first glance, the fruit of the wild banana may seem appealing, especially to travelers unfamiliar with local plant life. However, these bananas are often deemed inedible in their natural state. The flesh is dry, starchy, and sometimes bitter. Unlike commercial bananas, which are soft and sweet due to centuries of selective breeding, wild bananas retain many characteristics of their ancient ancestors, including a high seed-to-pulp ratio that makes eating them raw not only unpleasant but often impractical.

Despite this, these bananas are not entirely useless. While the fruit may be inedible, the seeds within them are known to be edible under certain conditions. Local communities and indigenous groups in and around Medog have learned how to prepare and use the seeds through methods passed down over generations, transforming an otherwise overlooked forest fruit into a seasonal food source.

Understanding the Seeds

The seeds of wild bananas are often large, black or brown, and incredibly hard, more like pebbles than what one might think of as edible seeds. But within these stone-like shells lies valuable nutritional content, including plant proteins and essential fats. In areas where access to cultivated food crops is limited, wild plants such as these play an important role in local diets, especially as supplemental food sources during the changing seasons. Edibility, however, does not mean the seeds can be eaten raw. Much like other wild plant seeds and nuts, they require processing to make them digestible and safe. The seeds are rarely consumed on their own; instead, they are part of a broader knowledge system of foraging, processing, and cooking that helps unlock their hidden benefits.

Traditional Preparation Techniques

Local knowledge in Medog, especially among communities like the Lhoba people, includes a range of techniques for preparing wild banana seeds. While detailed written records are rare, especially in English sources, ethnobotanical surveys and oral histories reveal some common steps.

Typically, when the wild bananas are harvested, the seeds are extracted from the fruit and thoroughly cleaned. The raw seeds are extremely hard and difficult to chew, so, they are often roasted over fire or boiled for extended periods to soften the outer shell and reduce any naturally occurring bitterness. In some cases, the seeds are crushed or ground using traditional stone tools into a coarse paste or powder, which is then mixed with other foods such as root vegetables, wild grains, or herbs.

Cooking the seeds not only makes them easier to digest but may also neutralize certain compounds that are unpalatable or mildly toxic when raw. The resulting mixture can be eaten as a type of gruel, porridge, or side dish. In harsher seasons, such preparations are especially valuable, offering a source of sustenance when other food supplies are low.

Cultural and Environmental Significance

The use of wild banana seeds in Medog is not just a matter of survival or sustenance. It reflects a deep connection between local people and their environment, a traditional knowledge system in which even the most unlikely plants are recognized for their potential value. In recent years, researchers have begun documenting this knowledge more systematically, aiming to preserve it as younger generations move away from traditional lifestyles. Moreover, the wild bananas of Medog are a biological treasure. They represent ancient genetic diversity, untouched by human domestication. Botanists studying these plants believe they could hold the key to improving banana crops worldwide, especially in terms of disease resistance and climate resilience.

THE WALL

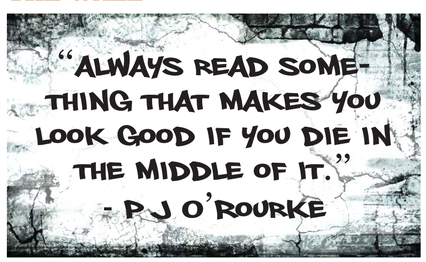

BABY BLUES By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS By Jerry Scott & Jim Borgman

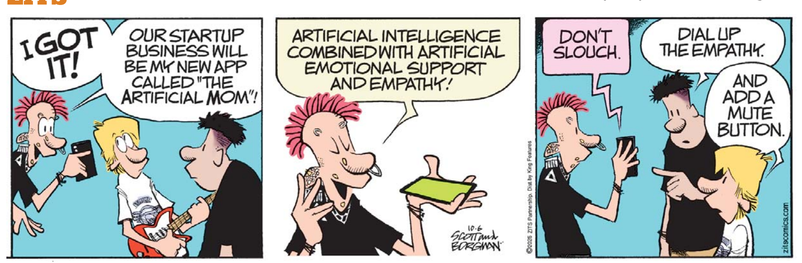

राजस्थान का टॉप-25 वांछित अपराधी धनसिंह उर्फ धन सा गिरफ्तार

दो देसी पिस्टल, एक 12 बोर बंदूक, छह जिंदा कारतूस और तीन हैंड ग्रेनेड बरामद

सराना/सरवाड़, (निसं)। अजमेर पुलिस ने राज्यस्तरीय विशेष अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए टॉप-25 वांछित हार्डकोर अपराधी धन सिंह उर्फ धन सा उर्फ धनु प्रताप सिंह को गिरफ्तार किया है।

धनसिंह पर 35 हजार का इनाम घोषित था, जिसमें 25 हजार रुपये अजमेर एसपी और 10 हजार रुपये जयपुर ग्रामीण एसपी द्वारा घोषित किए गए थे। आरोपी के खिलाफ अजमेर, फूलियाकलां, सरवाड़, भिनाय, केकड़ी, जयपुर, मदनगंज, नसीराबाद, बिजयनगर, सराना के थानों में 51 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। इनमें फायरिंग, हत्या का प्रयास, फिरौती के लिए अपहरण, अवैध हथियार तस्करी, लूट और धमकी जैसे गंभीर अपराध शामिल हैं।

पुलिस के अनुसार धनसिंह सराना थाना का घोषित हिस्ट्रीशीटर और हार्डकोर अपराधी है। गिरफ्तारी के दौरान उसने भागने का प्रयास किया और पुलिसकर्मी को टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद आरोपी को दबोच लिया। तलाशी में दो देसी पिस्टल, एक 12 बोर बंदूक, छह जिंदा कारतूस और तीन हैंड ग्रेनेड बरामद किए गए। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आयुध अधिनियम और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। जांच में यह पता लगाया जा रहा है कि वह हथियारों की खरीद-फरोख्त किस नेटवर्क से कर रहा था। इस कार्रवाई का नेतृत्व आईजी राजेन्द्र सिंह, एसपी वंदिता राणा, एएसपी श्योराजमल मीणा, और डीएसपी हर्षित शर्मा के निर्देशन में किया गया।

पुलिस ने कुख्यात अपराधी धन सिंह को गिरफ्तार कर हथियार बरामद किये।

- धनसिंह पर 35 हजार का इनाम घोषित था, जिसमें 25 हजार रुपये अजमेर एसपी और 10 हजार रुपये जयपुर ग्रामीण एसपी द्वारा घोषित किए थे
- आरोपी के खिलाफ अजमेर, फूलिया कलां, सरवाड़, भिनाय, केकड़ी, जयपुर, मदनगंज, नसीराबाद, बिजयनगर, सराना के थानों में 51 प्रकरण दर्ज हैं

खरीदसुदा मकान पर जबरन कब्जा, दो गिरफ्तार

जालोर, (कासं)। जालोर शहर के निकट केशवना गांव में एक व्यक्ति के खरीदसुदा मकान पर कैलाश, उसकी पत्नी व उसकी माता ने अपना हक जताते हुए जबरन ताले आदि तोड़कर कब्जा करने की सूचना पर बाहर राज्य व्यापार कर रहे मकान मालिक नवीन कुमार ने जालोर पहुंचकर चोरी का मामला दर्ज करवाया। मामला दर्ज होने के बाद बिशनगढ़ पुलिस ने जबरन कब्जा करने वालों के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज होने पर कैलाश की पत्नी व उसकी माता को गिरफ्तार कर लिया, जबकि कैलाश अभी तक फरार चल रहा है, लेकिन जमानत होने के बाद वापस मकान पर कब्जा कर बैठ गये।

जालोर के निकट केशवना में नवीन कुमार पुत्र चम्पालाल निवासी केशवना के पिता चम्पालाल पुत्र सुमेरमल ने केशवना गांव के आबादी क्षेत्र में 2882 वर्गफीट का आवासीय मकान कानाराम पुत्र सवाराम से 4 जनवरी 2006 को खरीद किया था। उक्त मकान कानाराम का स्वयं पट्टासुदा व कब्जासुदा होने से उन्होंने अपनी स्वैच्छा से चम्पालाल को उक्त मकान बेचान किया। मकान बेचान करने से आज दिनांक तक चम्पालाल के बाद उनके पुत्र नवीन के कब्जे में उक्त मकान है। लेकिन बेचानकर्ता कानाराम की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी, उनके पुत्र कैलाश, कैलाश की पत्नी व कानाराम की पुत्रियों के मन में लालच आया कि उक्त मकान उनके

- मकान मालिक ने जालोर पहुंचकर मामला दर्ज करवाया

पिता द्वारा बेचान करने के बाद खरीददार नवीन कुमार से उक्त मकान के बदले रुपये हड़पने की नियत से दिपावली महोत्सव के दौरान करीब 18 व 20 अक्टूबर के दौरान उक्त लोगों ने मकान के ताले तोड़कर मकान में रखा सामान चोरी कर ले गये तथा उक्त मकान पर कब्जा कर लिया। इसकी सूचना उक्त मकान मालिक के नजदीकी जर्नादनसिंह उर्फ जनकसिंह ने नवीन कुमार को दी। उसने जालोर आकर पुलिस थाना बिशनगढ़ में रिपोर्ट दी कि उनके पिता का खरीदसुदा मकान के ताले तोड़कर जबरन अंदर घुस कर सामान आदि चुराकर ले गये तथा उनके मकान पर कब्जा कर लिया। उक्त रिपोर्ट पर पुलिस चोरी के आरोपियों को गिरफ्तार करने गई। उस दौरान कैलाश फरार हो गया तथा उसने माता, पत्नी व अपनी बहनों को पुलिस के आगे किया। पुलिस ने चोरी की अभियुक्ता ललिता पत्नी कैलाश कुमार व उसकी माता शांतिदेवी पत्नी कानाराम को गिरफ्तार किया। पुलिस ने दोनों को न्यायालय में पेश किया, लेकिन न्यायालय से जमानत मिलने के बाद पुन: उक्त लोगों ने जबरन उक्त मकान पर कब्जा जमा लिया।

मकान मालिक ने बताया कि केशवना गांव के आबादी क्षेत्र में मेरे पिता चम्पालाल ने कानाराम से आज से करीब बीस साल पहले मकान जरिये रजिस्ट्री के खरीद किया था। धनतेरस के दौरान अवकाश का फायदा उठाते हुए मेरे उक्त मकान को हथियाने के लिए कानाराम के पुत्र कैलाश, उसकी माता, उसकी पत्नी ने मकान में रखा सामान चुराकर ले गये। जिसकी रिपोर्ट मैंने पुलिस थाना बिशनगढ में दी। उक्त मकान मेरे पिताजी चम्पलाल ने खरीद किया, तब डीडी से राशि का भुगतान किया है। वहीं रजिस्ट्री के गवाह भी कह रहे है कि उक्त मकान कानाराम ने चम्पालाल को बेचान कर दिया। इसके बाद भी उक्त लोग मेरे मकान को हथियाने के लिए जबरन कब्जा जमाये बैठे हुए है।

पुलिस थाना बिशनगढ़ के थानाधिकारी निम्बसिंह ने बताया कि केशवना में एक बंद मकान में चोरी होने की रिपोर्ट प्राप्त होने पर गिरफ्तार करने गये थे। मौके पर कैलाश मौजूद नहीं था, उसकी पत्नी, माता व बहनों ने चोरी के अभियुक्त ललिता पत्नी कैलाश व शांतिदेवी पत्नी कानाराम को गिरफ्तार करने के दौरान विरोध किया। जिसके बाद पुलिस चोरी की अभियुक्त को गिरफ्तार का न्यायालय में पेश किया। पुलिस द्वारा किसी प्रकार से जबरन कब्जा खाली करने का प्रयास नहीं किया गया है। वहीं रजिस्ट्री दस्तावेज के आधार पर मकान नवीन कुमार का है। महिलाओं के साथ मारपीट करने का सोशल मीडिया पर जारी वीडियो भ्रामक है।

कोटपूतली : सैनी विकास संगठन के तत्वाधान में कस्बे के ढाणी दीपावाली स्थित श्री शिव मंदिर में रविवार को देवउठनी एकादशी पर 6वां सामूहिक विवाह सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर 9 जोड़ों का विवाह करवाया गया। जिलाध्यक्ष बबलू बबेरवाल ने बताया कि समारोह में माली महासभा प्रदेशाध्यक्ष ताराचंद गहलोत, भाजपा जयपुर देहात उत्तर के जिलाध्यक्ष सुरेश बादलीवाल, भवानी शंकर माली व पुखराज आदि ने अतिथि के रूप में शिरकत की। प्रधान संरक्षक देवीसहाय सैनी ने बताया कि राजमार्ग स्थित मोरीजावाला धर्मशाला में गौरवा कार्यक्रम कर बारात विवाह स्थल पहुंची, जिसके बाद पण्डितों द्वारा 9 जोड़ों का मंत्रोच्चार के साथ विवाह सम्पन्न करवाया।

जालोर में कैंडिडेट्स के मेटल लगे बटन काटे

जालोर, (कासं)। ग्रामीण विकास अधिकारी के पद को लेकर रविवार को जालोर जिले में 11 सेंटरों पर परीक्षा आयोजित हुई। परीक्षा में 2052 अभ्यर्थी बैठे। वहीं परीक्षा केन्द्र पर बायोमैट्रिक के बाद ही प्रवेश दिया गया। कई केंद्रों पर अभ्यर्थियों को मेटल बटन लगे कपड़ों के कारण रोका गया, जिन अभ्यर्थियों के कपड़ों में मेटल बटन थे, उन्हें बटन काटने के बाद ही प्रवेश दिया गया। 10 बजे के बाद सेंटर के गेट पूरी तरह बंद कर दिए गए। जालोर जिले में शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा सम्पन्न हुई। राजस्थान में ग्रामीण विकास अधिकारी के 850 पदों के लिए रविवार को एक ही पारी में परीक्षा आयोजित हुई। परीक्षा सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक हुई।

मंगरोप एनीकट स्थल का निरीक्षण

भीलवाड़ा, (निसं)। बनास नदी में प्रदूषण संबंधी शिकायत प्राप्त होने पर जिला कलेक्टर जसमीत सिंह संधू के निर्देशानुसार राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, क्षेत्रीय कार्यालय भीलवाड़ा के अधिकारियों ने मंगरोप एनीकट स्थल का निरीक्षण किया, ताकि वास्तविक स्थिति का आंकलन किया जा सके।

इस निरीक्षण में क्षेत्रीय अधिकारी दीपक धनेटवाल, अधीक्षण वैज्ञानिक अधिकारी महेश कुमार सिंह एवं सहायक पर्यावरण अभियंता जितेन्द्र सिंह मीणा सम्मिलित रहे। क्षेत्रीय अधिकारी दीपक धनेटवाल ने बताया कि मौका निरीक्षण के दौरान मंगरोप एनीकट में पानी का बहाव काफी तेज पाया गया। सामान्यत: किसी इकाई द्वारा छोड़े गए दूषित जल में टी.डी.एस. का मान 40,000 से 1,00,000 पी.पी.एम. के आसपास रहता है तथा साफ पानी में घुलने के पश्चात भी यह मान 3,000 पी.पी.एम. से कम नहीं होता। इसके अतिरिक्त, दूषित जल के साफ पानी में मिलने से पानी का रंग सामान्यत: गहरा भूरा अथवा काला हो जाता है। निरीक्षण के समय मंगरोप एनीकट पर बहते पानी का रंग मटमैला पाया गया। टीम द्वारा विभिन्न स्थानों पर पानी के टी.डी.एस. मान की जांच की गई, जो सामान्यत: 350 से 400 पी.पी.एम. से अधिक किसी स्थान पर नहीं पाया गया। अत: प्रथमदृष्टया पानी के रंग एवं टी.डी.एस. मान के आधार पर यह प्रतीत होता है कि उक्त पानी में औद्योगिक अपशिष्ट नहीं है।

बनास नदी में युवक डूबा

टोंक, (निसं)। जिले के अरनिया नील गांव के पास बनास नदी में एक युवक के डूबने से क्षैत्र में हड़कंप मच गया। सूचना पर पंहुची एसडीआरएफ टीम द्वारा तलाश कार्य प्रारम्भ कर रेस्क्यू ऑपरेशन जारी हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार युवक राकेश निवासी थली गांव की अरनियाल नील स्थित बनास नदी में डूबने की सूचना पर एसडीआरएफ टीम व पुलिस प्रशासन मौके पर पहुंची और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। टीम ने बताया कि बीसलपुर बांध के गेट खुले होने के कारण नदी का बहाव काफी तेज है, जिससे तलाश में दिक्कतें आ रही हैं। फिलहाल एसडीआरएफ टीम लगातार लापता युवक की तलाश में जुटी हुई है।

डिजिटल कांटे से छेड़छाड़ करने का आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। मंडाना पुलिस टीम ने डिजिटल कांटे से छेड़छाड़ कर वजन बढ़ाकर ठगी करने के दर्ज मामले में आरोपी को उत्तरप्रदेश से गिरफ्तार किया है। ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि 23 जुलाई को फरियादी ध्याता जैन ने मंडाना थाने में रिपोर्ट दी।

फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि मंडाना में उसकी तन्मय ध्याता स्टील कोनकास्ट लिमिटेड नाम की फैक्टरी है, जिसमें सरिया बनाने का काम होता है। रिपोर्ट में कहा कि फैक्टरी में आने वाले ट्रको का वजन अंदर लगे कांटे पर ही किया जाता है। ग्रामीण एसपी ने बताया कि रिपोर्ट में कहा कि 22 जुलाई की रात्रि को एमपी नम्बर का एक ट्रक फैक्टरी में आया, जिसमें ट्रक चालक कमल लाधी उर्फ गुड्डू व उसके साथ तीन अन्य व्यक्ति थे, जिसमें से दो व्यक्ति फैक्टरी के गेट के बाहर ही उतर गये, अंदर ट्रक चालक कमल और मेघराज दोनों ट्रक लेकर फैक्टरी में आये तथा ट्रक चालक ट्रक को कांटे पर खड़ा करके तोल करवा रहा था लेकिन रसीद लिये बिना ही चालक ने ट्रक को नीचे उतारकर साईड में लगा दिया।

रिपोर्ट में कहा कि तोल कर्मचारी की जब नजर पड़ी तो देखा कि एक व्यक्ति तोल करने वाले कांटे के नीचे था तथा कांटे से छेड़छाड़ कर रहा था। ग्रामीण एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। मामले को गंभीरता से लेते हुए टीम गठित की गई। गठित टीम ने मामले में अनुसंधान करते हुए आरोपियों के संभावित स्थानो पर दबिश दी और जिला बुलंदशहर उत्तरप्रदेश के कल्याणपुर निवासी मेघराज सिंह (25) को जिला बुलंदशहर के उत्तरप्रदेश से डिटेन कर प्रकरण में गिरफ्तार किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि मामले में फरार चल रहे आरोपी मोहम्मद शेरू, आमिन एवं विक्रम योगी की तलाश जारी है।

ग्रामीण एसपी ने बताया कि पूछताछ के दौरान मामले में सामने आया कि आरोपियों द्वारा स्क्रेब को ट्रक में लोड करके स्टील प्लांटों में भिजवाया जाता है तथा आरोपी जिस भी स्टील प्लांट में स्क्रैब का माल भिजवाते हैं, उसमें प्लांनिग करके प्लांट में लगे हुए तोल कांटे में चिप लगाकर उसके वजन को बढ़ाकर प्लांट मालिक को नुकसान पहुंचा कर धोखाधड़ी करते हैं। ग्रामीण एसपी ने बताया कि मामले में सामने आया कि आरापियों द्वारा मंडाना मे स्थित तन्मय ध्याता स्टील प्लांट में लगे तोल कांटे में चिप लगाकर उनके द्वारा लाये गये स्क्रैब से भरे हुए ट्रक का वजन रिमोट के माध्यम से बढ़ाकर ठगी की गई थी। मामले में फरार चल रहे शेष आरोपियों की तलाश जारी है।

महासंघ की संघर्ष चेतना यात्रा पांच से

बीकानेर, (निसं)। 5 नवंबर से संघर्ष चेतना यात्रा शुरू बीकानेर अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ जिला इकाई की बैठक रविवार को जिला अध्यक्ष पृथ्वीराज लेघा की अध्यक्षता संपन्न हुई। बैठक में महासंघ की 11 सूत्री मांग पत्र के समर्थन में प्रांतीय नेतृत्व द्वारा प्रदेश में संचालित संघर्ष चेतना यात्रा को सफल बनाने पर चर्चा की। संघर्ष चेतना यात्रा प्रांतीय महामंत्री महावीर सियाग के नेतृत्व में सीकर, झुंझुनू, हनुमानगढ़ , गंगानगर, सूरतगढ़ होते हुए 7 नवंबर को बीकानेर पहुंचेगी तथा 8 नवंबर को बीकानेर से नागौर के लिए प्रस्थान करेगी। जिला मंत्री मनोज सुथार ने बताया कि 8 नवंबर को कर्मचारी महासंघ की बैठक आयोजित की जाएगी जिसे प्रांतीय कर्मचारी नेता महावीर सिहाग, प्यारेलाल चौधरी , तेजसिंह राठौड़, महावीर बुरड़क, धर्मेंद्र फोगाट, अशोक कलवानिया आदि नेता संबोधित करेंगे।

विवाहिता से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

नवलगढ़, (निसं)। स्थानीय पुलिस ने इंस्टाग्राम पर दोस्ती कर विवाहिता के अश्लील फोटो और वीडियो को वायरल करने के नाम पर दुष्कर्म करने और ब्लेकमेल करने के आरोपी को गिरफ्तार किया है।

नवलगढ़ सीआई राधेश्याम सांखला ने बताया कि मुकुंदगढ़ थाने में एक विवाहिता ने मामला दर्ज करवाया था कि उसकी शादी राजस्थान के ही एक दूसरे जिले में हुई थी। उसकी इंस्टाग्राम पर 22 वर्षीय मोहम्मद शोयब अली पुत्र वासिद अली के साथ दोस्ती हुई थी। दोस्ती होने के बाद दोनों ईमो एप पर बातचीत करने लगे। इस दौरान ही आरोपी ने उसके अश्लील फोटो और वीडियो बना लिए। जिन्हें वायरल करने की धमकी देता रहा। जिस वक्त दोस्ती हुई, उस वक्त मोहम्मद शोयब दुबई में था। कुछ महीने पहले वह दुबई से आया और उसने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर उसके साथ दुष्कर्म किया। बाद में इन्हीं फोटो और वीडियो को उसके ससुराल में रिश्तेदारों में वायरल कर दिए। एसपी बृजेश ज्योति उपाध्याय ने मामले की जांचसीआई राधेश्याम सांखला को सौंपी।

नशा मतलब-परिवार के सुखों का अंत : चम्पालाल महाराज

राजगढ़ धाम पर नशा मुक्ति हेतु चलाए गए सात दिवसीय विशेष अभियान का समापन, रैली निकाली

अजमेर, (निसं)। जिले के सुप्रसिद्ध सर्वधर्म धार्मिक स्थल श्री मसाणिया भैरव धाम राजगढ़ पर रविवारीय मेले में नशा मुक्ति को लेकर राज्य सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम व मसाणिया भैरव धाम के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को नशा मुक्ति हेतु चलाए गए सात दिवसीय विशेष अभियान का समापन रैली के साथ हुआ।

धाम के प्रवक्ता अविनाश सेन ने बताया कि मुख्य उपासक चम्पालाल महाराज, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिडला के ओएसडी राजीव दत्ता व मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ज्योत्सना रंगा ने हरी झंडी दिखाकर नशामुक्ति महाअभियान रैली की शुरुआत की। रैली चक्की वाले बाबा के मंदिर से शुरू होकर राजगढ़ गांव में से तेजा चौक होते हुए मुख्य मन्दिर पहुंची। रैली में श्रद्धालुओं ने 'नशा मुक्ति के नारों नशा मुक्त देश बनाना है, नशे को जड़ से मिटाना है और जन-जन तक यह संदेश पहुंचाना है, नशे को हाथ नहीं लगाना है' से भैरव धाम को गुंजायमान कर दिया।

रैली को सम्बोधित करते हुए धाम के मुख्य उपासक चंपालाल महाराज ने कहा कि राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य विभाग समाज में सामाजिक चेतना जगाने का कार्य कर रहा है। महाराज ने कहा कि नशा करने वाला परिवार व समाज पिछड़ जाता है। नशा काल व विनाश का कारण बनता है। नशे का अत्यधिक सेवन परिवार को सर्वनाश की ओर ले जाता है। नशे के ज्यादा सेवन से दुर्घटनाओं व कैंसर जैसी बीमारियों से अधिकतर लोग असमय अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं। युवा पीढ़ी के कई युवा जिनको नशे की लत लग चुकी है, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय है। दुर्घटनाओं में अपंगता व मृत्यु, समाज में गरीबी व भयंकर बीमारियों से अकाल मृत्यु का मूल कारण नशा ही होता है, इसलिये नशे का त्याग अवश्य ही करना चाहिये।

नशामुक्ति महाअभियान रैली को सम्बोधित करते हुए राजीव दत्ता ने श्रद्धालुओं से कहा कि नशामुक्त समाज को बढ़ावा देने के लिए चम्पालाल महाराज द्वारा पिछले कई वर्षों से नशामुक्ति महाअभियान चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत श्रद्धालुओं को नशा मुक्त करने हेतु प्रेरित किया जाता है व उनसे संकल्प दिलाया जाता है तथा नशे से मुक्त किया जाता है और नशामुक्ति महाअभियान राजगढ़ भैरव धाम की पहचान बन चुका है। चम्पालाल महाराज द्वारा चलाए जा रहे महाअभियान की जितनी प्रशंसा की जाए कम हैं। उन्होंने इस महाअभियान को राष्ट्रीय स्तर पर शुरू करने की जरूरत बताई। उन्होंने देश के युवा, महिलाओं व समाज के सभी जिम्मेदार नागरिकों को आव्हान करते हुए कहा कि हम सभी चम्पालाल महाराज के नशामुक्ति महाअभियान की मुहिम व सामाजिक सरोकार में भागीदारी निभानी चाहिए। रैली को डॉ. ज्योत्सना रंगा, डॉ. चरण सिंह व डॉ. पूनिता जैफ ने भी नशे से होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी देकर समझाया। इस अवसर पर पूर्व अति पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र सिंह भाटी व पूर्व सभापति सुरेन्द्र सिंह शेखावत भी उपस्थित रहे। नशामुक्ति महाअभियान में हजारों श्रद्धालुओं ने अपने दोनों हाथ उठाकर जीवन में दोबारा नशा नहीं करने की शपथ ली। इस रैली व महाअभियान में अजमेर मेडिकल कॉलेज के नशामुक्ति विशेषज्ञ डॉ. चरण सिंह, डॉ. रामस्वरूप, जिला सलाहकार डॉ. पूनिता जैफ, जिला महामारी रोग विशेषज्ञ मुकेश खोरवाल, कुलदीप तंवर तथा भैरव भक्त मण्डल के ओमप्रकाश सेन, रमेश सेन, राहुल सेन, अविनाश सेन, पदमचन्द जैन, अनिल कटारिया, सुनील रांका, दिलीप राठी, राजकुमार चावड़ा, सतीश सेन, कमल शर्मा, विजय भवानीखेड़ा आदि का विशेष सहयोग व योगदान रहा।

भैरव धाम राजगढ़ पर सात दिवसीय विशेष अभियान के तहत रैली निकाली।

- नशा मुक्ति अभियान के तहत हजारों श्रद्धालुओं ने नशा नहीं करने की शपथ ली

बुजुर्ग के साथ पड़ोसी ने मारपीट की

झुंझुनूं, (निसं)। शहर के भैंरूजी मंदिर के पास खटीकों का मोहल्ला में एक 82 साल के बुजुर्ग के साथ पड़ौसी युवक ने ही शराब के नशे में बेरहमी से मारपीट की। घायल बुजुर्ग अब दो दिनों से बैड पर है, लेकिन उसे संभालने वाला भी कोई नहीं है। यही नहीं बुजुर्ग की हालत इतनी खराब है कि वह कहीं जाकर अपनी पीड़ा भी बयां नहीं कर सकता।

- घायल बुजुर्ग अब दो दिनों से बैड पर है, संभालने वाला भी कोई नहीं है

बुजुर्ग की पत्नी सरस्वती ने बताया कि दो दिन पहले उनके पति बनवारीलाल घर के बाहर ही कुर्सी पर बैठे थे। तभी पड़ोसी मुखराम आया और शराब के नशे में बनवारीलाल से पैसे मांगने लगा, लेकिन बनवारीलाल ने मना किया तो बनवारीलाल को कुर्सी से गिरा दिया और फिर लातों से ही बुरी तरह मारपीट की। पास के लोगों ने छुड़वाया। तब जाकर बनवारीलाल की जान बची। सरस्वती ने बताया कि पड़ोसियों ने पुलिस को दो-तीन फोन किए, लेकिन पुलिस ने फोन नहीं उठाया। बाद में मोहल्ले में ही कंपाउडरी का काम करने वाले एक व्यक्ति ने आकर चोटों पर पट्टी की। तब से दोनों पति-पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल है। सरस्वती ने बताया कि चार बेटे हैं। एक का निधन हो चुका है। तीन बेटों में कोई भी संभालने नहीं आता। हालत बहुत बुरी हो चुकी है। क्षेत्र के लोगों ने भी इस मामले में कार्रवाई की मांग की है।

कोलासर में शौर्य जाट शोध संस्थान का उद्घाटन

समाज के इतिहास से जुड़ी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई

समारोह में अतिथियों को बुक्स भेंट की गई।

सुजानगढ़, (कासं)। निकटवर्ती कोलासर में रविवार को शौर्य जाट शोध संस्थान का उद्घाटन हुआ। संस्था के संस्थापक रामनिवास जाट, लेखक व क्रान्तिकारी विचारक भीमसिंह आर्य, राष्ट्रीय जाट महासभा प्रदेश अध्यक्ष धमेंद्र किलक, भारतीय किसान संघ (सरपंच) प्रदेश अध्यक्ष तुलछाराम कुकना, गौरवशाली सैनानी संघ अध्यक्ष रतनलाल ढाका, पूर्व अध्यक्ष नेमीचन्द जाट ने दीप प्रज्वलन के बाद फीता काटकर संस्थान का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जाट समाज से जुड़ी इतिहास की पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

- कार्यक्रम में समाज से कुरीतियां मिटाने का किया आव्हान

कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि संस्थान समाज के उत्थान में मील का पत्थर साबित होगा। सभी ने इस प्रयास की सराहना की। जाट महासभा प्रदेश अध्यक्ष धमेन्द्र किलक ने शेखावाटी क्षेत्र का पहला संस्थान स्थापित करने के लिए रामनिवास जाट की सराहना करते हुए कहा कि इन दुर्लभ पुस्तकों से समाज के युवाओं को समाज और आज महान हस्तियों के बारे में सटीक जानकारियां मिलेगी। तुलछाराम राम कूकणा ने लोगों से संस्थान में अपना पूरा योगदान देने का आव्हान किया। संस्थान के संस्थापक रामनिवास जाट ने उद्देश्यों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि संस्थान का मुख्य कार्य जाट समाज के गौरवशाली इतिहास की जानकारी देना है। साथ ही शोध को बढ़ावा देना, शोधकर्ताओं को किताबों सहित तकनीक से जोड़कर सुविधाएं मुहैया करवाना, विश्वविद्यालयों में जाट शोध संस्थान विभाग स्थापित करवाना, पाठ्य पुस्तकों में जाट इतिहास शामिल करवाना, समाज में फैली कुरुतियों मिटाना संस्थान का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

संक्षिप्त

पुलिस जवानों को दी सतर्कता बरतने की हिदायत

कोटपूतली । जयपुर रेंज आईजी के निर्देष पर जिला कोटपूतली-बहरोड़ पुलिस द्वारा चलाये जा रहे लेन ड्राईव अभियान के तहत कार्य कर रहे पुलिस जवानों को डीएसपी राजेन्द्र कुमार बुरड़क व सरूण्ड थानाधिकारी बाबूलाल मीणा ने सतर्कता बरतने की हिदायत दी। इसको लेकर डीएसपी व थानाधिकारी ने रविवार को हाईवे पर जाकर लाईन ड्राइवरों व पुलिस जवानों से मुलाकात भी की। इस दौरान पुलिस अधिकारियों ने सड़क पर सतर्क रहकर कार्य करने तथा वाहन चालकों के चालान करते समय सावधानी बरतने के निर्देश दिये। साथ ही कहा कि सड़क सुरक्षा में पुलिस की भूमिका अहम हैं। इसलिये प्रत्येक जवान को ट्रैफिक नियमों का पालन करवाते हुये स्वयं को भी पूरी सतर्कता रखनी हैं। अधिकारियों ने मौके पर मौजूद जवानों से संवाद कर आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिये।

86 हजार रुपए भेंट

मानपुरा माचैड़ी । रुण्डल स्थित श्री श्याम बाबा मंदिर में रविवार को किन्नर समाज ने मंदिर की व्यवस्थाओं के लिए 86 हजार रुपए भेंट किए। किन्नर समाज की गुरु दुर्गा माई शाहपुरा, गुरु फयाज बड़ा गांव जाहोता, राधिका बाई मनोहरपुर ने मन्दिर साउंड के लिए 81000 नगद राशि दी और 5100 रुपए श्याम बाबा श्रृंगार के लिए भेंट किए।साथ ही श्री श्याम सेवा समिति मन्दिर कमेंटी में जुड़कर 1100 रुपए दिए व प्रति माह देने के लिए भी कहा। इस दौरान समिति के अध्यक्ष नानूराम बाड़ीगर, महादेव सैनी, बाबू गोयल ,मुक्तिलाल दगड, रामसिंह खडोत्या , महेश सैनी, कैलाश कामलोडिया, हरफूल बाटोटिया, नवल अग्रवाल, भींवाराम सैनी, शंकर जांगिड, विनोद गंडवाल, प्रधान पुजारी हरीओम शर्मा आदि लोग मौजूद थे।

भजन एवं सत्संग का आयोजन

राजगढ़ । कस्बे के चौपड़ बाजार स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर में देव उठनी एकादशी प्रदोष व्रत के दिन दोपहर भजन एवं सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें महिलाओं ने एक से बढ़कर एक रोचक प्रस्तुतियां से समूचे माहौल को भक्तिमय कर दिया। जगन्नाथ जी महाराज और खाटू श्याम बाबा का सत्संग भजन का आयोजन हुआ। भजन सत्संग कार्यक्रम में रामबाबू छिपी और मीनू खूंटे टा ने श्री गणेश जी का भजन गाकर के सत्संग कार्यक्रम को शुभारंभ किया। सैकडों भक्त महिलाओं ने मंदिर में बाबा श्याम का जयकारा लगाकर भजन गाए। छोटी-छोटी गईया, छोटे छोटे ग्वाल भजन, मेरो श्याम मुरारी, कीर्तन की है रात आदि , भजन गाकर भक्तो को मंत्र मुग्ध किया। इस मौके पर मंदिर महंत पूर्ण दास,पंडित मदन मोहन शास्त्री पंडित रोहित शर्मा, गायत्री देवी, शीला खूंटेटा, मीनू खूंटेटा, प्रियंका खूंटेटा आदि मौजूद रहे।

जीवित प्रमाण-पत्र का फॉर्म दिए

दूदू । राजस्थान पेंशनर समाज उप शाखा दूदू की मासिक बैठक उप शाखा अध्यक्ष अशोक कुमार शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें सभी पेंशनर साथियों को जीवित प्रमाण पत्र का फॉर्म दिए गए। सभी इस फॉर्म पर अपने हस्ताक्षर करके उच्च अधिकारियों के हस्ताक्षर करके वापस पेंशनर कार्यालय में जमा कराए। उप शाखा दूदू में दीपावली स्नेह मिलन धूमधाम से बनाया गया। मीटिंग में संरक्षक हाजी मदार बक्श नागौरी सीताराम गर्ग वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम प्रकाश चौहान, मंत्री रघुनंदन बाहेती, मुख्य सलाहकार हाजी अब्दुल हकीम मंसूरी, कोषाध्यक्ष कैलाशचंद भाटी, भंवर लाल धाभाई, विशेष आमंत्रित सदस्य सावल सिंह, अशोक पारीक, मीडिया प्रभारी प्रमोद नागर वाल, दुर्गा लाल सेन, ओम प्रकाश शर्मा, हाजी नबी बक्श मंसूरी, दयाल राम माली, मूलचंद माली, अनंत प्रकाश व्यास, हाजी रफीक महावत, मिश्रीलाल वर्मा, मोतीलाल शर्मा, भंवर लाल दायमा, जगमोहन सिंह सहितअन्य कहीं पेंशनर उपस्थित रहे ।

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को नहीं होगी समस्या : नरेशकुमार गुर्जर

निवाई। श्री देवनारायण मंदिर ट्रस्ट के नवनिर्वाचित अध्यक्ष नरेश गुर्जर, महामंत्री रतनदीप गुर्जर व कोषाध्यक्ष जगदीश बोकण का आरडी गुर्जर के नेतृत्व में 51 किलो की माला पहनाकर स्वागत किया गया। गुर्जर नेता भूणाराम गुर्जर व दयाशंकर पोसवाल ने बताया कि सम्मान समारोह में ट्रस्ट अध्यक्ष

- **श्री देवनारायण मंदिर ट्रस्ट के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को किया सम्मानित**

नरेश गुर्जर ने कहा कि मंदिर के विकास से जुड़े सभी निर्णयों में सबकी राय ली जाएगी। उन्होंने मंदिर हित में आवश्यक कदम उठाने और ट्रस्ट को शिक्षा से जोड़ने आव्हान किया।

उन्होंने आश्वासन दिया कि मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि भगवान श्री देवनारायण को 36 कॉम के लोग मानते हैं और सभी समाज के लोग उनकी पूजा अर्चना करते हैं। कार्यक्रम का मंच संचालन मुकेश कुटखा ने किया।

निवाई श्री देवनारायण मंदिर ट्रस्ट के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को 51 किलो की माला पहनाकर स्वागत करते हुए।

इस अवसर पर शंकरलाल मीणा, भामाशाह सीताराम पोसवाल, संग्रामसिंह मसूदा, पूर्व प्रधान रामचन्द्र गुर्जर, सुरेश डोई, मांगीलाल डोई, ट्रस्ट के पूर्व महामंत्री एडवोकेट सवाईभोज गुर्जर, महेन्द्र कसाणा, मुरलीराम गुर्जर, नादान सिंह गुर्जर, हंसराज फागणा, भेरूलाल गुर्जर, शिवराज लांगडी हरभांवता, रूपसिंह अधाणा, राजेन्द्र चैयरमेन, हरिशंकर खटाणा मण्डालिया, दयाशंकर पोसवाल, मनमोहन फागणा, हजारीलाल, गणेश चेची, हनुमान छावडी, कांजीराम गुर्जर, कैलाश अवाना, शिवराज सरपंच थली, मोहन सरपंच, शंकर छैपट, मुकेश कुटखा, महावीर फौजी, रमेश डीआर, श्योजी हिंगोनिया, राजेश सेदरिया, राजेश चाकसू सहित कई लोग उपस्थित थे।

प्रभात फेरी का स्वागत

देवली । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री गुरु नानक देव जी की जयंती के उपलक्ष्य में अनेक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। गुरु के प्रकाश पर्व पर गुरु कि साध संगत द्वारा प्रतिदिन प्रभात फेरी शहर भर में निकाली जा रही है । गुरु के प्रकाश उत्सव पर गुरु घर के सेवक सनी सेठी, निर्मल सिंह आनंद मोहन बीलोची विजय नवलानी, लालचंद धर्मानी सहित कई सेवकों ने प्रभात फेरी को अपने अपने घर बुलाकर उनका भव्य स्वागत किया और सुख समृद्धि की अरदास करवाई। जानकारी के अनुसार इस अवसर पर गुरुद्वारा दरबार में श्री गुरु ग्रथ साहिब जी के समक्ष सुखमणि साहब के पाठ की लड़ियां चल रही है । इस मौके पर देवली गुरुद्वारा के ग्रंथि त्रिलोक सिंह ने जानकारी में बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव पर महिला साध संगत के द्वारा गुरुद्वारा मे सुखमणि साहब के पाठ किए जा रहे हैं। वही सुखमणि साहब पाठ के उपरांत ठांथि त्रिलोक सिंह द्वारा कीर्तन दरबार सजाया जा रहा है। इस मौके पर ग्रथि द्वारा गुरु जी की जीवनी पर प्रकाश डाला जा रहा है। एवं संगत को गुरु जी के मार्गदर्शन पर चलने का संदेश दिया जा रहा है। गुरु पर्व के इस उपलक्ष पर पिछले 7 दिनों से प्रात: काल शहर भर में गुरु की संगत द्वारा प्रभात फेरी निकाली जा रही हैं।

मांगलिक कार्य की शुरुआत

दौसा। जिले के नाँगल राजावतान कस्बे में पारंपरिक तरीके से एकादमशी पर देव जगाए गए साथ ही पर्व भी मनाया गया। इस दौरान घरो में गेरु और पाण्डू देव बनाकर पूजा की गई।

देवउठनी एकादशी के बाद कार्तिक पूर्णिमा आती है, जिसे देव दिवाली या देवताओं की दिवाली के रूप में मनाया जाता है यह भी माना जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु ने देवी तुलसी से विवाह किया था। शकुन्तला लक्ष्कार नांगल ने बताया कि इस दिन से मांगलिक कार्यों की शुरुआत हो जाती है, भगवान विष्णु के जागने के बाद से शुभ कार्य जैसे शादी और गृह प्रवेश की शुरुआत हो जाती हैं। इस दिन पूजा और दान-पुण्य से जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

देव जगाने के लिए एकादशी पर तुलसी के पौधे, गन्ने, चावल, रोली, हल्दी, धूप, दीपक, फूल, फल, मौसमी वस्तुएं (जैसे सिंघाडा, शकरकंद), कलश, शंख और घंटी जैसी सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है। उत्तम मौके पर घरों में सुंदर-सुंदर पकवान वह मीठे व्यंजन बनाए गए। इस मौके पर अर्चना, मूलचन्द, नवीन, हिमांशु लक्ष्कार आदि मौजूद रहे।

भाजपाई सरदार पटेल की जयंती मनाना भूले

दौसा। भारतीय जनता पार्टी में व्याप्त भारी गुटबाजी के चलते हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी अभियान महज औपचारिकता बन रह गया है। इतन ही नही इस गुटबाजी के चलते जिले भर के भाजपाई सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती मनाना तक भूल गये, जबकि जयंती पर प्रत्येक बूथ पर भाजपा द्वारा स्वदेशी अपनाओं का संकल्प पत्र भी भरना था, जो भी महज कागजी साबित हुआ।

- **स्वदेशी अपनाओं का संकल्प पत्र भी भरना था, जो भी महज कागजी साबित हुआ**

उल्लेखनीय है कि भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष पद पर लक्ष्मी रेला की ताजपोशी होने के साथ ही भाजपा कई खेमों में विभक्त हो गई है। जिसके चलते केन्द्र एवं प्रदेश भाजपा के निर्देश पर चलाये जा रहे कार्यक्रम महज औपचारिकता बन रह गई है। सबसे मजेदार बात ये है कि अधिकांश भाजपाई नेताओ को ये तक पता नही कि जिले में कौन-कौन से कार्यक्रम आयोजित किये जाने है। इस गुटबाजी का असर आगामी नगर निकाय एवं पंचायत राज चुनावों में साफ दिखाई देगा। भाजपाई नेता अपनी ढपली-अपना राग अलाप रहे है। इधर भाजपा की भारी गुटबाजी के चलते कांठोस के स्थानीय नेता भाजपाइयो को किसी ना किसी मुद्दे पर कटघरे में खडा कर देते है। बताया जाता है कि भाजपाइयों की गुटबाजी का असर मुख्यालय तथा मंडल स्तर पर होने वाली बैठको में दिखाई देने लगा है, अधिकांश कार्यकर्ता एवं पदाधिकारियों का भाजपा से मोह भंग होता जा रहा है तथा प्रदेश द्वारा नियुक्त जिला अध्यक्ष को स्वीकार करने में गुरेज कर रहे है, हालांकि भाजपाई खुलकर जिला अध्यक्ष का विरोध को नही कर रहे है, लेकिन बैठको में नेताओ एवं कार्यकर्ताओं की न्यूनतम उपस्थित गुटबाजी की ओर संकेत कर रही है। सूत्रों ने बताया कि भाजपा के जिला अध्यक्ष के निर्वाचन के दौरान तकरीबन दो दर्जन से अधिक नेताओं ने अपनी दावेदारी प्रस्तुत की थी, उस दौरान वर्तमान जिला अध्यक्ष लक्ष्मी रेला को जिला अध्यक्ष के नामांकन भरने के दौरान प्रस्ताव नही मिलने का मुद्दा भी जोरो से चर्चा पर रहा था। सूत्रो ने बताया कि वर्तमान जिला अध्यक्ष लक्ष्मी रेला प्रस्ताव के लिए इधर से उधर भटकती रही, अंत मे बिना प्रस्तावक के ही नामांकन पेश करना भी चर्चा का विषय रहा।

वही दूसरी ओर लक्ष्मी रेला के नामांकन में प्रस्तावक नही होने के बावजूद उनकी जिला अध्यक्ष पद पर ताजपोशी हो गई। लक्ष्मी रेला को जिला अध्यक्ष घोषित किये जाने के साथ ही भाजपा के अधिकांश नेता सदमें में आ गई। इस ताजपोशी के साथ ही भाजपा में गुटबाजी व्याप्त हो गई, जिसका असर संगठन द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमो में स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

रक्तांचल पर्वत सीढी लोकार्पण समारोह आज

निवाई। श्री श्याम धर्मार्थ सेवा संस्थान के तत्वावधान में रक्तांचल पर्वत सीढ़ी लोकार्पण समारोह का आयोजन सोमवार को किया जाएगा। संस्थान के अध्यक्ष दिलीप इसरानी व भाजपा शहर अध्यक्ष नितिन छाबडा ने बताया कि समारोह मायला बाग स्थित शिवालय के पास आयोजित होगा। उन्होंने बताया कि रक्तांचल पर्वत पर किलेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन करने जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुगम मार्ग बनकर तैयार हो गया है। लोकार्पण समारोह में कृषि मंत्री डॉ. किरोडी लाल मीणा, जल मंत्री कन्हैयालाल चौधरी व वन मंत्री संजय शर्मा अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। उन्होंने बताया कि लोकार्पण समारोह को लेकर किलेश्वर महादेव मंदिर परिसर में भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा। कार्यक्रम की व्यवस्था देख रहे घासी अठावाल व वंश प्रदीप पारीक सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने बताया कि लोकार्पण समारोह व भण्डारे की तैयारियां को लेकर संस्थान के सभी कार्यकर्ता रात दिन जी- जान से जुटे हुए हैं। रविवार को दिनभर पर्वत पर लिफ्ट के द्वारा सामठी चढ़ाई जाएगी।

छिछली राजनीति ने सांभर को अवनति की ओर धकेला

सांभरझील, (निसं)। राजस्थान प्रांत के 1957 में गठन होने के पश्चात सांभर उपखंड लगातार विकास की ओर बढ़ने के बजाय अवनति की ओर बह रहा है। सांभर उपखंड के अधीन करीब दो दशक पहले तक आने वाला कस्बा जोबनेर, किशनगढ़ रेनवाल व पंचायत नरायना आज विकास की गति को छू रहे हैं। बता दे की राजनेताओं की मृतप्राय यहां की राजनीति, जनता से मीठी-मीठी बातें करके उनको गुमराह करने, अपनी ही पार्टी के विधायक पर विकास का फोकस का दबाव नहीं डालने के कारण ऐतिहासिक सांभर अपना वर्चस्व खो चुका है। आगामी कुछ सालों तक इसी प्रकार की राजनीति रही तो कोई अतिशयोक्ति नहीं की सांभर उपखंड का दर्जा ही खत्म हो जाए तब सांभर कैसा होगा इसका मंथन अभी से करने की जरूरत है। शर्म की बात

- **उप जिला अस्पताल के लिए भवन बनने की संभावनाएं पूरी तरह से खत्म होती जा रही है।**

है कि यहां की राजनेता अपर जिला कलेक्टर का कार्यालय खुला नहीं सके, कुछ सालों पहले यहां से शिफ्ट हुआ सार्वजनिक निर्माण विभाग का सहायक अभियंता कार्यालय वापस ला नहीं सके, बीएसएनएल का ऑफिस यहां से चला गया और नेता अपने आप पर गर्व महसूस कर रहे हैं। सोनोलॉजिस्ट लाना नहीं चाहते यानी सोनोलॉजिस्ट की नियुक्ति कराने की उनमें क्षमता नहीं है। राजकीय उप जिला अस्पताल में ऑर्थोपेडिक्स व सर्जन की तो अब उम्मीद ही खत्म हो चुकी है कि यहां कभी इनकी नियुक्ति भी होगी। उप जिला अस्पताल के नवीन भवन के लिए भूमि उपलब्ध नहीं हो रही है, इसमें भी करीब डेढ़ साल से अधिक का समय बीत चुका है और ऐसा लग रहा है कि अब उप जिला अस्पताल के लिए भवन बनने की संभावनाएं पूरी तरह से खत्म होती जा रही है। अब यह बताना जरूरी है कि उप जिला अस्पताल और राजकीय कन्या महाविद्यालय यहां के नेताओं की मेहरबानी से नहीं बल्कि समाज सेवी और नंदीकेश्वर मेला कमेटी के अध्यक्ष कुलदीप व्यास के अकेले प्रयासों का ही परिणाम रहा कि इनकी सौगात मिल सकी, लेकिन इसके बावजूद यहां के जनप्रतिनिधियों ने उनका सार्वजनिक तौर पर अभिनंदन तो दूर साधुवाद तक करना भी मुनासिब नहीं समझा तो फिर यहां के नेताओं से आगे की उम्मीद करना बेमानी ही होगा।

परामर्श शिविर का शुभारंभ

दौसा। विश्वास स्माइल एंड स्पाइन सेंटर में आज से प्रारंभ हुए नि:शुल्क दंत परीक्षण एवं परामर्श शिविर का पहला दिन अत्यंत सफल रहा। शिविर के पहले ही दिन 37 से अधिक मरीजों ने लाभ उठाया और दंत जांच एवं विशेषज्ञ परामर्श प्राप्त किया। मरीजों ने क्लिनिक की सुविधाओं और डेंटल टीम के कार्य व व्यवहार की सराहना की। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य समाज में दांतों और मुख स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

अक्सर लोग दांतों की समस्याओं को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, जिससे आगे चलकर गंभीर स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। इसीलिए यह शिविर लोगों को नियमित जांच और सही उपचार की दिशा में प्रेरित करने का एक प्रयास है। क्लिनिक के प्रमुख डॉ. विश्वास शर्मा (, स्ट्रेटेजिक इम्प्लांटोलॉजिस्ट एवं रूट कैनाल विशेषज्ञ) ने बताया कि मौखिक स्वच्छता केवल सुंदर मुस्कान के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। हमारा उद्देश्य समाज को यह समझाना है कि समय पर जांच और सही देखभाल से अधिकांश दंत रोगों से बचा जा सकता है। लोगों को अपने दांतों की नियमित जांच को जीवनशैली का हिस्सा बनाना चाहिए। डॉ. विश्वास शर्मा के साथ डॉ. अक्षिमा शर्मा (, स्माइल डिजाइन एवं एस्थेटिक डेंटिस्ट्री विशेषज्ञ) ने भी मरीजों की जांच की और मुख सौंदर्य से जुड़ी समस्याओं के समाधान बताए।

दोनों डॉक्टरों ने मिलकर मरीजों को न केवल दंत उपचार दिया बल्कि दांतों की देखभाल, खानपान और स्वच्छता के सही तरीकों की जानकारी भी दी। विश्वास स्माइल एंड स्पाइन सेंटर, दौसा में आधुनिक उपकरणों और अनुभवी डॉक्टरों की टीम द्वारा मरीजों को विश्वस्तरीय दंत सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

पंचमुखी हनुमानजी की मूर्ति की रक्तांचल पर्वत पर हुई प्राण प्रतिष्ठा

निवाई। शहर के रक्तांचल पर्वत पर रविवार को अभिजीत मुहूर्त में पंचमुखी हनुमानजी की मूर्ति का जयकारों के साथ प्राण प्रतिष्ठा हुई। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के पास दिवसीय आयोजन का इसी के साथ समापन भी हो गया।

श्रद्धालु दिनेश सोनी व अभिषेक सोनी ने बताया कि रक्तांचल पर्वत के शिखर पर स्थित किले में पंचमुखी हनुमानजी मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ। प्रतिष्ठाचार्य पंडित शिवप्रसाद शास्त्री सवाईमाधोपुर के सान्निध्य विभिन्न धार्मिक आयोजन संपन्न हुए। उन्होंने बताया कि संत रामभरोसे दास महाराज के सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पंडित शिवप्रसाद शास्त्री सहित विद्वान पंडितों के मंत्रोच्चार के साथ 1600 फीट ऊंचाई पर स्थित किले में हनुमानजी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हुई। उन्होंने बताया

रक्तांचल पर्वत पर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में मौजूद श्रद्धालु।

कि मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर वैदिक आचार्यों के सान्निध्य में पंचमुखी हनुमान जी की मूर्ति को जलाधिवास, अन्नाधिवास व फलाधिवास करवाया गया। इस दौरान गणेश पूजन, मातृका पूजन, नवठाह पूजन, प्रधान मंडप पूजन, पंचमुखी हनुमान पूजन कर किलेश्वर महादेव की विधि विधान से पूजा की गई। इसके बाद हवन कुंड में

- **हनुमान जी के जयकारों से गूंजा रक्तांचल पर्वत**

श्रद्धालुओं ने मंत्रोचार के साथ आहुतियां दी। मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर महिलाओं ने दोपहर 12 से 4 बजे तक सत्संग कीर्तन व भजन किए। प्राण प्रतिष्ठा के दौरान उपस्थित सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने पंचमुखी हनुमानजी के जमकर जयकारे लगाए। जिससे पर्वत क्षेत्र को गूंज उठा। इसके बाद हनुमानजी की महाआरती की गई जिसमें श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पडा। इसके बाद श्रद्धालुओं को प्रसादी जिमाई गई। प्राण प्रतिष्ठा को लेकर रविवार की सुबह विश्वनाथ मंडल के कार्यकर्ता भजन कीर्तन करते हुए प्रभातफेरी के रूप में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा स्थल पहुंचे।

सार-समाचार

प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा का स्वागत

टोंक। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा का रविवार को जिला कांग्रेस कमेटी कार्यकर्ताओं द्वारा पक्का बंधा टोंक पर जिलाध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा के नेतृत्व में स्वागत किया गया। इस दौरान प्रदेशध्यक्ष डोटासरा ने कहा कि राजस्थान में 2 साल की कुशासन से जनता त्रस्त है, भ्रष्टाचार चरम पर है, बजरी माफिया का बोलबाला है, पेंशन बंद कर दी गई है, पशु बीमा बंद है, राज्य की सड़क टूटी हुई है तथा राजस्थान केंद्र शासित प्रदेश बनकर रह गया है। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्री शिक्षा सुधार पर बल नहीं देकर विद्यार्थियों की ड्रेस सुधार पर बल दे रहे हैं, राज्य सरकार पंचायत एवं निकाय चुनाव में हार को देखकर चुनाव से बच रही है, जनता से झूठे वादे कर कर लोक सत्ता में आ गए लेकिन अब सत्ता नहीं संभाली जा रही है, आगामी उपचुनाव में कांग्रेस की जीत होगी। इस अवसर पर पूर्व विधायक कमल बैरवा, कैलाशी देवी मीणा, इरशाद बेग, सेवादल अध्यक्ष अब्दुल खालिक, जिला सोशल मीडिया प्रभारी जर्रार खान, फोजू राम मीणा, राहूल सैनी मनिंदर बेरवा, कमलेश चावला, भारत वर्मा, आबिद मेव इत्यादि के अलावा बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

लाभ संतृप्ति शिविरों का आयोजन

कोटपूतली। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर जनजातीय गौरव वर्ष के अंतर्गत जिला कोटपूतली-बहरोड़ में रविवार को जिले के विभिन्न 92 ई-मित्र केंद्रों पर लाभ संतृप्ति शिविरों का आयोजन किया गया है। अठाणी जिला प्रबंधक मोहनलाल मीणा ने बताया कि इन शिविरों का उद्देश्य प्रधानमंत्री जनधन योजना के निष्क्रिय खातों को री-केवाईसी के माध्यम से पुन: एक्टिवेट करना, प्रधानमंत्री जनधन योजना में नये खाते खोलना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा,अटल पेंशन योजनाओं में शत-प्रतिशत संतृप्ति के लिए इनरोलमेंट करना, साइबर सुरक्षा, आपकी पूंजी आपका अधिकार के तहत जागरूकता उत्पन्न करने के साथ-साथ सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की कार्यशाला आयोजित करके जागरूकता जैसे पीएम स्वनिधि,पीएम विश्व कर्मा इत्यादि का लाभ पात्र व वंचित व्यक्तियों तक पहुंचाना है । जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ने बताया कि भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती उपलक्ष्य में 1 से 15 नवंबर 2025 के दौरान ''जनजातीय गौरव वर्ष '' पर आयोजित होने वाले समस्त शिविरों में सभी विभागों के अधिकारी सक्रिय रूप से उपस्थित रहकर पात्र लाभार्थियों को योजनाओं का त्वरित लाभ दिला रहे हैं। साथ ही, जनजातीय समाज के गौरव भगवान बिरसा मुंडा के योगदान पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी एवं जागरूकता रैली भी आयोजित की जा रही है। भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर आयोजित यह कार्यक्रम जनजातीय समाज के उत्थान और समठा विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगा।

हादसे में पांच घायल

टोंक। देवली मुख्यालय के जयपुर रोड अंडरपास पुलिया के पास रविवार को दो मोटरसाईकिलों में आमने सामने टक्कर हो जाने से हादसे में पांच बाइक सवार घायल हो गए। जिसमे से दो की हालत गंभीर होने पर जयपुर रेफर किया गया है। सूचना पर पहुंची देवली थाना पुलिस ने बताया कि प्रारंभिक जांच में यह दुर्घटना दो बाइक की टक्कर से हुई, घायलो को एंबुलेंस से देवली राजकीय अस्पताल भर्ती करवाया। इस दौरान हादसे में महावीर गुर्जर पुत्र रंगलाल निवासी निवारिया गंभीर रूप से घायल हो गए, प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर कर दिया, वही दूसरी बाइक पर सवार दौलता मोड़ निवासी आजाद पुत्र गोपाल मेघवंशी को भी गंभीर चोटें लगी हैं, जिसे भी रेफर किया गया है। इस हादसे में अन्य घायलो में महावीर गुर्जर की पत्नी बीना, पांच वर्षीय शिवांश और सीमा पत्नी धर्मराज गुर्जर घायल हुए हैं। वही दूसरी बाइक पर सवार दौलता मोड़ निवासी गोपाल मेघवंशी को भी चोटें आई हैं। पुलिस ने बताया कि फिलहाल किसी भी पक्ष की ओर से कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई गई है।

सीसीटीवी में चोरी करते 3 बदमाश

उदयपुर, (का.स.) । उदयपुर शहर में वाहन चोरों की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। शहर के सूरजपोल थाना क्षेत्र में ठक्कर बप्पा कॉलोनी में अज्ञात चोर एक नगर निगम कर्मचारी की बुलेट चोरी कर ले गए। पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। बताया जा रहा है कि नगर निगम में जमादार के पद पर कार्यरत महेन्द्र वा ल्मीकि ने अपनी बुलेट बाइक घर के बाहर खडी की थी।रात में तीन अज्ञात बदमाश आए और बाइक चोरी कर ले गए। सुबह महेन्द्र ने बाइक गायब देख आसपास तलाश की लेकिन सुराग नहीं मिला। इसके बाद उन्होंने क्षेत्र में आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले तो चोरी का पता लगा। सीसीटीवी फुटेज में तीन बदमाश बाइक का लॉक तोडकर उसे ले जाते हुए दिख रहे हैं। महेन्द्र ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर सूरजपोल थाने में प्रकरण दर्ज कराया है। वहीं पुलिस अब फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश में जुटी है।उल्लेखनीय है कि दो दिन पहले भी शोभागपुरा क्षेत्र में नाई निवासी रमेश मेघवाल की बाइक एक होटल के बाहर से चोरी हो गई। घटना का सीसीटीवी फुटेज सामने आया था। जिसमें पूरी वारदात दिख रही है।

सीबीआई का जनसुनवाई शिविर आज

पाली, (नि.सं.)। पाली में सीबीआई का जनसुनवाई शिविर सोमवार 3 नवम्बर को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) जोधपुर शाखा की ओर से पाली में विशेष जन-जागरूकता एवं शिकायत निवारण शिविर आयोजित किया जाएगा। शिविर रेलवे स्टेशन परिसर में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक लगाया जाएगा। इस शिविर का उद्देश्य आमजन को भ्रष्टाचार निरोधक कानूनों व नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना और केंद्र सरकार के विभागों से संबंधित शिकायतों का समाधान करना है।

बालोतरा में फॉलोअप कैम्प आज से

बालोतरा, (निसं)। शहरी सेवा शिविर-2025 में प्राप्त लंबित आवेदनों और प्रकरणों के निस्तारण के लिए बालोतरा में फॉलोअप कैम्प का आयोजन 3 नवंबर से किया जा रहा है। प्रमुख शासन सचिव महोदय, नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग, राजस्थान, जयपुर के आदेशों की पालना में यह निर्णय लिया गया है।

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम अजय जैन से बदलकर अजय कुमार जैन कर लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे। पता- प्लाट 72-73-सी, सुमेर नगर-।।, कल्याणपुरा, सांगानेर, जयपुर-302020

मै JC698024P सूबेदार अनूप खरे निवासी एमएच जयपुर ने कार्यकारी मजिस्ट्रेट जयपुर (राजस्थान) के समक्ष दिनांक 13.10.2025 को दिए गए शपथपत्र के अनुसार अपने बच्चे का नाम प्राप्ति से बदलकर प्राप्ति खरे रख लिया है।

आम सूचना सर्वसाधारण को यह सूचित किया जाता है कि एक संपत्ति मकान संख्या 119/284, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान राकेश बावेजा के नाम से है। अभी हाल ही में राकेश बावेजा का दिनांक 15.10.2025 को स्वर्गवास हो चुका है एवं उक्त संपत्ति पूर्वजो से प्राप्त संपत्ति है जिसमें हम बबली बावेजा, शुभम बावेजा व राहुल बावेजा का भी अविभाजित हिस्सा है। कुछ व्यक्ति इस संपत्ति को खुर्द-बुर्द बेचान करने हेतु उतारू है जो कानूनन गलत है। अतः सूचित किया जाता है कि उपरोक्त वर्णित संपत्ति के संबंध में किसी प्रकार की खरीद फरोख्त अथवा विक्रय इकरार ना करे एवं यदि किसी व्यक्ति, कंपनी संस्था के द्वारा ऐसा किया जाता है तो उसकी जिम्मेवारी संबंधित व्यक्ति, कंपनी, संस्था की होगी। सूचित रहे।
राहुल बावेजा पुत्र स्वर्गीय श्री बिहारीलाल बावेजा
मकान संख्या 119/284, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान, मो.-7700051532

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक :- 8055 दिनांक :- 16/10/25
जाहिर आम-सूचना राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 182/63 (MIG-A), (एरिया 90.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री जेठानन्द अरोड़ा पुत्र श्री सुखराम अरोड़ा को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1362 दिनांक 16.03.2005 को जारी किया गया। श्री जेठानन्द अरोड़ा के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 07.04.2006 को सब रजिस्ट्रार जयपुर-अष्टम के यहां पंजीकृत करवाये गये। श्री जेठानन्द अरोड़ा द्वारा उक्त आवास को दिनांक 05.05.2006 के द्वारा श्री कमल चन्द टॉक पुत्र श्री कन्हैया लाल टॉक को विक्रय कर सब रजिस्ट्रार जयपुर-अष्टम के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। श्री कमल चन्द टॉक द्वारा उक्त आवास को दिनांक 11.03.2023 के द्वारा श्री चतुर्भुज प्रसाद स्वर्णकार पुत्र श्री टीकम चन्द स्वर्णकार को विक्रय कर उप पंजीयक चतुर्थ जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/क्रेती श्री चतुर्भुज प्रसाद स्वर्णकार पुत्र श्री टीकम चन्द स्वर्णकार द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास के रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय मे 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही है, श्री चतुर्भुज प्रसाद स्वर्णकार पुत्र श्री टीकम चन्द स्वर्णकार का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/867
चूंकि प्रार्थी श्री DINESH MEENA, WARD NO 3, GOLDENPURI MEENA COLONY, KHADI BAG, RAILWAY STATION KE PASS, CHOMU, JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत प्रन्यास आदितारा डिवाइन फाउंडेशन, FLAT NO T-4, PLOT NO 37, KHEJROKABAS, AMRIT NAGAR, MANSAROVAR, JAIPUR, RAJASTHAN के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच प्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 31-10-2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 05/01/2026
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

संक्षिप्त

आचार्य प्रकाश महाराज का चाकसू आगमन

चाकसू। रविवार देव उठनी एकादशी के पावन दिवस पर अमरापुर जयपुर से पधारे पंचम पीठाधीश्वर आचार्य सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश महाराज का सिंधी चौक स्थित झूलेलाल मंदिर में आगमन हुआ। उनके साथ ग्वालियर के संत हरिओम लाल तथा समस्त अमरापुर संत मंडली भी उपस्थित रही। सभी बच्चो ने रंगोली बनाकर व भजन गाकर संतों का स्वागत किया। सिंधी समाज अध्यक्ष नरेंद्र देवजानी ने बताया कि संतों ने अपने उपदेशों में जीवन में परमात्मा के मार्ग पर चलने और मानवता की सेवा का संदेश दिया। समाज के समस्त पुरुष वर्ग ने स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का माला पहनाकर व शॉल ओढ़ाकर सत्कार किया। कार्यक्रम में ध्वजा पूजन , आरती, सत्संग व आम भंडारे का आयोजन हुआ। पूरे वातावरण में भक्ति व श्रद्धा का माहौल रहा। इस मौके पर सर्व समाज, पुरुष मंडल, महिला मंडल, प्रेम प्रकाश नवयुवक मंडल व समाज के अनेक पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

नानी बाई रो मायरो कथा 8 से

पावटा। समीपवर्ती ठाम रामपुरा खुर्द, बजरंगपुरा आंतेला स्थित श्री सीताराम जी मंदिर कर्मजोहड़ा में श्री श्री 1008 शंकर दास महाराज, श्री श्री 1008 श्री भगवान दास महाराज, श्री श्री 1008 भरत दास महाराज, श्री श्री 1008 गोपाल दास महाराज की विशेष अनुकंपा व श्री श्री 108 महंत मंगलदास जी महाराज के सान्निध्य एवं संत श्री रघुनाथ दास जी महाराज, श्री विशंभर दास जी महाराज, रामशरण दास जी महाराज, शिवदयाल जी महाराज, राधेश्याम दास जी महाराज की उपस्थिति में में प्रथम पाटोत्सव व तीन दिवसीय नानी बाई रो मायरो कथा 8 नवंबर से 10 नवंबर तक आयोजित किया जाएगा। श्री श्री 108 महंत मंगलदास जी महाराज ने बताया कि 8 नवंबर को कुंडा धाम आंतेला से कलश यात्रा, 9 व 10 नवंबर को दो दिवसीय पतंजली योग शिविर, 10 नवंबर को प्रसादी वितरण व श्री राम संकीर्तन का आयोजन होगा। वही नानी बाई के मायरे की कथा का वाचन मां नर्मदा की कृपा पात्री साध्वी श्री अखिलेश्वरी दीदी मां वागदी संगम आश्रम नेमावर इंदौर मध्य प्रदेश द्वारा किया जाएगा। कथा को लेकर को लेकर ठामीणों में उत्साह है। वहीं कार्यक्रम को लेकर मंदिर परिसर में पंडाल बनाया जा रहा है। श्रद्धालुओं के बैठने के लिए माकूल बंदोबस्त किए जा रहे है। महंत ने बताया कि कथा श्रवण के लिए समीपवर्ती गांवों में पत्रक वितरण के लिए टोलियां बनाकर कार्य सौंपा गया है। इसे धर्म प्रेमी उत्साह से प्रचार कर रहे हैं।

फोलोअप केंप आज से

निवाई। नगरपालिका कार्यालय में 3 नवम्बर से शहरी सेवा शिविर के फोलोअप केंपो का आयोजन किया जाएगा। अधिशाषी अधिकारी मनोहरलाल जाट व सहायक अभियंता चन्द्रप्रकाश मीणा ने बताया कि शहरी सेवा शिविर 2025 का आयोजन 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक किया गया था। जिनका फोलोअप केंप नगरपालिका कार्यालय में 3 नवम्बर से 8 नवम्बर तक आयोजित किए जाएंगे। शहरी सेवा शिविरों में प्राप्त आवेदनों व प्रकरणों का निस्तारण करके फोलोअप केंप में पात्र व्यक्ति को लाभांवित किया जाएगा।

प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव आज

सिरस। गांव श्योसिंहपुरा में भौमियाजी महाराज के स्थान पर आयोजित पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर संपूर्ण वातावरण धर्ममय बना हुआ है। इस कार्यक्रम में भक्तों में उत्साह रहा। तडके से ही मंदिर में भक्त पहुंचने लगे। श्रद्धालु प्रभुलाल प्रजापत, जगदीश प्रजापत, कजोड प्रजापत, रामसहाय प्रजापत, रामअवतार प्रजापत, कैलाश प्रजापत व हरिलाल प्रजापत ने बताया कि भौमियाजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर नियमित यजमान दंपति जोड़े से बैठकर पूजा अर्चना करवाने के बाद हवन कुंड में आहुतिया देते हैं। आचार्य वेदप्रकाश वेदाचार्य के सानिध्य में पंडित सत्यनारायण, शंकर लाल, राजेश व महेंद्र शर्मा प्रतिदिन वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजन संपन्न करवा कर मंत्रोचारण के साथ हवन कुंड में आहुतियां दिला रहे हैं। उन्होंने बताया कि सोमवार को पूर्णाहुति के साथ भौमियाजी मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न होगा। कार्यक्रम में गिरिराज प्रजापत, रतन प्रजापत, रामप्रसाद प्रजापत, मुरारीलाल प्रजापत, बजरंग लाल व मुकेश प्रजापत सहित कई श्रद्धालु मौजूद थे।

भरतपुर के 9वीं कक्षा के छात्र ने मिनी ट्रैक्टर बनाया

भरतपुर (निस)। सारस चौराहा निवासी धनंजय चौधरी उर्फ लकी ने अपनी प्रतिभा का एक अनोखा उदाहरण पेश किया है। लकी, जो वर्तमान में 9वीं कक्षा में पढ़ रहा है, जिसने कबाड़ और बाइक के सामान से एक मिनी ट्रैक्टर बनाया है जो सड़क पर 70 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ता है।

- ट्रैक्टर को बनाने में उसे तीन महीने का समय लगा और इसके निर्माण में लगभग 60,000 रुपये का खर्च आया।

भरतपुर के सारस चौराहा निवासी धनंजय चौधरी उर्फ लकी ने अपनी प्रतिभा का एक अनोखा उदाहरण पेश कर मिनी ट्रैक्टर का निर्माण किया।

लकी द्वारा बनाए गए मिनी ट्रैक्टर में बाइक का इंजन और पहिए का उपयोग किया गया है। इसको बनाने में उसे तीन महीने का समय लगा और इसके निर्माण में लगभग 60,000 रुपये का खर्च आया। मिनी ट्रैक्टर का एवरेज 10 से 12 किलोमीटर प्रति लीटर है। लकी ने बताया कि नगर निगम द्वारा एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था। इस प्रतियोगिता में, उन्होंने वैक्यूम क्लीनर बनाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन्होंने इससे पहले लकी ने मिनी जेसीबी और ट्रैक्टर के मॉडल भी बनाए हैं। लकी का सपना है कि वह एक बड़ा इंजीनियर बने और वह अपने इस हुनर को आगे ले जाना चाहते हैं।जब भी लकी का मिनी ट्रैक्टर सड़क पर दौड़ता है, लोग इसे देखकर हैरान रह जाते हैं। कई लोग इसे रोककर सेल्फी और वीडियो बनाते हैं और लकी के हुनर के प्रशंसा करते हैं।

सांसद को ज्ञापन सौंपा

चूरू। वार्ड 17 में भिवण्डी के चूरू जिला अप्रवासी मण्डल के हाजी इस्माईल भाटी के नेतृत्व में हिसार-कोयम्बटूर- हिसार का भिवण्डी रेलवे स्टेशन पर ठहराव, हिसार-बान्द्रा-हिसार, जम्मुतवी बान्द्रा-जम्मु एक्सप्रेस का बसई स्टेशन पर ठहराव के लिए सांसद राहूल कस्वां को अप्रवासियों ने ज्ञापन सौंपा। हाजी भाटी ने बताया कि चूरू जिले के अलावा सीकर, झुंझुनूं सहित राजस्थान के हजारो नागरिक महाराष्ट्र के ठाणे जिले के भिवण्डी क्षेत्र में व्यापार के लिए बड़ी संख्या में रहते है। इसलिए अप्रवासियों ने इन स्टेशनों पर हिसार-कोयम्बटूर- हिसार का भिवण्डी रेलवे स्टेशन पर ठहराव, हिसार-बान्द्रा- हिसार, जम्मुतवी बान्द्रा-जम्मु एक्सप्रेस का बसई स्टेशन पर ठहराव किया जाए। ताकि हम लोगों को कोई परेशानी का सामना न करना पड़े। इस अवसर पर मोहम्मद रफ़ीक चौहान,हाजी इस्माईल भाटी, जमील चौहान, आरिफ पीथींसर, सद्दाम हुसैन,शकील चौहान, गुलाम हुसैन गौरी, हारून मलनस,जाफर नूरवाला आदि मौजूद रहे।

किसान की सर्पदंश से मौत

पावटा। प्रागपुरा थाना क्षेत्र के पावटा कस्बे के पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय के पीछे रविवार को खेत पर काम कर रहे एक किसान की सर्पदंश से मौत हो गई। 53 वर्षीय किसान कैलाश वर्मा ने प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर करने के बाद जयपुर जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। पावटा निवासी कैलाश वर्मा रविवार सुबह करीब 11 बजे अपने खेत में गेंहू की फसल में पानी दे रहे थे। इसी दौरान अचानक एक ब्लैक कोबरा ने उन्हें डस लिया। सर्पदंश की सूचना मिलते ही परिजन घबराए हाल में उन्हें कोटपूतली बीडीएम जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए जयपुर रैफर कर दिया। बताया गया कि जयपुर ले जाते समय रास्ते में ही कैलाश वर्मा की तबीयत और बिगड़ गई। परिजन उन्हें वापस पावटा उपजिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

बेटियों के विवाह में दो लाख रूपये का कन्यादान दिया

निवाई। वंडर सीमेंट द्वारा वंडर स्पर्श कन्यादान योजना के तहत कंपनी के अधिकृत उप विक्रेता की दो पुत्रियों की शादी में दो लाख दो हजार रूपये का चैक भेंट कर सामाजिक सरोकार का उदाहरण प्रस्तुत किया गया। कंपनी के अधिकृत विक्रेता राजेन्द्रकुमार सूरिया ने बताया कि कंपनी के अधिकृत उप विक्रेता ममता शर्मा निवासी खणदेवत रोड पांच कुआं की दो पुत्रियों अंजली व प्रीति शर्मा की शादी में वंडर सीमेंट द्वारा वंडर स्पर्श कन्यादान योजना के तहत दो लाख दो हजार रूपये की राशि का चैक भेंट किया गया। इस दौरान कंपनी के अधिकारी विशाल काबरा, नवनीत सिंह, वंडर बिजनेस पार्टनर गोविन्द बिडला, वंडर सीमेंट के अधिकृत विक्रेता महालक्ष्मी एन्टर प्राईजेज के राजेन्द्रकुमार शर्मा ने ममता शर्मा को कन्यादान का चैक भेंट किया तथा नवदंपति को कंपनी की ओर वैवाहिक जीवन की शुरूआत की बधाई एवं शुभकामनायें दी। इस मौके पर ममता शर्मा ने कंपनी एवं कंपनी के प्रतिनिधियों का आभार जताया।

- वंडर स्पर्श कन्यादान योजना के तहत प्रस्तुत किया सामाजिक सरोकार

निवाई उप विक्रेता की बेटियों के विवाह में दो लाख दो हजार रूपये की राशि का चैक देते हुए वंडर सीमेंट के प्रतिनिधि।

सामूहिक सुंदरकांड पाठ में श्रद्धालु उमड़े

निवाई। इंदिरा कॉलोनी में सामूहिक सुंदरकांड का पाठ का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने उत्साह के साथ सुंदरकांड के पाठ किए। श्रद्धालु कमलेश पारीक ने बताया कि सामूहिक सुंदर कांड पाठ के आयोजन को लेकर भजन गायक महेश दरगड, कमल दरगड व रमेश सोनी द्वारा सुंदरकांड का संगीतमय पाठ किया गया।

जिसमें सभी कॉलोनीवासियों ने भी पाठ के दौरान भक्ति नृत्य किया। सुंदरकांड की पाठ के पश्चात भजन सम्राट महेश दरगड ने बाबा श्याम के भजनों की प्रस्तुतियां दी जिसमें आस-पास का वातावरण भक्तिमय हो गया। उन्होंने बताया कि सुंदरकांड पाठ के आयोजन को लेकर नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी व समाजसेवी शिवरतन दरगड का माल्यार्पण कर व साफा पहनाकर सम्मान किया गया। सुंदरकांड व भजन संध्या में श्रद्धालु मनीष खंडेलवाल, सर्वेश द्विवेदी, जयकुमार, बालचंद सबनानी, कमल दरगड, अनिल टोडवाल, छोटू लाल, कैलाश पारीक, शीतल सिंधी, लकी, शकुंतला शर्मा, भारती खंडेलवाल, रीना द्विवेदी, किरण टेलर, पार्वती सोनी, गरिमा ननकानी, पुष्पा सबनानी, गौरीशंकर अग्रवाल, बिना पारीक, कमलेशकुमार पारीक, बिना जैन, प्रदीप जैन, राजेश जैन, संतोष पारीक, सुमित्रा पारीक, हिमांशी पारीक, आयुष पारीक, सुमन पारीक, दीपा, पिंकी, सुनील पारीक, आनंद पारीक, प्रेमलता पारीक, राघव, मनीष जैन, रीना जैन, मोहिनी, धर्मेंद्र, शिमला गुप्ता, देवीलाल माहुर, सुनील अठावाल, ललिता अठावाल, मनीष गुप्ता, कैलाशचंद अठावाल, मोहनलाल जैन, सत्यनारायण गोयल, गिरिराज गुर्जर, दीपिका, भव्या पारिक व देवांश पारीक सहित कई श्रद्धालु मौजूद थे।

- भजन गायक महेश दरगड, रमेश सोनी ने सुंदरकांड का पाठ किया । जिसमें सभी कॉलोनीवासियों ने भी पाठ के दौरान भक्ति नृत्य किया। सुंदरकांड की पाठ के पश्चात भजन गायक महेश ने बाबा श्याम के भजनों की प्रस्तुतियां दी

संतों व वृद्धजनों का सम्मान

निवाई । झिलाय रोड पर स्थित रैगर छात्रावास में रविवार को रैगर समाज के तत्वावधान में मदनलाल मंडरावलिया की अध्यक्षता में रैगर दिवस धूमधाम से मनाया गया। जिसका शुभारंभ समाज के महापुरुष स्वामी आत्माराम लक्ष्य के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित करके किया।

इस दौरान समाज के कई संतो व वृद्धजनों का माल्यार्पण करके सम्मान किया गया। छात्रावास निर्माण समिति अध्यक्ष रामगोपाल सेवालिया ने कहा कि रैगर दिवस समाज के महापुरुष स्वामी आत्माराम लक्ष्य को समर्पित है, जिन्होंने समाज को शिक्षित, जागरूक और संगठित करने के लिए 2 से 4 नवंबर 1944 तक दौसा में रैगर समाज का प्रथम तीन दिवसीय महासम्मेलन आयोजित किया था। जिससे समाज शिक्षित होने के साथ-साथ जागरूक और संगठित हुआ है।

इस अवसर पर छात्रावास निर्माण समिति अध्यक्ष रामगोपाल सेवालिया, अनुसूचित जाति उत्थान सभा अध्यक्ष मास्टर मदनलाल वर्मा, रैगर महासभा के शहर अध्यक्ष बाबूलाल कंवरिया, मोहनलाल सालोदिया, त्रिलोक मंडरावालिया, दुर्गालाल कंवरिया, भूषण सालोदिया, चांदमल कंवरिया, चिरंजीलाल जाबड़ोलिया, भागचंद जाबलिया व प्रकाश कांवरिया सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

दौसा में पदयात्रा 6 नवंबर को

दौसा। मेरा युवा भारत दौसा, जिला प्रशासन, एनसीसी, एनएसएस, युवा एवं विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में दौसा जिले में 2 पदयात्राएं आयोजित की जावेगी। ये पदयात्रायें युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वी जयंती पर्व के तहत निकाली जावेगी। इधर रविवार को जिला परिषद के सभागार में जिला युवा खेल अधिकारी पूनम कुमारी की अध्यक्षता में प्रेसवार्ता आयोजित की गई। प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुये राजस्थान में आयोजित पदयात्राओं के राज्य संयोजक जितेंद्र मीणा ने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत युवाओं को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जीवन का सचित्रण किया जावेगा। जिस प्रकार उन्होंने रियासतों का एकीकरण करके भारत गणराज्य की स्थापना की एवं जो समस्याएं झेली को युवाओं और नागरिकों के बीच लाया जायेगा। उन्होने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत हर जिले से लोग देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत होकर तिरंगा यात्रा लेकर जाएंगे एवं हर लोकसभा क्षेत्र में प्रस्तावित 10 किलोमीटर की पदयात्रा होगी। उन्होंने आ ान किया कि 150 से सभी युवा सहित प्रत्येक व्यक्ति जुड़े। उन्होंने कहा कि आज भारत एक है तो केवल सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की वजह से है, इसलिय ऐसे महान व्यक्ति के 150 वी जयंती पर भव्य कार्यक्रम युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा देशभर में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यक्रम आयोजित करवाए जा रहे हैं। इसी कर्म में जिले में पदयात्राएं भी आयोजित कराई जा रही है जो 31 अक्टूबर से 25 नवंबर तक होंगी। जिसके पश्चात राष्ट्र स्तर पर 150 किलोमीटर की रैली होगी जो करमसद गुजरात से होकर स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी पर पूर्ण होगी। इस यात्रा में उन्होंने सभी संगठनों से शामिल होने की अपील की। उन्होंने कहा सरदार पटेल का दृढ़ नेतृत्व, कूटनीतिक कौशल और राष्ट्रीय एकता के प्रति उनकी अटूट निष्ठा आज भी पीढ़ियों को प्रेरित करती है। इसी क्रम में राज्य सरकार ने इस कार्यक्रम को लिया । इस कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, रील प्रतियोगिता एवं पोडकास्ट श्रृंखला आयोजित की जा रही है ।

- सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वी जयंती पर्व के तहत निकाली जावेगी पदयात्रा

गेहूं बुवाई के लिए उपयोग संबंधी महत्वपूर्ण सलाह

भरतपुर (निस)। नवम्बर माह गेहूँ की बुवाई के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। आमतौर पर किसान गेहूँ की बुवाई के दौरान कुछ मूलभूत गल्तियां करता है, जिससे उपज में गिरावट आती है। कृषि महाविद्यालय भुसावर के डीन डॉ. उदय भान सिंह ने बताया कि किसान सामान्यत गेहूँ की बीजदर 150 किग्रा प्रति हेक्टर रखता है, जबकि अनुमोदित बीजदर 100 किग्रा प्रति हैक्टर है। ज्यादा बीजदर के कारण पौधे कमजोर होते हैं तथा बाली आने पर फसल गिर जाती है। किसान बुवाई के समय गेहूँ मे पोटाश व जिंक नही देते जबकि फसलवृद्धि के लिए ये जरूरी तत्व है। अत: किसान बुवाई के समय 50 किठाा नत्रजन व 40 किग्रा फास्फोरस के साथ 40 किग्रा पोटाश व 25 किठाा जिंक सल्फेट प्रति हेक्टर अवश्य दें। किसानों को गेहूँ की बुवाई नवम्बर माह में पूर्ण कर लेनी चाहिए, देरी से बुवाई फसल उत्पादन में कमी का मुख्य कारण है, क्योंकि फरवरी-मार्च माह में अचानक तापक्रम बढने से गेहूँ का पकाव अच्छा नही हो पाता है, दाना छोटा रह जाता है। गेहूँ को सीडड्रिल 22.5 से. मी. दूर कतारो में 5 से.मी. गहरा बोना चाहिए। डॉ. उदय भान सिंह ने बताया कि कृषि संभाग भरतपुर में सरसों के बाद गेहूँ के रकबा सर्वाधिक है, यहां की औसत उपज 39 क्विं प्रति हेक्टर है जबकि यह 50 से 60 क्विं. प्रति हेक्टर तक बढायी जा सकती है।

- किसान सामान्यत गेहूँ की बीजदर 150 किग्रा प्रति हेक्टर रखता है, जबकि अनुमोदित बीजदर 100 किग्रा प्रति हैक्टर है।

नवम्बर माह गेहूँ की बुवाई के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय माना गया है।

तुलसी विवाह सम्पन्न

भरतपुर (निस)। दानी श्री श्याम बाबा जन्मोत्सव के पंच दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत चौथे दिन रविवार को देवोत्थान एकादशी के अवसर पर तुलसी विवाह का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय संस्कृति के अनुसार मंगल गीत गाये गये और मंत्रोच्चार के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। भारतीय संस्कृति के अनुसार मान्यता है कि श्री श्याम बाबा भगवान श्री कृष्ण के अवतार हैं, तुलसी विवाह भगवान विष्णु के साथ तुलसी के विवाह के रूप में आयोजित किया जाता है। इस प्रकार दोनों ही एक ही दिव्य शक्ति के अलग-2 रूपों के प्रतीक भक्तिभाव को दर्शाता है।

तुलसी विवाह भक्तों एवं भगवान के बीच प्रेम और समर्पण को दर्शाता है आज से विवाह के शुभ मुहुर्त की शुरूआत मानी जाती है। तुलसी को देवी लक्ष्मी का अवतार माना जाता है । आज के दिन विष्णु और लक्ष्मी का मिलन होता है, यह दिव्य पुरूष और स्त्री उर्जा के मिलन को दर्शाता है। इसका प्राकृतिक महत्व भी है क्योंकि तुलसी का पौधा पर्यावरण को शुद्ध रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तुलसी विवाह कुसुम अठावाल के करकमलों के द्वारा सम्पन्न किया ।

सार-समाचार

अयोध्या सेवा समिति के अध्यक्ष का स्वागत

चाकसू। चाकसू बाईपास पर रविवार को अयोध्या सेवा समिति के अध्यक्ष डॉ हरीश गौतम का अवधेश शर्मा दयापुरा के नेतृत्व में स्वागत किया गया शर्मा ने बताया कि डॉक्टर हरीश गौतम एस्ट्रोलॉजर अयोध्या में अयोध्या सेवा समिति के अध्यक्ष रहते हुए अयोध्या में दर्शनार्थियों के लिए कार्य कर रहे हैं उनके कोटा जाते समय स्थानीय समिति के कार्यकर्ताओं ने दुपट्टा ओढा कर एवं तस्वीर भेंट कर स्वागत किया इस दौरान डॉक्टर गौतम ने अयोध्या स्थित श्री नरबदा बाई सेवा आश्रम के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। इस अवसर पर डॉ हरीश गौतम ने अयोध्या में दर्शन हेतु जाने वाले राजस्थान के श्रद्धालुओं के लिए तत्पर रहने की बात कही। इस दौरान अवधेश शर्मा, गणेश शर्मा, राम लखन शर्मा, राम एन शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

पीड़ितों को न्याय का रास्ता मिला

जयपुर/शाहपुरा । मुख्यमंत्री आवास योजना के नाम पर गिन्नी होम्स (प्रभात ड्रीम रियल एस्टेट) द्वारा की गई ठगी ने सैकड़ों परिवारों को बरबाद कर दिया । वर्षों तक मेहनत की कमाई जमा करने के बाद भी न तो घर मिले, न ही पैसा लौटा। जब पीड़ित परिवार न्याय की उम्मीद खो चुके थे, तभी युवराज दिगराज सिंह शाहपुरा अपनी टीम के साथ मैदान में उतरे और राजस्थान रेरा प्राधिकरण में यह लड़ाई लड़ी। 05 अगस्त 2025 को रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी राजस्थान ने गिन्नी होम्स प्रोजेक्ट (रजिस्ट्रेशन नंबर //2017/415) से जुड़े एक मामले में खरीदार के पक्ष में फैसला सुनाते हुए बिल्डर को जमा की गई संपूर्ण राशि को 8.6 वार्षिक ब्याज सहित लौटाने का आदेश दिया है। इस निर्णय से अमरचंद सैनी सहित सैकड़ों पीड़ितों को न्याय का रास्ता मिला । यह आदेश केवल एक केस की जीत नहीं, बल्कि जनता के आत्मसम्मान की जीत है। यह सरकार गरीब की आवाज़ नहीं सुनती - मगर न्यायालय सुनता है। हमने साबित किया कि जनता की लड़ाई अगर सच्चे इरादे से लड़ी जाए, तो कोई ताकत उसे रोक नहीं सकती। दिगराज सिंह शाहपुरा, राष्ट्रीय महासचिव (ऑल इंडिया किसान कांग्रेस दिगराज सिंह शाहपुरा ने कहा कि वे अब इस मामले में अन्य 280 से अधिक पीड़ित परिवारों की ओर से भी रेरा और कोर्ट के माध्यम से न्याय सुनिश्चित करने की प्रक्रिया में हैं।

कल होंगे फाइनल इवेंट

भरतपुर (निस)। 69 वी राज्य स्तरीय अंडर 14 छात्र छात्रा एथलेटिक्स कीड़ा प्रतियोगिता के पांचवें दिन जिला शिक्षा अधिकारी अतुल चतुर्वेदी और अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार शर्मा ने आवास एवं पंजीयन समिति में लगे प्रभारी अधिकारियों से विभिन्न जिलों से आए हुए खिलाड़ियों कि टीम मैं से कितने जिले प्रमाण पत्र प्राप्त कर कार्य मुक्त होकर घर जा चुके हैं इसका फीडबैक प्राप्त किया साथ ही बीकानेर से नियुक्त निर्णायक मंडल सदस्यों से एथलेटिक्स प्रतियोगिता के शेष रहे इवेंट्स की जानकारी लेकर उनके रहने खाने आदि की जानकारी प्राप्त कर स्थानीय कार्मिकों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक विजय सिंह कुंतल के अनुसार आज पांचवे दिन करवाए गए। खेल प्रभारी हरीश चतुर्वेदी ने बताया कि कल प्रात: 7:30 बजे से 200 मी छात्र छात्रा की फाइनल दौड़ एवं 400 मी छात्र छात्रा फाइनल दौड़ का आयोजन किया जाएगा साथ ही 1-00 बजे विजेता खिलाड़ियों को मेडल सेरिमनी कर मेडल दिए जाएंगे। एथलेटिक्स प्रतियोगिता में प्रधानाचार्य कप्तान सिंह,गिरधर सिंह, सौम्या, राधा कृष्ण धाकड़, पराग सोलंकी, तुषार त्यागी, गजेंद्र सिंह, राजेश कुमार सागर, आलोक सारस्वत, विशाल चौधरी, दिनेश फौजदार, संजय वर्मा ,ने पंजीयन व्यवस्था में एवं प्रधानाचार्य बबीता चौधरी, सुमन लता,अंजना शर्मा,मंजू कुमारी, राजेश कुमारी,मंजू पवन, अनु चौधरी, रेनू शर्मा, सीमा कुमारी ने बालिका आवास व्यवस्था तथा ललित खत्री, चंदू कोली, रामकुमार शर्मा, सुरेश चंद शर्मा, नंदकिशोर शर्मा, श्यामवीर सिंह, मुकेश कुमार, दिनेश कुमार, विनोद कुमार आदि प्रधानाचार्य ने बालक आवास व्यवस्था में अपने अपने दायित्व का निर्वहन किया।

स्थायी वारंटी गिरफ्तार

पावटा। दो साल से फरार चल रहे न्यायालय के वांछित स्थाई वारंटी को प्रागपुरा थाना पुलिस टीम ने काफी तलाशी के बाद गिरफ्तार किया है। प्रागपुरा थानाधिकारी कश्मीर सिंह ने बताया कि पुलिस अधीक्षक देवेंद्र विश्नोई द्वारा पुलिस महानिरीक्षक जयपुर रेंज जयपुर द्वारा एक विशेष अभियान के तहत वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु दिए गए निर्देशो की पालना में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन व प्रागपुरा थाना प्रभारी कश्मीर सिंह के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम द्वारा दिए गए टास्क की पालना में अथक प्रयास कर प्रकरण में फरार मुल्जिम राकेश सिंह उर्फ कालू सिंह पुत्र रोहिताश सिंह निवासी ढाणी दूल्हे सिंह तन बड़नगर को गिरफ्तार करने में सफलता अर्जित की।

महिला सम्मान समारोह 30 नवंबर को

दौसा। टाइम फिटनेस क्लब एवं दा लेडीज क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 30 नवंबर को विमन एम्पावरमेंट 2025 महिला सम्मान समारोह आयोजित किया जावेगा।कार्यक्रम संयोजिका किरन डोरिया ने बताया कि 30 नवंबर को आयोजित इस समारोह के तहत दौसा जिले में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं का सम्मान होगा। कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं को विषय विशेषज्ञों द्वारा फिटनेस एवं साइबर क्राइम के प्रति जागरूक किया जाएगा। समारोह के दौरान बेस्ट सिंगर 2025, बेस्ट डांसर 2025 के अलावा मिस इंडिया ग्लैम दौसा 2025 सौंदर्य प्रतियोगिताओं का आयोजन होगा। प्रतियोगिता की विजेता प्रतिभागियों की हौसलाअफजाई के लिए तीनों प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अतिथियों द्वारा शील्ड एवं 5100 रुपए प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। समारोह के दौरान सुरक्षा के लिए बाउंसर्स तैनात किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि कार्यकम के सफल आयोजन के लिए जल्द ही भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मी रेला एवं नगर परिषद सभापति कल्पना जैमन की देख रेख में आयोजन समिति का गठन किया जाएगा। मीडिया प्रभारी सुशील कुमार शर्मा ने बताया कि समारोह में आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में 18 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाएं और लड़कियां ही भाग ले सकेंगी। विभिन्न प्रतियोगिताओ में आवेदन के लिए दौसा जिले की कोई भी महिला जिसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो, आवेदन कर सकती है। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 13 नवंबर होगी। इसके लिए प्रतियोगिता में भाग लेने की इच्छुक लड़कियों और महिलाओं को 13 नवंबर तक दा लेडीज क्लब, फर्स्ट टॉवर दौसा से निशुल्क रूप से आवेदन पत्र प्राप्त कर आधार कार्ड एवं दो फोटो सहित आवेदन करना होगा। दौसा शहर से बाहर की जिले की कोई भी महिला आवेदनकर्ता प्रतियोगिता के आवेदन के लिए अधिकृत मोबाइल नंबर 9414278815 पर भी वॉट्सएप कर आवेदन जमा करा सकती है। आवेदन के बाद रविवार 16 नवंबर को ऑडिशन प्रक्रिया होगी। ऑडिशन में महिला निर्णायक मंडल द्वारा 30 नवंबर के लिए फाइनल प्रतिभागियों का चुनाव होगा। 16 नवंबर को ऑडिशन में सफल होने वाली चुनिंदा प्रतिभागियों को ही 30 नवंबर को आयोजित होने वाले कार्यकम में स्टेज पर अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। 16 नवंबर को ही जयपुर में 30 दिसंबर को आयोजित होने जा रही राष्ट्रीय स्तर की मिस एंड मिसेज इंडिया ग्लैम सौंदर्य प्रतियोगिता का भी ऑडिशन होगा। 30 नवंबर को आयोजित होने वाली मिस इंडिया ग्लैम दौसा सौंदर्य प्रतियोगिता को अत्यंत सरल रखा गया है। प्रतिभागी को सिर्फ भारतीय संस्कृति परिधान में सज संवर कर स्टेज पर म्यूजिक के साथ रैंप वॉक करते हुए अपना सेल्फ इंट्रोडक्शन देना होगा। इसके अलावा नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागीयों को महिला निर्णायक मंडल द्वारा निर्धारित अवधि में अपनी प्रस्तुती समाप्त करनी होगी। महिला निर्णायक मंडल द्वारा निष्पक्ष एवं पारदर्शी रूप से विजेताओं की घोषणा की जाएगी। दा लेडीज क्लब सचिव दौसा एवं मिस राजस्थान शीतल विश्वकर्मा ने बताया कि समारोह के दौरान गोल्ड सिनेमा में महिलाओं एवं लड़कियों के लिए तकरीबन 90 प्रतिशत कुर्सियां आरक्षित रहेंगी ।

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा 50 स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने इस मामले में भारत के विराट कोहली को पीछे छोड़ा।

बाबर आजम

बाबर आजम टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा 50 स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

रोहन बोपन्ना

अपने भावनात्मक संदेश में बोपन्ना ने कहा, यह अलविदा नहीं है, यह धन्यवाद है। इन शब्दों ने उनके पूरे करियर की आत्मा को बयां कर दिया। उन्होंने अपने साथियों, परिवार, प्रशंसकों और कोचों को धन्यवाद दिया जिन्होंने उनकी इस यात्रा में योगदान दिया।

भारतीय टेनिस की सबसे प्रतिष्ठित हस्तियों में से एक, रोहन बोपन्ना ने पेशेवर टेनिस से अपने संन्यास की घोषणा की है। यह घोषणा उनके करियर की आखिरी पारी का संकेत थी, लेकिन बोपन्ना ने इसे अलविदा नहीं कहा, बल्कि उन्होंने इसे एक धन्यवाद का रूप दिया।

क्या आप जानते हैं ?... भारतीय महिला टीम 2004 , 2005-06 , 2006 , 2008 में 4 बार एकदिवसीय एशिया कप जीता है।

भारत ने रचा इतिहास, जीत लिया विमेंस वनडे वर्ल्ड कप:साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर चैंपियन बने

मुबंई। भारत की बालिकाओं ने 47 साल के इंतजार के बाद इतिहास रच ही दिया। इंडिया विमेंस ने रविवार को फाइनल में साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता।

पाटील स्टेडियम में साउथ अफ्रीका ने बॉलिंग चुनी। भारत ने 7 विकेट खोकर 298 रन बनाए। शेफाली वर्मा ने 87, दीप्ति शर्मा ने 58, स्मृति मंधाना ने 45 और ऋचा घोष ने 34 रन बनाए। साउथ अफ्रीका से आयाबोंगा खाका ने 3 विकेट लिए।

बड़े टारगेट के सामने साउथ अफ्रीका टीम 246 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। कप्तान लौरा वोल्वार्ट ने लगातार दूसरा शतक लगाया, लेकिन टीम को जीत दिलाने से पहले ही आउट हो गईं। भारत से पार्ट टाइम ऑफ स्पिनर शेफाली वर्मा ने 2 विकेट लेकर मैच पलटा। वहीं दीप्ति शर्मा ने 5 विकेट लेकर टीम को जीत दिला दी।

बन गए वर्ल्ड चैंपियन:46वें ओवर की तीसरी बॉल दीप्ति शर्मा ने फुल टॉस फेंकी। नदिन डी क्लर्क शॉट खेलने गईं, लेकिन कवर्स पोजिशन पर भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर के हाथों कैच हो गईं। क्लर्क के विकेट के साथ साउथ अफ्रीका 246 रन पर ऑलआउट हुई और भारत ने विमेंस वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीत लिया।

दीप्ति ने एक ओवर में पलटा मैच: लौरा वोल्वार्ट शतक लगाने के ठीक बाद आउट हो गईं। दीप्ति शर्मा ने 42वें ओवर में फाइनल को भारत की झोली में डाल दिया। उन्होंने पहली गेंद पर शतक लगा चुकीं कप्तान लौरा वोल्वार्ट को कैच कराया। वोल्वार्ट 101 रन बनाकर आउट हुईं, अमनजोत कौर ने 3 बार में उनका कैच पकड़ा। दीप्ति ने फिर ओवर की चौथी गेंद पर क्लो ट्रायोन को भी कर दिया।

केन विलियमसन ने अंतरराष्ट्रीय टी-20 से संन्यास लिया

वेलिंग्टन 02 नवंबर (वार्ता) न्यूजीलैंड के बल्लेबाज केन विलियमसन ने आगामी टी20 विश्वकप से पहले अंतरराष्ट्रीय टी-20 क्रिकेट से संन्यास ले लिया है।

विलियमसन ने अपने संन्यास की घोषणा करते हुए कहा, ''मैं लंबे समय से इस टीम का हिस्सा रहा हूं और इसके लिए बहुत आभारी हूं। यह मेरे और टीम दोनों के लिए सही समय है। इससे टीम को आगे की सीरीज और टी-20 विश्व कप के लिए स्पष्ट दिशा मिलेगी। उन्होंने कहा कि मिच शानदार कप्तान हैं और टीम को आगे ले जाने का यह उनका समय है। मैं अब दूर से उनका समर्थन करूंगा।''

न्यूजीलैंड के कोच रॉब वॉल्टर ने कहा, ''यह फ़ैसला पूरी तरह समझ में आता है। क्रिकेट बहुत कुछ मांगता है और केन ने काफी योगदान दिया है। वह एक शानदार टीम मैन हैं और उनका अनुभव व शांत स्वभाव टीम के लिए अमूल्य है।''

अक्टूबर 2011 में पर्दापण करने के बाद से उन्होंने 93 टी-20 मैचों में 33.44 की औसत से 18 अर्धशतक लगाते हुए 2575 रन बनाए, इसमें 95 का सर्वोच्च स्कोर शामिल है। विलियमसन ने न्यूजीलैंड को 2021 टी-20 विश्वकप के फाइनल तक पहुंचाया था, लेकिन उस दौरान उनका बेहतरीन 85 रन का योगदान भी टीम को जीत नहीं दिला सका। उन्होंने 75 मैचों में कप्तानी भी की।

उन्होंने इस महीने की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज से स्वयं को अलग रखा था और इंग्लैंड के खिलाफ 1-0 की हार में भी जांघ की चोट के कारण नहीं खेले। टी-20 से संन्यास के बाद अब उनका पूरा ध्यान दिसंबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज पर रहेगा।

न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बयान में कहा कि विलियमसन अब संभवतः 26 नवंबर से शुरू होने वाले प्लंकेट शील्ड मैच में नॉर्दर्न डिस्ट्रिक्ट के लिए खेलेंगे, जो वेस्टइंडीज के खिलाफ दो दिसंबर से शुरू होने वाले पहले टेस्ट की तैयारी होगी।

उन्नित हुडा की सेमीफाइनल में हार के साथ भारतीय चुनौती समाप्त

सारब्रुकन (जर्मनी) 02 नवंबर (वार्ता) उन्नित हुडा के महिला एकल के सेमीफाइनल मैच में इंडोनेशिया की दुनिया की नंबर सात खिलाड़ी पुत्री कुसुमा वरदानी से हारने के बाद हाइलो ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारतीय चुनौती समाप्त हो गई।

शनिवार को खेले गये सेमीफानइल मुकाबले में 18 साल की उन्नित हुडा को वरदानी से 21-7, 21-13 से हार का सामना करना पड़ा। महिला एकल बैडमिंटन रैंकिंग में 34वें नंबर पर मौजूद उन्नित हुडा की शुरुआत धीमी रही जबकि वरदानी ने शुरू में ही लय पकड़ ली।

पंत की जबर्दस्त पारी, इंडिया ए ने दक्षिण अफ्रीका ए को तीन विकेट से हराया

बेंगलुरु, 02 नवंबर (वार्ता) कप्तान ऋषभ पंत (90) की जबर्दस्त पारी और तनुष कोटियान (चार-चार विकेट) के शानदार प्रदर्शन के दम पर इंडिया ए ने पहले अनौपचारिक टेस्ट मैच के चौथे दिन रविवार को दक्षिण अफ्रीका ए को तीन विकेट से हरा दिया।

इंडिया ए ने कल के चार विकेट पर 119 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में ऋषभ पंत के साथ आयुष बदोनी ने धैर्यपूर्ण बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए स्कोर आगे बढ़ाया। दोनों बल्लेबाजों के बीच पांचवें विकेट के लिए 53 रनों की साझेदारी हुई। टियान वैन वुरेन ने शतक की ओर बढ़ रहे ऋषभ पंत को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। ऋषभ पंत ने 113 गेंदों में 11 चौके और तीन छक्के लगाते हुए 90 रन बनाये। 53वें ओवर में टियान वैन वुरेन ने आयुष बदोनी (34) को भी अपना शिकार बना लिया। तनुष कोटियान (23) सातवें विकेट के रूप में आउट हुये। इसके बाद इंडिया ए ने 73.1 ओवर में सात विकेट पर 277 रन बनाकर मुकाबला तीन विकेट से जीत लिया। मानव सुथार और अंशुल काम्बोज के बीच आठवें विकेट के लिए 62 रनों की अविजित मैच विजयी साझेदारी हुई।

दक्षिण अफ्रीका ए के लिए टियान वैन वुरेन ने तीन और शेपो मोरेकी ने दो विकेट लिये। ओकुहले सेले और लुथो सिपामला ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। दक्षिण अफ्रीका ए ने पहली पारी में 309 रनों का स्कोर बनाया था। भारत की ओर से तनुष कोटियान ने चार, गुरनूर बरार और मानव सुथार ने दो-दो बल्लेबाजों को आउट किया था। इंडिया ए की टीम अपनी पहली पारी में 234 के स्कोर पर सिमट गई थी। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका ए को दूसरी पारी में तनुष कोटियान ने चार विकेट, अंशुल काम्बोज ने तीन विकेट और गुरनूर बरार ने दो विकेट लेकर 199 के स्कोर पर ढेर कर दिया था।

विदेश में हो सकती है आईपीएल नीलामी

नयी दिल्ली, 02 नवम्बर (वार्ता) आईपीएल नीलामी स्थल को लेकर सोच में बदलाव होता दिख रहा है, जिसके अब विदेश में आयोजित होने की संभावना है। हालांकि फ्रेंचाइजियों को अभी तक आधिकारिक तौर पर शहर के बारे में सूचित नहीं किया गया है, लेकिन उन्हें इसके बारे में संकेत जरूर दिए गए हैं। हमेशा की तरह, संभावित स्थल खाड़ी क्षेत्र में कहीं माना जा रहा है। संयुक्त अरब अमीरात में अबू धाबी एक मजबूत संभावना है, लेकिन ओमान और कतर जैसे अन्य मध्य पूर्वी स्थानों पर भी विचार किया जा रहा है।

यह घटनाक्रम पहले की योजना से बिल्कुल अलग है, जब ऐसा लग रहा था कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) भारत में ही नीलामी आयोजित करने का इच्छुक है। हालांकि, अब एक आदर्श स्थान हासिल करने में चुनौतियाँ नजर आ रही हैं।

जीतकर काफी अच्छा लग रहा है : सूर्यकुमार

होबार्ट, 02 नवम्बर (वार्ता) भारत की ऑस्ट्रेलिया पर तीसरे टी 20 मुकाबले में पांच विकेट की सीरीज बराबर करने वाली जीत हासिल करने के बाद भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि मैच में जीत हासिल कर अच्छा लग रहा है। सूर्यकुमार ने मैच जीतने के बाद प्रेजेंटेशन में कहा, हमारे लिए टॉस जीतना काफ़ी अच्छा रहा, लगातार टॉस हार के सिलसिले को तोड़ना अच्छा रहा। जीतकर अच्छा लग रहा है।

यह बढ़िया कॉम्बिनेशन था। वॉशिंगटन एक लचीले बल्लेबाज हैं। शुभमन और अभिषेक आग और बर्फ़ जैसे हैं, कुछ ऐसी ही स्थिति बुमराह और अर्शदीप के साथ भी है। बुमराह ने अपना काम बखूबी किया और अर्शदीप अपनी योजनाओं को लेकर काफ़ी स्पष्ट थे।

प्लेयर ऑफ द मैच बने अर्शदीप सिंह ने कहा, मैं बस प्रक्रिया पर ध्यान देने और अपने कौशल पर भरोसा करने की कोशिश कर रहा हूं, मुझे लगता है कि जब कोई बल्लेबाज आप पर आक्रमण करता है तो उसे आउट करने की संभावना बन जाती है। मुझे भारत के लिए खेलने में मज़ा आता है, जब भी गेंदबाजी मिलती है तो गेंदबाजी का लुत्फ उठाता हूं।

मैं सिर्फ़ उन चीज़ों को अमलीजामा पहनाने का प्रयास करता हूं जिनका मैंने अभ्यास किया है।

22 राज्यों के 700 से ज्यादा मैराथन धावकों ने 19,000 फीट ऊंचे आदि कैलाश पर 60 किमी लंबी अल्ट्रा मैराथन दौड़ लगाई

देहरादून, 02 नवंबर (वार्ता) उत्तराखंड की पहली उच्च-ऊंचाई वाली अल्ट्रा मैराथन दौड़, हिमालय की 19,000 फ़ीट से अधिक ऊंचाई पर आयोजित की गई, जिसमें पूरे भारत से 700 से ज़्यादा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

राज्य में शीतकालीन पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य के रजत जयंती समारोह के एक हिस्से के रूप में, शून्य से 15 डिग्री सेल्सियस कम तापमान में 60 किलोमीटर लंबी मैराथन का आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राज्य के पवित्र आध्यात्मिक धरोहर आदि कैलाश की छाया में आयोजित उच्च-ऊंचाई वाली अल्ट्रा मैराथन दौड़ उत्तराखंड की साहसिक खेलों की संभावनाओं, प्राकृतिक विरासत और पर्यटन के लिए एक नया आयाम स्थापित करेगी। राज्य पर्यटन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि 60 किलोमीटर लंबी दौड़, शून्य से 15 डिग्री नीचे तापमान में, आदि कैलाश से सुबह-सुबह शुरू हुई, जिसमें देश भर के 22 राज्यों के 700 से ज़्यादा धावकों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों ने लगभग 20,000 फीट ऊंचे हिमालय क्षेत्र में अत्यधिक ऊंचाई, कठोर मौसम और अत्यधिक चुनौतीपूर्ण हिमालयी ट्रैक के बीच दौड़ने के लिए अपने अदम्य साहस, दृढ़ता और तंदुरुस्ती का प्रदर्शन किया।

आदि कैलाश जैसे स्थान पर हिमालयी राज्य की पहली अल्ट्रा मैराथन दौड़ में प्रतिभागियों के प्रदर्शन के लिए बधाई देते हुए, मुख्यमंत्री धामी ने कहा, ''यह आयोजन उत्तराखंड के लिए गौरव का क्षण है। आदि कैलाश जैसे पवित्र और आध्यात्मिक धाम में आयोजित यह ऐतिहासिक अल्ट्रा रन न केवल साहस और समर्पण का एक उदाहरण है, बल्कि राज्य में साहसिक पर्यटन और खेल संस्कृति को एक नई दिशा भी प्रदान करेगा। राज्य के गठन के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित यह अल्ट्रा रन, उत्तराखंड के उज्ज्वल भविष्य और असीम संभावनाओं का प्रतीक है।''

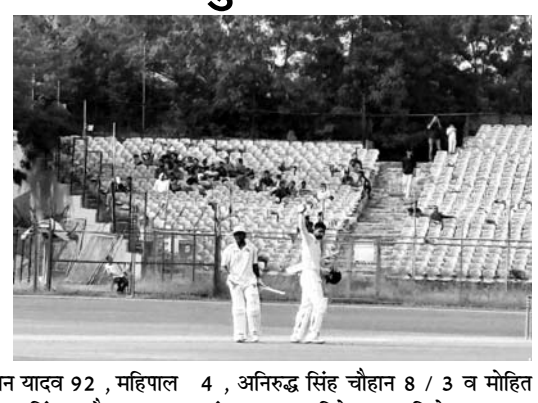

राजस्थान - मुंबई रणजी मैच के दूसरे दिन राजस्थान मजबूत

राजस्थान के बल्लेबाज दीपक हुड्डा का नाबाद शतक , सचिन यादव शतक से चुके

जयपुर 2 नवम्बर , राजस्थान क्रिकेट संघ की मेजबानी में जयपुर में सवाई मान सिंह स्टेडियम पर खेले जा रहे राजस्थान - मुंबई रणजी मैच के दूसरे दिन राजस्थान के बल्लेबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मुंबई के विरुद पहली पारी में बढ़त प्राप्त की। राजस्थान के दीपक हुड्डा का शानदार नाबाद शतक व अपना पदार्पण रणजी मैच खेल रहे सचिन यादव शतक से चुके।

राजस्थान - मुंबई रणजी मैच (दूसरे दिन का स्कोर)

मुंबई पहली पारी 254 आल आउट

राजस्थान पहली पारी 339 / 4

दूसरे दिन राजस्थान के बल्लेबाजों ने उत्कृष्ट बल्लेबाजी करते हुए टीम को पहली पारी में महत्वपूर्ण बढ़त दिलाई। टीम के लिए दीपक हुड्डा नाबाद 121 , अपना पदार्पण रणजी मैच खेल रहे सलामी बल्लेबाज सचिन यादव शतक से चुके , सचिन यादव 92 , महिपाल लोमरोर 41 , कुणाल सिंह राठौड 31 व कार्तिक शर्मा नाबाद 26 रन बनाकर खेल रहे हैं।

मुंबई के गेंदबाज तुषार देशपांडे 50 / 2 विकेट।

राजस्थान - बंगाल अंडर 23 सी के नायडू ट्रॉफी मैच (पहले दिन राजस्थान के गेंदबाज चमके) कल्याणी , बंगाल में आज से राजस्थान - बंगाल टीमों के मध्य शुरू हुए अंडर 23 सी के नायडू ट्रॉफी मैच के पहले दिन राजस्थान के गेंदबाज गणेश सुथार , अनिरुद्ध सिंह चौहान व मोहित चांगरा की शानदार गेंदबाजी की सहायता से राजस्थान ने बंगाल को पहली पारी में सस्ते में सिमटा।

बंगाल पहली पारी 146 आल आउट

टीम के लिए मिलिंद 40 रन

राजस्थान के गेंदबाज गणेश सुथार 25 / 4 , अनिरुद्ध सिंह चौहान 8 / 3 व मोहित चांगरा 39 / 3 विकेट प्राप्त किये।

राजस्थान पहली पारी 17 / 0

बीसीसीआई अंडर 19 वीमेन टी 20 ट्रॉफी

राजस्थान ने चंडीगढ़ को हराया

राजस्थान पारी 119 /6

राजस्थान की बल्लेबाज तनिका शर्मा ने ट्रॉफी मैच शानदार प्रदर्शन को जारी रखते हुए नाबाद अर्धशतकीय पारी खेली।

टीम के लिए तनिका शर्मा नाबाद 51 , प्रतीक्षा 22 व प्रियांशी 14 रन

चंडीगढ़ की गेंदबाज आहन वैद 20 / 3 विकेट

चंडीगढ़ पारी 97 / 9

राजस्थान की गेंदबाज ऐ ऍन चौधरी 14 / 2 , मैना सियोल 15 / 2, निशिता , हैप्पी 1 - 1 विकेट।

पीएम मोदी ने एशियाई युवा खेलों में भारत के रिकॉर्ड तोड़ पदक जीतने की सराहना की

नई दिल्ली, 02 नवंबर (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के युवा एथलीटों को एशियाई युवा खेल 2025 में उनके ऐतिहासिक प्रदर्शन के लिए आज बधाई दी, जहां देश ने रिकॉर्ड 48 पदक हासिल किए।

अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर मोदी ने उनके जुनून, धैर्य और समर्पण की सराहना की और उन्हें निरंतर सफलता की कामना की। प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट किया, ''हमारे युवा एथलीटों ने एशियाई युवा खेल 2025 में अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ 48 पदक जीतकर इतिहास रच दिया है।''

उन्होंने आगे कहा, ''दल को बधाई। उनका जुनून, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत साफ दिखाई दे रही है। उनके भविष्य के प्रयासों के लिए मेरी शुभकामनाएँ।''

भारत की पदक तालिका में विभिन्न खेलों में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक शामिल हैं, जो देश के बढ़ते प्रतिभा भंडार और मजबूत होते खेल पारिस्थितिकी तंत्र को दर्शाता है। इस उत्कृष्ट उपलब्धि से नई पीढ़ी के एथलीटों को ऊंचे लक्ष्य निर्धारित करने और अंतर्राष्ट्रीय खेल जगत में भारत के बढ़ते कद में योगदान देने की प्रेरणा मिलने की उम्मीद है।

एशियाई युवा खेल 2025 युवा खिलाडियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुए हैं और भारत का एक मजबूत दावेदार के रूप में उभरना एथलेटिक प्रतिभाओं को निखारने पर बढ़ते ज़ोर को दर्शाता है। प्रधानमंत्री मोदी की प्रशंसा राष्ट्रीय गौरव से ओतप्रोत है और भारत के व्यापक विकास में खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है।

टी-20 सीरीज के लिए जैमीसन और सोढी को वापस बुलाया

वेलिंगटन, 02 नवंबर (वार्ता) कई अहम खिलाड़ियों के चोटिल होने के कारण न्यूजीलैंड ने तेज गेंदबाज काइल जैमीसन और स्पिनर ईश सोढ़ी को वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू पांच मैचों की अंतरराष्ट्रीय टी-20 सीरीज के लिए 14 सदस्यीय टीम में वापस बुलाया है। ऑलराउंडर मिशेल सेंटनर की अगुवाई में बुधवार को ऑकलैंड में इस सीरीज का पहला मैच खेलना जायेगा। फिन एलन (पैर), लॉकी फर्ग्यूसन (हैमस्ट्रिंग), एडम मिल्ने (टखना), ग्लेन फिलिप्स (ठाेइन) और बेन सियर्स (हैमस्ट्रिंग) चोट के कारण बाहर हैं।

एनटीपीसी नेशनल रैंकिंग तीरंदाजी टूर्नामेंट के मेडल मुकाबले सम्पन्न

जयपुर। जगतपुरा शूटिंग रेंज स्थित तीरंदाजी एरिना पर चल रहे एनटीपीसी नेशनल रैंकिंग तीरंदाजी टूर्नामेंट में आज सीनियर कैटेगरी के मेडल मुकाबले सम्पन्न हुए। राजस्थान तीरंदाजी संघ के महासचिव सुरेंद्र सिंह गुर्जर ने बताया कि सीनियर वर्ग में रिकर्व एवं कंपाउंड दोनों श्रेणियों में बालक-बालिकाओं के मेडल मुकाबले खेले गए। खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर की खूबसूरत पोडियम व्यवस्था पर प्रतिस्पर्धा करते हुए शानदार प्रदर्शन किया।

मेडल मुकाबलों के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में राज्य निर्वाचन आयुक्त डॉ. राजेश्वर सिंह (पूर्व आईएएस) उपस्थित रहे। उन्होंने विजेता खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर सम्मानित किया एवं प्रतियोगिता में सहयोग देने वाले तकनीकी अधिकारियों को भी सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. राजेश्वर सिंह ने कहा कि राजस्थान में इस प्रकार की प्रतियोगिताएं प्रदेश को खेलों के क्षेत्र में नई दिशा देती हैं। जब युवा खेलों से जुड़ेंगे, तभी प्रदेश और देश प्रगति करेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष दीपेंद्र सिंह ने की। उन्होंने कहा कि राजस्थान के खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी, संघ खिलाड़ियों के विकास के लिए हरसंभव प्रयास करेगा। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान एथलेटिक्स एसोसिएशन के सचिव देवनारायण गुर्जर उपस्थित रहे। उन्होंने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसे आयोजन राजस्थान में खेलों को मजबूत बनाते हैं और नई पीढ़ी को प्रेरित करते हैं।

भारतीय तीरंदाजी टीम के कोच अनिल जोशी ने बताया कि प्रतियोगिता का संचालन भारतीय तीरंदाजी संघ द्वारा नियुक्त तकनीकी अधिकारियों की देखरेख में किया जा रहा है, जिससे प्रतियोगिता पूरी तरह निष्पक्ष और उच्च स्तरीय बन पाई है। यह टूर्नामेंट राजस्थान तीरंदाजी संघ द्वारा भारतीय तीरंदाजी संघ के सहयोग से आयोजित कि गई

आज के परिणाम इस प्रकार हैं: /एनटीपीसी नेशनल रैंकिंग तीरंदाजी टूर्नामेंट (सीनियर वर्ग)

सीनियर रिकर्व पुरुष वर्ग
1. सुखचैन सिंह - एसएससीबी ( )
2. नीरज चौहान - एआईपीएससीबी ( )
3. यमन कुमार - हरियाणा

सीनियर रिकर्व महिला वर्ग
1. अंकिता भकत - झारखंड
2. संगीता - दिल्ली
3. सिमरनजीत कौर - पंजाब

सीनियर कंपाउंड पुरुष वर्ग
1. ओजस प्रवीन देवटाले - महाराष्ट्र
2. उदय कम्बोज - पंजाब
3. चिट्टिबोम्मा जिग्नस - एसएससीबी

सीनियर कंपाउंड महिला वर्ग
1. राज कौर - एआईपीएससीबी ( )
2. मुस्कान किरार - मध्यप्रदेश
3. अदिति गोपिचंद स्वामी - महाराष्ट्र

अजय रोहेरा के शतक से पुड्डुचेरी सुखद स्थिति में

नयी दिल्ली, 02 नवम्बर (वार्ता) सलामी बल्लेबाज अजय रोहेरा (नाबाद 107) के शानदार शतक से पुड्डुचेरी दिल्ली के खिलाफ रणजी ट्रॉफी एलीट ठ्ुप डी मैच में रविवार को चार विकेट पर 240 रन बनाकर सुखद स्थिति में पहुंच गया।

पुड्डुचेरी अभी दिल्ली के पहली पारी के 294 रन के स्कोर से 54 रन पीछे है और उसके छह विकेट शेष हैं। अजय रोहेरा ने 139 गेंदों पर नाबाद 107 रन में 16 चौके लगाए हैं। संतोष रत्नपारखे ने 43 और आनंद बैस ने 48 रनों का योगदान दिया।

इससे पहले दिल्ली ने कल के छह विकेट पर 248 रन से आगे खेलना शुरू किया और उसकी पहली पारी 294 रन पर समाप्त हुई। पुड्डुचेरी की तरफ से सागर उदेशी ने चार और अबिन मैथ्यू ने तीन विकेट लिए।

राजस्थान के खिलाडी ने ब्रान्ज मेडल जीतकर राजस्थान को किया गौरवान्वित

जयपुर, 2 नवम्बर । इंडिया ओपन कम्पटीशन-शॉटगन पटियाला में आयोजित की जा रही 07 दिवसीय (दिनांक 30.10.2025 से 05.11.2025 तक) शॉटगन शूटिंग चैम्पियनशिप में राजस्थान के खिलाड़ी अभिषेक मीना ने शॉटगन ट्रैप यूथ मेन प्रतियोगिता में ब्रान्ज़ मेडल अपने नाम कर, राज्य का नाम रोशन किया। उक्त खिलाड़ी जयपुर में स्थित ओएसिस शूटिंग रेंज , जगतपुरा, जयपुर में अभ्यासरत है। जगतपुरा शूटिंग रेंज ने राज्य व देश को कई राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय एवं ओलम्पिक स्तर के उत्कृष्ठ खिलाड़ी दिये है।

आगे भी राजस्थान राईफल एसोसिएशन का प्रयास रहेगा की आगामी प्रतियोगिताओं में भी राज्य व देश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक दिलाकर राज्य व देश को गौरवान्वित करेंगे। राजस्थान राईफल एसोसिएशन पदक विजेता खिलाड़ियों को बधाई देती है साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

जिलों में नई अदालतों का सृजन व नए जजों की नियुक्ति जल्दी होगी-भजनलाल

मुख्यमंत्री ने जोधपुर में बार काउन्सिल ऑफ इंडिया के नये भवन के उद्घाटन समारोह में वीसी से भाग लिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

- जोधपुर में आयोजित समारोह में सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संदीप मेहता, जस्टिस विजय बिश्नोई, राजस्थान हाई कोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा, न्यायाधीश जस्टिस पुष्पेन्द्र सिंह भाटी, महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल भरत व्यास, बार काउन्सिल ऑफ राजस्थान के चेयरमैन व अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। बार काउन्सिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा वीसी के माध्यम से जुड़े।

जयपुर, 2 नवम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि न्यायपालिका लोकतंत्र का वो मजबूत स्तम्भ है जो समाज में न्याय और समानता की अलख जगाता है। सशक्त न्याय व्यवस्था से ही नागरिकों में सुरक्षा का भाव आता है। उन्होंने कहा कि देश में लागू किए गए तीन नए आपराधिक कानूनों ने न्याय की परिभाषा को बदलने का काम किया है। प्रदेश में भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम को जमीनी स्तर पर लागू किया जा रहा है। जिससे न्याय प्रक्रिया में तेजी आई है और आने वाले समय में देश में अठाणी राज्य होगा।

शर्मा रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर वीसी के माध्यम से जोधपुर में आयोजित बार काउन्सिल ऑफ़ राजस्थान के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि बार काउन्सिल ऑफ़ राजस्थान के लिए नवनिर्मित भवन लोकतंत्र को और भी मजबूत करने का काम करेगा। बार काउन्सिल आमजन की न्याय की आकांक्षाओं को पूरी करने का एक माध्यम है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार आवश्यकता अनुसार जिला स्तर पर नई अदालतों का सृजन कर रही है। साथ ही नए जजों की नियुक्ति भी तीव्र गति से की जा रही है। उन्होंने कहा कि जनता के हित के कार्य हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि अधिवक्ता कल्याण एवं बार कौंसिल के सुदृढ़ीकरण में सहयोग के लिए हमारी सरकार पूरी तरह से तैयार है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिवक्ता समाज के शिल्पकार होने के साथ ही न्याय व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। अधिवक्ता, लोगों के भरोसे के जीत की प्रतिमूर्ति हैं।

जोधपुर में आयोजित मुख्य समारोह में सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संदीप मेहता, जस्टिस विजय बिश्नोई, राजस्थान हाईकोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा, न्यायाधीश जस्टिस डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह भाटी, महाधिवक्ता राजेंद्र प्रसाद, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल भरत व्यास, बार काउंसिल ऑफ राजस्थान के चेयरमैन भुवनेश शर्मा व अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा वीसी के माध्यम से जुड़े।

राहुल गांधी ने बेगूसराय में मछुआरों के साथ मछली पकड़ी

उन्होंने चुनाव सभा में आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रपति ट्रंप से डरते हैं

- राहुल गांधी ने बेगूसराय में चुनाव सभा में कहा कि चुनाव के दिन तक आप जो भी कहेंगे, मोदी वो करेंगे। चुनाव के बाद न आएंगे और न कुछ करेंगे।

बेगूसराय, 02 नवंबर। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने रविवार को आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र सिर्फ अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड से नहीं डरते हैं, बल्कि वह उद्योगपति अडाणी और अंबानी के चंगुल में भी हैं। गांधी ने आज यहां चुनावी सभा में प्रधानमंत्री मोदी पर हमला करते हुये कहा कि 56 इंच की छाती वाले मोदी डरपोक हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी की छाती बड़ी नहीं थी, लेकिन वो किसी से डरते नहीं थे। मोदी से ज्यादा दम इंदिरा गांधी में था। मोदी ट्रम्प से डरते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कई बार बोला है कि उन्होंने नरेंद्र मोदी को डराकर ऑपरेशन सिंदूर बंद कराया है। ट्रम्प कहते हैं मैंने मोदी को फोन लगाया कि ऑपरेशन सिंदूर रोको और फिर ऑपरेशन रुक गया। उन्होंने कहा कि वह मोदी को चुनौती देते हैं कि वह बिहार आकर कहें कि ट्रम्प झूठ बोल रहे हैं।

कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि मोदी सिर्फ अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप से नहीं डरते हैं, उनका कंट्रोल अडाणी और अंबानी के भी हाथ में हैं। चुनाव के दिन तक आप जो भी कहेंगे मोदी वो करेंगे। चुनाव के बाद न आएंगे, न कुछ करेंगे।

बेगूसराय में सभा के बाद राहुल गांधी विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) प्रमुख मुकेश सहनी, कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार और बेगूसराय से कांग्रेस उम्मीदवार अमिता भूषण के साथ लगभग तीन किलोमीटर की दूरी तय करके पास के एक तालाब तक गये, जहाँ सुबह से ही तैयारियाँ चल रही थीं। जब राहुल गांधी वहां पहुंचे, तो ग्रामीणों ने उन्हें पारंपरिक तरीके से स्वागत किया।

गांधी, सहनी और कन्हैया के साथ वे एक नाव में चढ़ गए और तुरंत बाद बिना किसी हिचकिचाहट के पानी में कूद गए। स्थानीय मछुआरों के साथ मिलकर उन्होंने जाल खींचने और मछलियाँ पकड़ने में मदद की। बाद में गांधी ने ग्रामीणों द्वारा तैयार किए गए स्थानीय व्यंजनों का स्वाद भी चखा और उनके साथ भोजन भी किया।

गांधी ने अपनी इस यात्रा का वीडियो शेयर करते हुये सोशल मीडिया पर लिखा, बेगूसराय, में आज वीआईपी पार्टी के अध्यक्ष मुकेश सहनी के साथ वहां के मछुआरा समुदाय से मिलकर बहुत अच्छा लगा।

उन्होंने कहा कि उनका काम जितना दिलचस्प है, उससे जुड़ी उनकी समस्याएं और संघर्ष उतने ही गंभीर हैं लेकिन हर परिस्थिति में उनकी मेहनत, जज़्बा और व्यवसाय की गहरी समझ प्रेरणादायक है।बिहार की नदियां, नहरें, तालाब और उनमें जीवन बसाते मछुआरे, प्रदेश की अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा हैं।

एसआईआर प्रक्रिया नहीं रोकी तो तमिलनाडु अदालत में जाएगा- स्टालिन

मुख्यमंत्री स्टालिन की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक में यह प्रस्ताव पारित किया गया

- प्रस्ताव में कहा गया है कि एसआईआर की आड़ में तमिलनाडु के लोगों के मताधिकार को छीनने की साजिश रची जा रही है।

चेन्नई, 2 नवंबर। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और डीएमके अध्यक्ष एमके स्टालिन ने चुनाव आयोग पर केंद्र सरकार के अधीन काम करने का आरोप लगाते हुए आयोग से तमिलनाडु में 4 नवंबर से शुरू होने वाले प्रस्तावित विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया को रोकने की मांग की।

स्टालिन की अध्यक्षता में हुई सर्वदलीय बैठक में सर्वसम्मति से पारित इस प्रस्ताव में कहा गया कि अगर चुनाव आयोग इस प्रक्रिया को नहीं रोकता है, तो तमिलनाडु के पास देश की शीर्ष अदालत में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा। स्टालिन ने एसआईआर को लोगों के मताधिकार छीनने वाली प्रक्रिया कहा।

गौरतलब है कि चुनाव आयोग ने एसआईआर प्रक्रिया की घोषणा ऐसे समय में की है जब तमिलनाडु में 2026 के अप्रैल-मई में विधानसभा चुनाव होने हैं। बैठक में आरोप लगाया गया कि इसका उद्देश्य भाजपा और उसकी गठबंधन सहयोगी अन्नाद्रमुक को लाभ पहुंचाना और मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाना है।

इसमें बिहार में एसआईआर प्रक्रिया के खिलाफ देश की शीर्ष अदालत में लंबित एक ऐसी ही याचिका का भी उल्लेख किया गया है, जहां 65 लाख से अधिक मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए थे। एसआईआर के प्रति अपने कड़े विरोध को दोहराते हुए सर्वदलीय बैठक इस प्रक्रिया का विरोध करने हेतु रणनीति तैयार करने के लिए बुलाई गई थी क्योंकि उनके अनुसार चुनाव आयोग की कार्रवाई न केवल विवादास्पद है बल्कि संदिग्ध और एकतरफा भी है।

प्रस्ताव में कहा गया कि एसआईआर की आड़ में तमिलनाडु के लोगों के मताधिकार को छीनने की साजिश रची जा रही है। बिहार में मुसलमानों, दलितों और महिलाओं को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर मतदाताओं के नाम काटे गए।

प्रस्ताव के मुताबिक चुनाव आयोग की कार्रवाई न केवल विवादास्पद है बल्कि संदिग्ध भी है। बिहार इसका एक उदाहरण है कि कैसे चुनाव आयोग मनमाने आदेशों के जरिए चुनाव करा रहा है और उस राज्य में एसआईआर असली मतदाताओं को हटाने की साजिश साबित हुई। इसमें आरोप लगाया गया है कि केंद्र सरकार की शह पर चुनाव आयोग ने शीर्ष अदालत के आदेशों का भी पालन नहीं किया।

मदरसे से 20 लाख के नकली नोट बरामद

- महाराष्ट्र के मालेगांव से शुरु हुई कार्यवाही के दौरान इस नेटवर्क का तार खंडवा से जुड़ा हुआ मिला।

खंडवा, 02 नवंबर। मध्य प्रदेशके खंडवा जिले के जावर थाना क्षेत्र के ग्राम पैठिया स्थित एक मदरसे से नकली नोटों का बड़ा जखीरा मिला है। भारी मात्रा में नकली नोट मिलने के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है। पेठिया मदरसे के इमाम के कमरे से 19 लाख 78 हजार रुपये जब्त किए गए हैं। यह खुलासा उस वक्त हुआ जब महाराष्ट्र के मालेगांव से शुरू हुई एक कार्रवाई में पाया गया कि इस नेटवर्क का तार खंडवा से जुड़ा है।

मालेगांव पुलिस ने पैठिया मस्जिद के इमाम जुबेर अंसारी को उसके एक साथी के साथ दस लाख रुपये के नकली नोट खपाते हुए महाराष्ट्र में गिरफ्तार किया था। जुबेर मूल रूप से बुरहानपुर जिले के हरिपुरा का निवासी है और पिछले कुछ महीनों से पैठिया में एक मदरसे के ऊपर किराए के मकान में रह रहा था। मालेगांव में जब पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी की, तो पूछताछ में खंडवा कनेक्शन सामने आया और यहीं से स्थानीय पुलिस को बड़ी सफलता मिली।

मालेगांव पुलिस से सूचना मिलते ही खंडवा के जावर थाने की पुलिस ने पैठिया गांव के मदरसा परिसर में छापा मारा। मौके से नकली नोटों के कई बंडल, छपाई से जुड़ी सामग्री और कुछ संदिग्ध दस्तावेज बरामद किए गए। पुलिस अधिकारियों की मानें तो यह गिरोह अंतरराज्यीय स्तर पर सक्रिय था और अलग-अलग राज्यों में नकली करेंसी की सप्लाई कर रहा था। छापे के दौरान मदरसे के आसपास भीड़ जमा हो गई और पुलिस ने किसी प्रकार की अफवाह फैलने से रोकने के लिए अतिरिक्त बल तैनात किया। अधिकारियों और फॉरेंसिक विशेषज्ञों की टीम ने मौके पर सारी सामग्री को सील कर जांच के लिए भेज दिया है।

हरियाणा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चोरी और वोट चोरी के जिम्मेदार लोगों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि हरियाणा की जनता अब राज्य और राष्ट्रीय नेतृत्व दोनों से निराश है। पार्टी का संगठन जर्जर हो चुका है। 2005 में भजनलाल जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने 67 सीटें जीती थीं, लेकिन तब से पराजय का सिलसिला थमा नहीं है।

राम मंदिर ध्वजारोहण समारोह 25 नवम्बर को

- प्रधानमंत्री भी भाग लेने अयोध्या जाएंगे।

अयोध्या, 02 नवम्बर। रामनगरी अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण कार्य ने रफ्तार पकड़ ली है। 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में मंदिर परिसर में भव्य ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर न केवल राम मंदिर, बल्कि परकोटे के सभी छह मंदिरों में भी ध्वजारोहण किया जाएगा।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव चंपत राय ने बताया कि मंदिर निर्माण की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। उन्होंने कहा कि राम मंदिर का ध्वज देश के सभी मंदिरों में सबसे ऊंचा होगा, जो धरती से 191 फीट ऊपर फहराया जाएगा।

ट्रस्ट के अनुसार, 10 एकड़ क्षेत्र में पंचवटी का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ श्रद्धालुओं के लिए धार्मिक स्थलों और उद्यानों का निर्माण होगा। गर्भगृह में भगवान श्रीरामलला की प्रतिमा स्थापित है और प्रथम तल पर राम दरबार के दर्शन भी शुरू हो चुके हैं। परकोटे के सभी मंदिरों में प्रतिमाएं, कलश और ध्वजदंड स्थापित किए जा चुके हैं।

'केजरीवाल ने मोहल्ला क्लीनिक के माध्यम से दस साल घोटाले किये'

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष सचदेवा ने केजरीवाल सरकार पर मोहल्ला क्लीनिक के संदर्भ में गंभीर आरोप लगाये

- सचदेवा ने कहा कि अधिकांश मोहल्ला क्लीनिक में डॉक्टर नहीं होते थे। कंपाउंडर क्लीनिक चलाते थे और किसी भी रोग की जाँच सुविधा नहीं थी।

नयी दिल्ली, 02 नवम्बर। दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने केजरीवाल सरकार पर आम आदमी मोहल्ला क्लीनिक की आड़ में 10 साल तक घोटाला करने का आरोप लगाया है।

सचदेवा ने रविवार को संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कहा कि दिल्ली वासियों ने अरविंद केजरीवाल सरकार को दस साल आम आदमी मोहल्ला क्लीनिक की आड़ में बड़े घोटाले करते देखा है। पूर्ववर्ती सरकार द्वारा सड़कों पर पोर्टा केबीन बना कर या "आप" वॉलैंटियर्स से अनाप -शनाप किराये पर कमरे लेकर खोले गये मोहल्ला क्लीनिक मात्र आधे दिन खुलने वाले ओपीडी केन्द्र थे जिन्हें केजरीवाल सरकार ने घोटालों का माध्यम बनाया। उन्होंने कहा कि इन मोहल्ला क्लीनिकों में से अधिकांश में डॉक्टर तक नहीं होते थे। कंपाउंडर क्लीनिक चलाते थे और इनमें किसी भी रोग की जांच की सुविधा तक नहीं थी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली वासियों ने समय- समय पर देखा कि कैसे यह मोहल्ला क्लीनिक केवल एक ही फोन नम्बर से पंजीकृत मरीज देखने का और उनकी नकली जांच का शुल्क वसूलते थे। उन्होंने कहा कि इन मोहल्ला क्लीनिकों में नियुक्त अधिकांश कर्मी हेल्थ सेवा के लिए प्रशिक्षित भी नहीं थे। इनकी नियुक्ति किसी प्रशासनिक व्यवस्था के अनुसार नहीं हुई थी और लगभग सभी आम आदमी पार्टी से जुड़े हुए थे।

उन्होंने कहा कि कोविड काल में जब दिल्लीवासियों को मोहल्ला स्तर पर इलाज की सबसे ज्यादा जरूरत थी उस वक्त केजरीवाल ने इन मोहल्ला क्लीनिकों को बंद कर दिया था।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घुसते और फर्नीचर को तोड़ते नजर आए। झड़प के दौरान कुछ लोगों के घायल होने की खबरें हैं, हालांकि पुलिस ने अभी तक किसी के घायल होने की आधिकारिक पुष्टि नहीं की।

सूचना मिलने के बाद पुलिस और फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाया। सुरक्षा बलों की बड़ी तादाद भी तैनात की गई। प्रशासन ने कहा कि स्थिति अब नियंत्रण में है और दोनों पक्षों को शांत रहने के लिए कहा गया है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का दावा है कि बीआरएस शासन के दौरान उनके कार्यालय पर जबरन कब्जा किया गया था। कांग्रेस का कहना है कि वह अपना कार्यालय फिर से लौटाने के लिए प्रदर्शन कर रही है। कार्यकर्ताओं ने नारे लगाए, हमें हमारा ऑफिस वापस दो।

बीआरएस ने कांग्रेस पर हमला कर जनता और कानून व्यवस्था को चुनौती देने का आरोप लगाया। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामा राव (केटीआर) ने इसे कांग्रेस सरकार के तहत कानून व्यवस्था की विफलता और गुंडाराज का उदाहरण बताया। उन्होंने कहा, बीआरएस के 60 लाख कार्यकर्ता मनुगुरु के साथ खड़े हैं। कांग्रेस के गुंडों से डरने की जरूरत नहीं है। उनका अहंकार ज्यादा दिन नहीं चलेगा। बीआरएस ने इसे राजनीतिक दबाव और दमन की कोशिश करार दिया और कहा कि जनता ऐसे हिंसक प्रयासों का जवाब देगी। पार्टी ने यह भी चेतावनी दी कि कानून का पालन किया जाएगा और किसी भी तरह की हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मोदी ने पटना ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। रोड शो के पूरे रास्ते में 10 स्वागत पॉइंट बनाए गए थे। इन स्थानों पर प्रधानमंत्री का स्वागत फूलों की वर्षा, ढोल-नगाड़ों और पारंपरिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ किया गया। इसके बाद उन्होंने गुरुद्वारे में मत्था टेका और आशीर्वाद लेकर दिन के प्रचार का समापन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस साल राज्य में दूसरा रोड शो था। लोकसभा चुनाव के दौरान हुए रोड शो में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शामिल हुए थे, लेकिन इस बार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मौजूद नहीं थे। प्रधानमंत्री के साथ जनता दल यूनाइटेड से केंद्रीय मंत्री ललन सिंह, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल, बांकीपुर के प्रत्याशी नितिन नवीन, दीघा के प्रत्याशी संजीव चौरसिया, दानापुर के प्रत्याशी राम कृपाल यादव रथ पर सवार थे। इधर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रोड शो में सीएम नीतीश कुमार के शामिल नहीं होने पर कांग्रेस ने एनडीए पर जमकर हमला बोला है। कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर रोड शो की तस्वीर साझा करते हुए लिखा कि अब साफ हो गया कि नीतीश कुमार बिहार का मुख्यमंत्री नहीं बनेंगे। पहले चरण के चुनाव से पहले ही नीतीश कुमार हुए खेल से बाहर हो गए। कांग्रेस ने कहा कि पटनावासी पूछ रहे हैं कि मुख्यमंत्री कहां पर हैं?

लालू ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनवाया और अब मां सीता का भव्य राम मंदिर बनाने जा रहे हैं। सीतामढ़ी से सीधे अयोध्या के लिए सीधे ट्रेन चलाने जा रहे हैं। राजद और कांग्रेस वालों ने कभी राम और सीता का सम्मान नहीं किया।

'दिल्ली के गंभीर वायु प्रदूषण पर केन्द्र सरकार तत्काल कार्यवाही करे'

नयी दिल्ली, 2 नवंबर। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने दिल्ली में गंभीर वायु प्रदूषण पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुये केंद्र एवं राज्य सरकारों से समन्वित कार्रवाई की तत्काल अपील की है।

वाड्रा ने रविवार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में दमघोंटू वायु प्रदूषण को देखते हुये इस मामले में तत्काल हस्तक्षेप करने और उसे कम करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि इसका असर बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों और सांस के रोगों से पीड़ित मरीजों पड़ता है।

- कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने इस कार्य में अपनी पार्टी के समर्थन की पेशकश की।

उन्होंने कहा, "इस शहर पर प्रदूषण का जबदस्त आवरण है। अब समय आ गया है कि हम सभी एकजुट होकर इस बारे में कुछ करें।"

वाड्रा ने सरकारों से तुरंत कार्रवाई करने का आग्रह किया और अपनी पार्टी की ओर से समर्थन की पेशकश करते हुये कहा "केंद्र और राज्य सरकारों को तुरंत कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

इस भयावह स्थिति को कम करने के लिए वे जो भी कदम उठाएँगे, हम उनका समर्थन और सहयोग करेंगे।"

महाराष्ट्र के तटीय क्षेत्र के मछुआरे आर्थिक संकट में फंसे

- बार-बार चक्रवात चेतावनियों के कारण मछुआरे कई माह से समुद्र में नहीं जा पा रहे हैं।

रायगढ़ , 02 नवंबर। महाराष्ट्र में मोन्था चक्रवात ने रायगढ़ और पालघर तटीय क्षेत्र के मछुआरा समुदायों के लिए गंभीर आर्थिक संकट पैदा कर दिया है। लगातार प्रतिकूल समुद्री परिस्थितियों के कारण नावों को किनारे पर ही रहना पड़ रहा है और हज़ारों मछुआरा परिवार रोज़ी-रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

मछुआरों ने बताया है कि बार-बार चक्रवात की चेतावनी और समुद्र में उथल-पुथल के कारण कामकाज बंद रहने से उन्हें लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। इस संकट को देखते हुए, रायगढ़ जिला मछुआरा केंद्रीय सहकारी समिति लिमिटेड ने मत्स्य पालन मंत्री नितेश राणे को एक ज्ञापन देकर तत्काल राहत की मांग की है।

एसोसिएशन ने कहा कि तूफानी मौसम, भारी बारिश और तट पर चक्रवात की चेतावनी के कारण मछुआरे कई महीनों से समुद्र में नहीं जा पा रहे हैं। उन्होंने सूखे मछली स्टॉक के भी काफ़ी खराब होने की सूचना दी, क्योंकि लगातार बारिश के कारण बड़ी मात्रा में मछलियां खराब हो गईं, जिससे अतिरिक्त नुकसान हुआ।

दरअसल, 7 मई से चक्रवाती परिस्थितियां बनी हुई हैं, जिससे लगभग छह महीने तक बड़े पैमाने पर मछली पकड़ने की गतिविधियां बाधित रहीं। सभी नावें विभिन्न तटीय बंदरगाहों पर खड़ी हैं।

हालांकि मछुआरों ने मत्स्य पालन को कृषि का दर्जा देने के लिए सरकार का धन्यवाद किया, जो मछुआरों को ऋण, सब्सिडी, बीमा और कृषि योजनाओं तक पहुँचने में मदद करने वाला एक कदम है। लेकिन मछुआरों ने वर्तमान संकट से निपटने के लिए तत्काल आर्थिक सहायता की मांग की है।

कैंची धाम से लौट रहा पर्यटक वाहन खाई में गिरा, 2 की मौत

नैनीताल, 02 नवंबर। दिल्ली से उत्तराखंड के कैंची धाम घूमने आए पर्यटकों का वाहन शनिवार देर रात को खाई में गिरने से दो पर्यटकों की मौत हो गई जबकि 15 अन्य पर्यटक घायल हो गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार एक टेंपो ट्रैवलर दिल्ली के बदरपुर से पर्यटकों को लेकर नैनीताल के कैंची धाम दर्शन के लिए आया था। देर रात को वापस लौटते वक्त वाहन नैनीताल-हल्द्वानी मार्ग पर आम पड़ाव के पास 50 फीट गहरी खाई में जा गिरा। बताया जा रहा है कि टेंपो में चार बच्चों सहित 17 लोग सवार थे।

प्रत्यक्षदर्शियों ने डायल 112 पर पुलिस को दुर्घटना की सूचना दी। सभी घायलों को बाहर निकाला गया और 108 की सहायता से सभी को हल्द्वानी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

टूरिस्ट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लोगों की मौत की खबर अत्यंत दु:खद और हृदय विदारक है। कैबिनेट मंत्री किरोड़ी लाल ने फलोदी हादसे में 15 लोगों की मौत पर दुख व्यक्त किया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टूरिस्ट बस तेज रफ्तार में थी और अचानक चालक का संतुलन बिगड़ने से बस खड़े ट्रेलर में जा घुसी। हादसे के बाद बस में फंसे यात्रियों को निकालने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे।

तेलंगाना : पत्नी, बेटी, रिश्तेदार की हत्या कर आत्महत्या की

- यादैया का अपनी पत्नी से अक्सर झगड़ा रहता था।

विकाराबाद, 02 नवंबर। तेलंगाना के विकाराबाद जिले के कुलाचेरला में शनिवार आधी रात एक व्यक्ति ने कथित रूप से अपनी पत्नी, बेटी और एक करीबी रिश्तेदार की हत्या करके खुद भी आत्महत्या कर ली।

पुलिस के अनुसार, यादैया अपनी पत्नी और दो बेटियों श्रावणी और अपर्णा (13) के साथ रहता था और कथित रूप से घरेलू मुद्दों को लेकर अपनी पत्नी के साथ अक्सर झगड़ा करता था। विवाद सुलझाने के लिए, दंपति ने शनिवार रात अपने रिश्तेदार हनम्मा से मुलाकात की। बातचीत के दौरान इस बात पर सहमति बनी कि अलीवेलु और उनकी बेटियां अगली सुबह से हनम्मा के साथ रहेंगी।

हालांकि, उसी रात बाद में, यादैया ने कथित रूप से अपनी पत्नी, बेटी श्रावणी और हनम्मा पर सोते समय दरांती से हमला कर दिया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद उसने छत से लटककर आत्महत्या कर ली।

प्रधानमंत्री मोदी 7-8 नवम्बर को वाराणसी आयेंगे

वाराणसी, 02 नवंबर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के क्षेत्रीय अध्यक्ष दिलीप पटेल ने रविवार को बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने दो दिवसीय दौरे पर 7 नवंबर को सायंकाल बाबतपुर स्थित लाल बहादुर शास्त्री हवाई अड्डे पहुंचेंगे। वहां उनका भव्य स्वागत किया जाएगा। वहां से प्रधानमंत्री सड़क मार्ग से सीधे बरेका गेस्ट हाउस जाएंगे। तत्पश्चात् प्रधानमंत्री इसी दिन वरिष्ठ भाजपा नेताओं एवं प्रमुख लोगों के साथ बैठक करेंगे।

पटेल ने बताया कि 8 नवंबर को पूर्वाह्न प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बनारस रेलवे स्टेशन (मंडुआडीह) पर वाराणसी से खजुराहो तक चलने वाली वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। उसके बाद वे चुनावी सभा को संबोधित करने के लिए बिहार रवाना हो जाएंगे। पटेल ने बताया कि भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भव्य स्वागत की तैयारियां शुरू कर दी हैं।

रीको को भीलवाड़ा, डीडवाना-कुचामन व फलौदी में भूमि आवंटित

जयपुर, 2 नवम्बर। प्रदेश की औद्योगिक क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भीलवाड़ा, डीडवाना-कुचामन और फलौदी जिलों में औद्योगिक परियोजनाओं के लिए विभिन्न भूमि आवंटनों को मंजूरी दी है।

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने तीनों जिलों में नये औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना को स्वीकृति दी।

मुख्यमंत्री ने भीलवाड़ा जिले की तहसील कोटडी के ग्राम कोदिया में 20.80 हैक्टेयर भूमि राजस्थान औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम लिमिटेड (रीको) को नवीन औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना हेतु स्वीकृत की है। वहीं, डीडवाना-कुचामन की तहसील परबतसर में स्थित मौजा भकरी मौलास में 71.59 हैक्टेयर भूमि रीको को औद्योगिक परियोजना हेतु आंवटित की है। इसी प्रकार, फलौदी जिले की तहसील आऊ के ग्राम हाजीसागर एवं ग्राम टेणानाडी में कुल 49.82 हैक्टेयर भूमि की स्वीकृति प्रदान की गई है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908